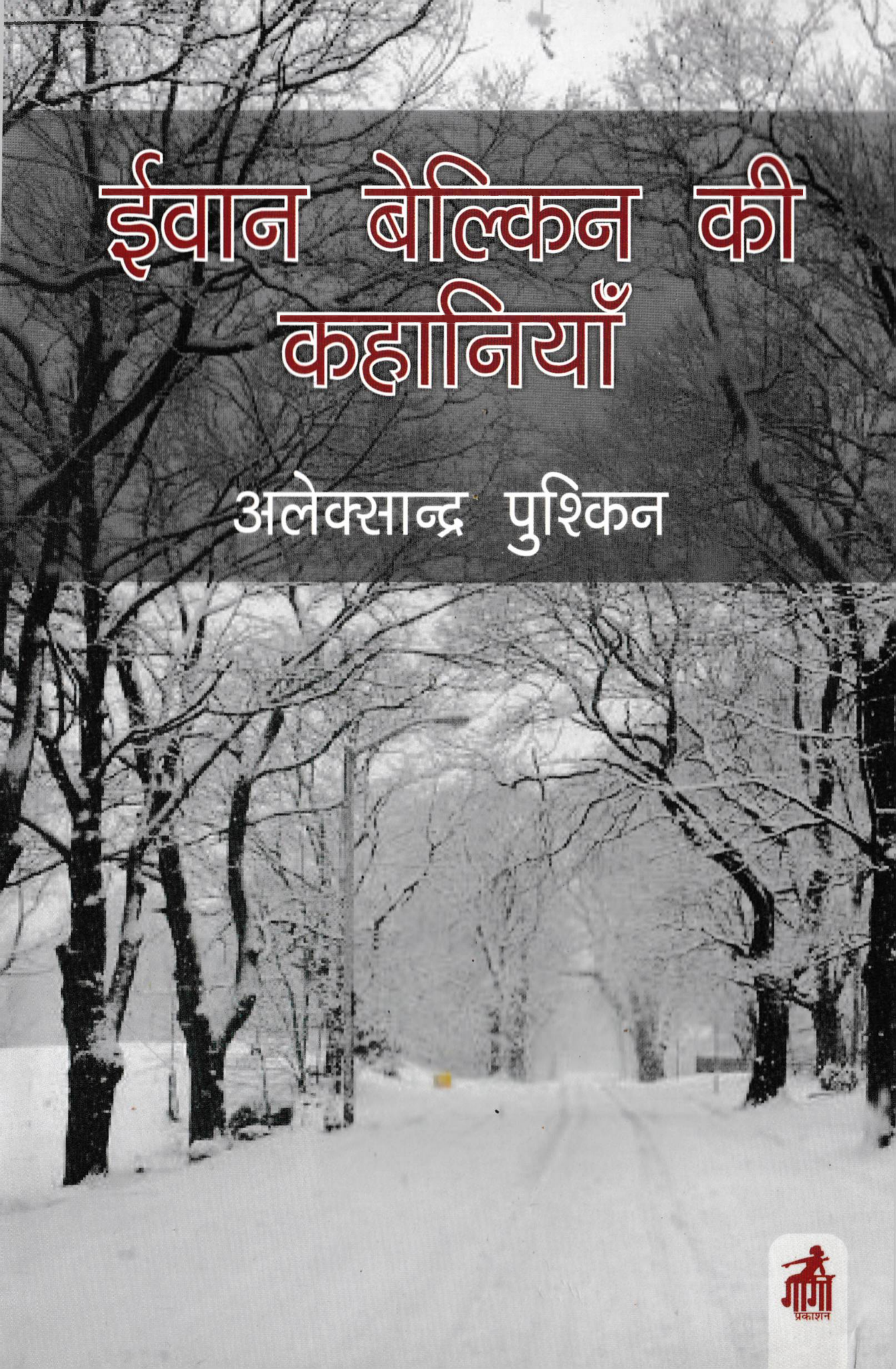
ईवान बेल्किन की कहानियाँ

अलेक्सान्द्र पुश्किन



गार्गी प्रकाशन

इवान बेल्किन की कहानियाँ

अ. से. पुश्किन

गार्गी प्रकाशन

प्रथम संस्करण : जनवरी 2022

लेखक : अ. से. पुश्किन
अनुवाद : नरोत्तम नागर

गार्गी प्रकाशन
1/4649/45बी, गली न. 4,
न्यू मॉडर्न शाहदरा, दिल्ली-110032
e-mail: gargiprakashan15@gmail.com
Website : www.gargibooks.com

मुद्रक :
प्रोग्रेसिव प्रिन्टर्स,
ए-21 झिलमिल इण्डूस्ट्रीयल एरिया,
शाहदरा, दिल्ली-110095

ISBN : 978-81-955764-6-3
मूल्य : 70 रुपये

Ivan Belkin ki Kahaniyan

अ. पु. द्वारा सम्पादित

स्वर्गीय इवान पेत्रोविच बेल्किन

की कहानियाँ

अनुक्रम

इस पुस्तक की छपाई में कुछ तकनीकी कमी रह गई है, जिसके कारण कुछ अक्षर बदल गए हैं। पाठकों से निवेदन है कि इस पुस्तक को पढ़ते समय नीचे लिखी बात का ध्यान रखें :

मुद्रित	सही
म.	में
म.	मैं
ह.	हें
र.	रें
द.	दें

इस प्रकार के मात्राओं वाले शब्दों को पढ़ते समय उनका अर्थ ठीक कर लें।

सम्पादक की ओर से

मिस्ट्रेस प्रोस्ताकोवा

ओह, श्रीमान वह बच्चों तक से

बड़े चाव से कहानियां सुनते थे।

स्कोतीनिन

मित्रोफान ठीक मेरे सांचे में ढले हैं!

दुन्स[1]

इवान पेत्रोविच बेल्किन की कहानियों का यह संग्रह अब पाठकों के हाथों म. है। इसके प्रकाशन के साथ-साथ, भूमिका के रूप म., यह वांछनीय मालूम होता है कि इन कहानियों के स्वर्गीय रचयिता के जीवन का भी संक्षेप म. कुछ विवरण दे दिया जाये। इससे, आंशिक रूप म. ही सही, देशी साहित्य के हमारे प्रेमियों की लेखक के विषय म. जानने की सर्वथा संगत इच्छा तुष्ट होगी। इसी उद्देश्य से हमने इवान पेत्रोविच बेल्किन की एक निकट सम्बन्धी और उत्तराधिकारी मारिया अलेक्सीयेव्ना त्रफीलिना से बिनती की। लेकिन दुर्भाग्यवश उनके बारे म. वह हम. कोई जानकारी प्रदान नहीं कर सकीं, स्वर्गीय लेखक के संसर्ग म. आने का उन्ह. जरा भी अवसर नहीं मिला था। उन्होंने हम. सलाह दी कि इस सम्बन्ध म. हम एक अन्य महानुभाव से सम्पर्क स्थापित कर. जो इवान पेत्रोविच के मित्र थे। हमने ऐसा ही किया, और हमारे पत्र का सन्तोषजनक उत्तर भी हम. प्राप्त हुआ। इस उत्तर को हम बिना कोई परिवर्तन किए जैसा-का-तैसा छाप रहे हैं। पत्र क्या है, हृदयस्पर्शी मित्रता एवं गहरी सूझ का परिचायक एक बहुमूल्य दस्तावेज है। साथ ही यह उनकी जीवनी पर पूर्णतया सम्यक प्रकाश डालने वाला वक्तव्य भी है।

मान्यवर महोदय, इस माह की पन्द्रह तारीख का आपका कृपा पत्र मुझे इसी माह की तेईस तारीख को मिला। इस सम्मान के लिए म. आपका आभारी हूँ। अपने पत्र म. आपने मेरे इष्ट मित्र तथा गाँव के पड़ोसी स्वर्गीय इवान पेत्रोविच बेल्किन के जन्म और मृत्यु, उनके कामकाज, घरेलू जीवन, उनकी रुचियों और चरित्र के बारे म. विस्तृत जानकारी की इच्छा प्रकट की है। आप की इस इच्छा पूर्ति के लिए मैं सहर्ष तैयार हूँ, और ऐसा करने म. मुझे भारी सन्तोष होगा। अस्तु, प्रिय महोदय, उनकी बातचीत का जो अंश मेरी स्मृति म. है वह, और साथ ही खुद मैं जो थोड़ा बहुत उन्ह. समझ पाया वह, आपकी सेवा म. लिख रहा हूँ।

इवान पेत्रोविच बेल्किन का जन्म सन् 1768 म. एक प्रतिष्ठित कुलीन घराने म. गोर्यूखिनो गाँव म. हुआ था। उनके स्वर्गीय पिता सेकण्ड मेजर प्योत्र इवानोविच बेल्किन ने त्रफीलिन परिवार की एक अविवाहिता स्त्री पेलागया गव्रीलोवना से विवाह किया। वे धनवान तो नहीं थे, किन्तु किफायतशार थे और अपने व्यावहारिक मामलों को सम्भालने की पूरी क्षमता रखते थे। उनके लड़के ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा वस्ती के एक पादरी से प्राप्त की। पुस्तक. पढ़ने और अपनी मातृ-भाषा म. लिखने का शौक भी मुझे लगता है, उसे इसी भले पादरी के संसर्ग से हुआ। 1815 म. वह एक जागेर पैदल सेना म. (मुझे सेना का नम्बर याद नहीं) भर्ती हो गया और 1823 तक उसी म. रहा। उसके माता-पिता, थोड़े अन्तर के बाद, एक-एक करके चल बसे। फलतः उसे नौकरी से अलग होना पड़ा और वह गोर्यूखिनो गाँव की अपनी पैतृक जागीर म. आकर रहने लगा।

इवान पेत्रोविच ने अब अपनी जागीर का बन्दोबस्त सम्भाला। किन्तु अनुभवहीन और कोमल-हृदय होने के कारण वह जागीर की देख-भाल अच्छी तरह नहीं कर सके और उनके स्वर्गीय पिता ने जिस कड़े अनुशासन की दाग-बेल डाली थी, वह छिन्न भिन्न हो चला। गाँव के ईमानदार तथा योग्य सरपंच को जिससे किसान (अपनी आदत के अनुसार) असन्तुष्ट थे, उन्होंने बरखास्त कर दिया और गाँव का बन्दोबस्त अपनी पुरानी भण्डारिन के हाथों म. सौंप दिया। इस भण्डारिन ने कहानियाँ सुनाने म. अपनी दक्षता की बदौलत उनके हृदय म. अपना विश्वास जमा लिया था। बातों की धनी यह वृद्धा इतना भी नहीं जानती थी कि पच्चीस और पचास रूबल के नोट म. क्या फर्क होता है। कितने ही किसानों के बच्चों की वह धर्म माँ थी इसलिए किसानों को उससे डर भी नहीं लगता था। किसानों ने एक नया पंच चुन लिया जो उन्ह. मनमानी छूट देता था और मालिक को धोखा देने म. उनके साथ साजिश करने म. भी नहीं हिचकता था। नतीजा यह कि इवान पेत्रोविच को कर्वी की

प्रथा से हाथ खींचना पड़ा और उसकी जगह उन्होंने बहुत मामूली लगान नियत कर दिया। इतने पर भी किसानों ने, मालिक की कमजोरी से लाभ उठाकर, पहले साल कई एकदम फालतू रियायत. हथिया लीं और दूसरे साल अपने लगान का दो-तिहाई से भी ज्यादा हिस्सा गिरियों, बिलबेरियों तथा इसी तरह की अन्य चीजों के रूप म. देकर निवटा दिया; इतने पर भी लगान बकाया बचा ही रहा।

इवान पेत्रोविच के स्वर्गीय पिता के मित्र के नाते मैंने यह अपना कर्तव्य समझा कि उनके पुत्र को भी सलाह-मशविरा दूँ, और आगे बढ़ कर कई बार यह प्रयत्न करना चाहा कि पहले वाली व्यवस्था जिसे अपने भरोसे कायम करने म. इवान बेल्किन असमर्थ हुए थे फिर से कायम करने म. मदद दूँ। इसी उद्देश्य से एक दिन मैं उनके घर गया, हिसाब-किताब के रजिस्टरों को तलब किया, शैतानी की जड़ उस सरपंच को बुलवाया और इवान पेत्रोविच के सामने ही मैंने इन सब की जाँच-पड़ताल शुरू कर दी। नौजवान मालिक पहले तो मेरी जाँच-पड़ताल को बड़े ध्यान और लगन से देखता-सुनता रहा, लेकिन जब रजिस्टरों से पता चला कि पिछले दो सालों म. किसानों की संख्या म. भारी बढ़ती हुई है और मुर्गे-मुर्गियों और मवेशियों की संख्या म. जान बूझकर कमी हुई है तो वह इन प्राथमिक आँकड़ों से ही इतना सन्तुष्ट हुआ कि उसने और कुछ सुनने से इन्कार कर दिया। और ठीक उस समय जब बदमाश सरपंच मेरी खोजबीन और पैने सवालों से निहायत घबरा गया था और उसकी बोलती बन्द हो गयी थी मैं देखता क्या हूँ कि इवान पेत्रोविच अपनी कुर्सी म. जोर-जोरों से खर्राटे ले रहे हैं। जरा सोचिये मुझे कितनी हैरानी हुई होगी! बस उसी घड़ी से मैंने उनकी जागीर के काम म. योग देना बन्द कर दिया और उसे सर्वशक्तिमान प्रभु के भरोसे छोड़ दिया जैसा कि उन्होंने स्वयं कर रखा था।

किन्तु यह सब होते हुए भी हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों म. कोई अन्तर नहीं आया। कारण यह कि उनकी कमजोरी और भयानक आलस्य की निन्दा करते इवान पेत्रोविच से मुझे सच्चा स्नेह था। दरअसल, ऐसे सज्जन और उदार युवक से प्रेम न होना असम्भव था। और स्वयं इवान पेत्रोविच भी मेरी बुजुर्गियत का बड़ा सम्मान करता था और मुझे बहुत चाहता था। हम लोग करीब-करीब रोज ही एक-दूसरे से मिलते थे, और अन्त तक इसी तरह मिलते रहे। वह मेरी सीधी-सादी बातों का भी बड़ा आदर करता था, हालाँकि स्वभाव आचार-विचार तथा रुचियों म. हम एक-दूसरे के बहुत पृथक् थे।

इवान पेत्रोविच की रुचियाँ बहुत सामान्य थीं। उन्ह. कोई व्यसन न था। मैंने उन्ह. कभी नशे म. धुत्त नहीं देखा (हमारे इलाकों म. यह बात किसी करिश्मे से कम

नहीं थी)। स्त्रियों के लिए उनके दिल म. चाह रहती थी, पर तो भी वह स्वयं किसी युवती से कम शर्मीले न थे।

जिन कहानियों का अपने पत्र म. श्रीमान ने जिक्र किया है, उनके अलावा इवान पेत्रोविच और भी अनेक पाण्डुलिपियाँ छोड़ गये थे, जिनम. से कुछ तो मेरे पास हैं और कुछ को भण्डारिन विभिन्न घरेलू कामों म. इस्तेमाल कर चुकी है। इस तरह पिछले जाड़ों म. घर के उस भाग म. जहाँ वह खुद रहती है, तमाम खिड़कियों के काँचों पर उनके एक अधूरे उपन्यास का प्रथम भाग चिपका हुआ था। अगर मैं भूलता नहीं हूँ तो जिन कहानियों का ऊपर जिक्र किया गया है, वे उनकी प्रारम्भिक साहित्यिक रचनाएँ हैं। इनम. से अधिकांश कहानियाँ बकौल इवान पेत्रोविच के ही सच्ची घटनाओं पर आधारित हैं जो उन्होंने भिन्न-भिन्न लोगों से सुनी थीं।... कहानियों म. पात्रों के नाम, लगभग सभी, काल्पनिक हैं। जिन बस्तियों और गाँवों का जिक्र है, वे हमारे इधर के ही हैं, अन्य गाँवों के साथ खुद मेरे गाँव का भी जिक्र है। लेकिन यह किसी बुरी नीयत से नहीं, केवल कल्पना के अभाव से हुआ है।

सन् 1825 के शरद् म. इवान पेत्रोविच को जोरों की सर्दी लग गयी। उन्ह. तेज बुखार ने धर दवाया और अत्यन्त कुशल तथा गोखरू जैसे पुराने रोगों की चिकित्सा म. खासतौर से होशियार स्थानिक डाक्टर के लाख प्रयत्नों के बावजूद उनकी जान बच नहीं पायी। तीस वर्ष की आयु में इवान पेत्रोविच ने मेरी बाहों म. ही अपनी साँस तोड़ी। गोर्यूखिनों के गिरजे के अहाते म., उनके माता-पिता की कब्रों के नजदीक ही उन्ह. दफनाया गया।

इवान पेत्रोविच का कद मझोला था, आँख. भूरी, बाल सुनहरे और नाक सीधी-सतर थी, रंग गोरा और चेहरा दुबला-पतला था।

प्रिय महोदय, मुझे अपने स्वर्गस्थ पड़ोसी तथा मित्र के जीवन, कार्यकलाप, स्वभाव एवं रूप-रंग के बारे म. इतना कुछ ही ज्ञान है। यदि आप इस पत्र को कहीं उद्धृत करने की बात सोच. तो मेरी प्रार्थना है कि कृपया मेरे नाम का उल्लेख न कर.; कारण यह कि यद्यपि साहित्यिकों के प्रति मेरे हृदय म. असीम श्रद्धा तथा प्रेम है, फिर भी मैं स्वयं उस रूप म. प्रकट नहीं होना चाहता। सचमुच ही, मेरी आयु को देखते हुए यह अशोभनीय होगा।

हार्दिक सम्मान सहित आपका...

16 नवम्बर, 1830

ग्राम नेनरादोवो

अपने लेखक के मित्र की इच्छा का मान रखना अपना कर्त्तव्य समझते हुए उन्होंने जो जानकारी प्रदान की है, उसके लिए हम अपनी सच्ची कृतज्ञता प्रकट करते हैं। हम. विश्वास कि पाठक उनके इस पत्र की सच्चाई तथा स्पष्टता की सराहना कर.गे।

पिस्तौल का निशाना

जूझे हम द्वन्द्व-युद्ध में।
बारातिन्स्की[2]

मैंने प्रण किया कि मैं उसे गोली का निशाना बनाऊँगा-

मुझे अभी अपनी बारी लेना बाकी था।

"छावनी में एक साँझ"

हम एक छोटे से कस्बे 'ऐक्स' में तैनात थे। फौजी अफसर की दिनचर्या कैसी होती है, यह सभी जानते हैं। सुबह-- कवायद और घुड़सवारी का स्कूल फिर रेजीमेण्टल कमाण्डर या किसी यहूदी कहवाखाने में दिन का भोजन, साँझ को शराब और ताश। 'ऐक्स' में एक भी घर ऐसा नहीं था जिसके पट हमारे लिए खुले हों, एक भी लड़की ऐसी नहीं थी जिसकी आयु विवाह योग्य हो। हम एक-दूसरे के क्वाटर में इकट्ठा होते रहते जहाँ आँख गरमाने के लिए एक-दूसरे की वर्दियों सिवा और कुछ न था।

जान-पहचान के हमारे हल्के में केवल एक आदमी ऐसा था जो फौजी नहीं था। उसकी आयु करीब पैंतीस वर्ष की थी और हमारे बीच वह काफी बड़ा--

कहिये कि बुजुर्ग माना जाता था। अनुभव में वह हमसे बढ़ कर था। इसके अलावा उसके चिर-उदार स्वभाव, सख्त मिजाज और कुत्सापूर्ण जुबान का हमारे युवा दिमागों पर भारी रोब छाया रहता था। उसका भाग्य किसी गहरे रहस्य में डूबा हुआ जान पड़ता था। देखने में वह रूसी मालूम होता था, लेकिन नाम उसका विदेशी था। किसी जमाने में वह हुस्सारों की घुड़सवार सेना में रह चुका था और सफल भविष्य की हर सम्भावना उसके सामने मौजूद थी। कोई नहीं जानता था कि किस कारण उसने अपने काम से इस्तिफा दिया और इस छोटे से मनहूस कस्बे में आ बैठा था। वह फटेहाल तथा शाह-खर्ची के साथ जीवन बिताता था, काले रंग का जीर्ण-शीर्ण फ्राक-कोट पहने पैदल चक्कर लगाता था, लेकिन हमारी रेजीमेण्ट के सभी अफसरों के लिए अपने घर के पट खुले रखता था। यह सच है कि उसका भोजन साधारण केवल दो या तीन चीजों का होता था जिन्हे एक भूतपूर्व सैनिक पकाता था, लेकिन शैम्पेन उसके यहाँ निर्बाध बहती थी। उसकी पूँजी या आय का किसी को कुछ मालूम नहीं था, और न ही इस बारे में उससे कुछ पूछने का कोई साहस करता था। पुस्तकों की अधिकतर पाठ-पुस्तकों और उपन्यासों की उसके पास बहुतायत थी। उन्हें उधार देने के बाद वह कभी वापस नहीं माँगता था और वह खुद भी उधार ली हुई पुस्तक कभी नहीं लौटाता था। पिस्तौल से निशाना साधना, चाँदमारी करना उसका मुख्य व्यसन था। उसके कमरे की दीवारें गोलियों की मार से ऐसी छिदी थीं जैसे मधुमक्खियों का छत्ता। उसके पास पिस्तौलों का एक संग्रह था। मिट्टी की उस तुच्छ सी झोंपड़ी में जिसमें कि वह रहता था, यह संग्रह ही उसकी एकमात्र विलासिता की चीज था। चाँदमारी में उसने अद्भुत दक्षता प्राप्त कर ली थी। अगर वह किसी के सिर पर सेब रख कर निशाना मारना चाहता तो रेजीमेण्ट में एक भी आदमी ऐसा नहीं था जो उसके हाथों में अपना सिर सौंपने में जरा भी हिचकिचाता। हमारी बातों का सिलसिला बहुधा द्वन्द्व-युद्ध की ओर मुड़ जाता, लेकिन सिलवियो (इसी नाम से हम उसे सम्बोधित करेंगे) कभी उसमें हिस्सा न लेता। यह पूछने पर कि क्या उसने कभी द्वन्द्व-युद्ध किया है, वह दो टूक जवाब देता कि हाँ और इसके बाद कुछ न बताता। साफ मालूम होता कि इस तरह की पूछताछ से वह कतराता है। हमारे मन में यह बात बैठ गयी कि कोई अभागा व्यक्ति इसकी भयानक दक्षता का शिकार हुआ है और उसकी हत्या का बोझ उसके सर पर लदा है। यह बात कि उसमें भिरुता नाम की कोई चीज हो सकती है, भूल कर भी हम नहीं सोच पाये। कुछ लोग होते हैं जिनका चेहरा इस तरह के सन्देह को पास तक नहीं फटकने

देता। और तभी एक ऐसी घटना घटी जिसने हम सबको अचरज में डाल दिया।

एक दिन सिलवियो की झोंपडी में हमारे कोई दस अफसर भोजन कर रहे थे। सदा की भाँति उस दिन भी उतना ही रंग-पानी हुआ यानी खूब जम कर दौर चले। भोजन के बाद हमने अपने मेजबान से अनुरोध किया कि आज के खेल में वह हमारा खजान्ची बन जाये। बहुत देर तक तो वह नहीं माना। कारण, वह ताश बहुत कम खेलता था। अन्त में उसने ताश मँगवाये और दस-दस रूबल के पचास नोट एक मेज पर छितरा दिये। इसके बाद उसने ताश बाँटने शुरू किये। हम सब उसके इर्द-गिर्द खड़े हो गये। खेल शुरू हुआ। सिलवियो की यह आदत थी कि खेलते समय वह चुप रहता था। न वह बहस करता था, न कभी सफाई देता था। दाँव लगाने वाला जब कभी गलती करता था तो सिलवियो फालतू रकम को या तो तुरन्त अदा कर देता था या उसे लिख लेता था। हम सब जानते थे और उसे नियमों का पालन करने देते थे। लेकिन हमारे बीच एक अफसर था जो अभी हाल ही में बदल कर यहाँ आया था। खेल के दौरान इस आदमी ने भूल से दाँव में एक प्वाइंट बढ़ा लिया। सिलवियो ने खड़िया उठायी और अपनी आदत के अनुसार संख्या को ठीक कर दिया। अफसर ने समझा कि सिलवियो ने कुछ गड़बड़ की है। सो वह उससे उलझ गया। सिलवियो चुपचाप खेलता रहा। अफसर अधीर हो उठा। उसने ब्रश उठाया और वह अंक मिटा दिया जिसे वह गलती से दर्ज हुआ समझता था। सिलवियो ने खड़िया उठायी और उन अंकों को फिर से लिख दिया। अफसर ने जो मदिरा, जुए और अपने साथियों की हँसी से उत्तेजित हो गया था, समझा कि उसका घोर अपमान हुआ है। उसने मेज पर रखा पीतल का बत्तीदान उठाया और उसे सिलवियो पर दे मारा। सिलवियो झट से एक तरफ हो गया जिससे बत्तीदान परे जा गिरा और बाल-बाल बच गया। हम अब अत्यधिक विचलित हो उठे। सिलवियो गुस्से से सफेद पड़ गया था, उसकी आँखें चिंगारियाँ छोड़ने लगी। वह उठ खड़ा हुआ। "समझे श्रीमान", उसने कहा "अब मेहरबानी करके यहाँ से फौरन चले जाओ और खुदा का शुक्र मानो जो यह घटना मेरे घर में घटी।"

इस घटना का क्या परिणाम होगा उसमें हमें कोई सन्देह न था और हमें लगा कि हमारे नये साथी की जान की अब खैर नहीं है, --उसे मरा हुआ ही समझो। वह वहाँ से चला गया, और जाते हुए कह गया कि खजान्ची महोदय जब भी चाहें, उस अपमान का बदला ले सकते हैं। इसके कुछ मिनट बाद तक खेल और चला। हमने देखा कि मेजबान का दिमाग ताश से उचट गया है और

एक-एक करके हमने उससे विदा ली। शिघ्र ही रिक्त होने वाले स्थान की चर्चा करते अपने-अपने क्वार्टरों की ओर चल दिये।

अगले दिन घुड़सवारी के स्कूल में भी हमारी चर्चा का यही विषय था कि पता नहीं अभागा लैफ्टीनेण्ट अभी जीवित है या मौत की गोद में पहुँच चुका है। तभी सहसा उससे साक्षात हुआ। हमने उससे भी यही सवाल किया। उसने जवाब दिया कि सिलवियो की ओर से उसे भी कोई सन्देश नहीं मिला है। यह जान कर हमें अचरज हुआ। हम सिलवियो के घर गये। उसने दरवाजे में ताश का इक्का बाँध रखा था और उसके मध्य-बिन्दू पर एक के बाद एक निशाना साध रहा था। सदा की भाँति आज भी उसी प्रकार उसने हमारा स्वागत किया और कल की घटना के बारे में एक भी शब्द मुँह से नहीं निकाला। तीन दिन गुजर गये। लैफ्टीनेंट अभी भी जीवित था। क्या यह सम्भव हो सकता है कि सिलवियो लड़ना नहीं चाहता-- आश्चर्य से हम एक-दूसरे से पूछते। सिलवियो नहीं लड़ा। एक मामूली सी माफी से सन्तुष्ट हो गया और लैफ्टीनेंट से उसने मेल कर लिया।

यह युवा लोगों की नजर में उसे काफी हद तक नीचे गिराने वाली चीज थी। साहस के अभाव को वे --युवा लोग-- कभी क्षमा नहीं करते। उनकी नजरों में वीरता ही सर्वोच्च गुण होता है जिसके पीछे सैकड़ों दोष छिप जाते हैं। लेकिन ध ीर-धीरे समूची घटना विस्मृति के गर्भ में विलीन हो गयी और सिलवियो ने अपना पहले वाला प्रभाव फिर प्राप्त कर लिया।

केवल मैं ही एक ऐसा व्यक्ति था जो उसे पहले वाली नजरों से नहीं देख सका। रोमाण्टिक प्रकृति का होने के कारण मैं उसका अनन्य भक्त हो गया था, उसका जीवन मेरे लिए एक पहेली से कम न था और मेरे लिए वह एक रहस्यमय कहानी का नायक था। जो भी हो, अकेला मैं ही एक ऐसा आदमी था जिसके साथ, अपनी आदत के अनुसार वह अपने कुशल किस्सों का बखान नहीं करता था, बल्कि बहुत सादगी और असाधारण माधुर्य के साथ विभिन्न विषयों पर बातें करता था। लेकिन उस अभागी सांझ की याद और यह तथ्य कि अपने अपमान को धोने के लिए उसने कुछ नहीं किया, मेरे दिमाग से कभी नहीं उतरता था। नतीजा इसका यह कि पहली नजरों से उसे देखना अब मेरे लिए सम्भव नहीं रहा था। उससे नजर मिलाते मुझे शर्म मालूम होती थी। सिलवियो अत्यधिक चतुर और अत्यधिक अनुभवी था। उससे यह और इसका कारण छिपा न रहा। वह इससे विचलित भी हुआ --कम से कम एक या दो बार मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे वह मेरे सामने अपना जी हल्का करना चाहता हो। लेकिन मैं ऐसे अवसरों से

बचता रहा और सिलवियो ने मुझे अपने आप पर छोड़ दिया। इसके बाद मैं अपने संग ही उससे मिलता और हमारी पहले वाली उनमुक्त बातचीत का सिलसिला खत्म हो गया।

बड़े नगरों की चहल-पहल में रहने वाले लोग यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि गाँव में रहने वालों के लिए छोटी-छोटी बातों में कितनी उत्तेजना रहती है। मसलन जिस रोज डाकिये का इन्तजार हो। मंगल और शुक्रवार के दिन, बिला नागा, रेजीमेण्टल हेडक्वार्टर में हलचल मच जाती। अफसर लोग अपने खत, मनीआर्डर और अखबार लेने के लिए आ जुटते। चिट्ठियाँ वहीं खोली जातीं और वहीं पर खैर-खबर के पैगाम दिये-लिये जाते और दफ्तर एक अच्छा खासा उत्तेजना का केन्द्र बन जाता। सिलवियो के पत्र रेजीमेण्ट के मारफत आते थे और आमतौर पर वह भी वहाँ मौजूद रहता था। एक दिन उसके नाम एक पत्र आया। अत्यन्त वेसब्री से उसने उसे खोला और उसे पढ़ते ही उसकी आँखें चमक उठीं। अन्य अफसरों का, जो अपने-अपने पत्रों में व्यस्त थे, इस ओर ध्यान नहीं गया। “महानुभवों” सिलवियो ने चिल्लाकर कहा, “परिस्थितिवश मुझे यहाँ से चल देना होगा। मैं आज रात को ही रवाना हो जाऊँगा। मझे विश्वास है कि आप लोग आज साँझ को आखिरी बार मेरे साथ भोजन करने से इन्कार नहीं करेंगे। मैं आप लोगों की प्रतीक्षा करूँगा।” फिर मेरी ओर मुड़ कर बोला--

“तुम जरूर आना। भूलना नहीं।” और यह कहते हुए वह हेडक्वार्टर से तुरन्त निकल गया और हम सब ने भी सिलवियो के यहाँ मिलने का निश्चय कर अपना-अपना रास्ता पकड़ा।

नियत समय पर मैं सिलवियों के यहाँ पहुँच गया। करीब-करीब समूची रेजीमेण्ट यहाँ जमा थी। उसने अपना सामान बाँध-बूँध कर तैयार कर लिया था। गोलियों से छलनी हुई नंगी दीवारों के सिवा और कुछ नजर नहीं आता था। हम मेज पर बैठ गये। हमारा मेजवान अपने पूरे रंग म. था और उसके मेहमान भी शीघ्र ही उसके रंग म. रंग गये। बोतलों के काग निरन्तर खुलते, गिलास मदिरा की सनसनाहट और झागों से उफनते और हम शुभ यात्रा और श्रेष्ठतम सफलता की कामनाओं की अनथक झड़ी लगा देते। जब हम मेज से उठे तो साँझ काफी बीत गयी थी। हमने अपनी टोपियाँ उठायी और सिलवियों ने एक-एक करके सबसे विदा ली। उसने मेरा हाथ अपने हाथ म. लिया और ठीक उस समय जब कि मैं विदा हो रहा था, मुझे रोकते हुए धीमी आवाज म. बोला--

“तुम से कुछ बात. करनी हैं।” मैं रुक गया।

मेहमान चले गये थे। हम दोनों अब अकेले थे --एक-दूसरे के सामने चुप-चाप अपने पाइपों को सुलगाते हुए। सिलवियो विचारों म. उलझा था, पहली मस्ती और उत्साह का कोई चिन्ह तक उसम. नजर नहीं आता था। उसका गम्भीर पीला चेहरा चमकती आँख. और धुआँ छोड़ता मुँह देख कर किसी दानव की याद हो आती थी। कई मिनट गुजर गये। आखिर सिलवियो ने मोन तोड़ा।

"हो सकता है कि अब फिर कभी हमारी भ.ट न हो", उसने कहा- "सो विदा होने से पहले मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ। तुम अपने मन में कहते होगे कि मैं दूसरों से कहने-सुनने कि कुछ अधिक परवाह नहीं करता। लेकिन मैं तुम्हें चाहता हूँ और मेरे लिए यह दुखद होगा कि तुम्हारे हृदय में एक गलत धारणा बनी हुई रहे।"

वह रुक गया और अपने पाईप में ताजा तम्बाकू भरने लगा। मैं बिना कुछ कहे नीचे देखता रहा।

"तुम्हें अजीब मालूम हुआ", वह कह रहा था-- "कि मैंने उस पियक्कड़ दम्भी से हिसाब चुकता नहीं किया। लेकिन यह तुम मानोगे कि उस हालत में जबकि हथियार चुनने का अधिकार मेरा था, उसकी जान मेरी मुट्ठी में थी और मेरी अपनी जान के लिए कोई खास खतरा नहीं था। चाहूँ तो मैं कह सकता हूँ कि यह मेरी उदारता थी जो मैंने उसकी जान बख्श दी। लेकिन मैं तुम्हें धोखा नहीं देना चाहता। अगर मैं अपनी जान को जरा भी संकट म. डाले बिना उससे बदला ले सकता तो उसे कभी नहीं छोड़ता।"

मैं उसकी ओर अचरज से ताक रहा था। उसकी आत्मस्वीकृति से मैं स्तब्ध रह गया। सिलवियो कह रहा था:

"हाँ, मुझे अपने जीवन को खतरे म. डालने का कोई अधिकार नहीं है। छह साल पहले एक आदमी ने मेरे मुंह पर तमाचा मारा था और मेरा वह दुश्मन अब भी जीवित है।"

मेरी उत्सुकता प्रबल हो उठी।

"और तुम उससे नहीं लड़े?" मैंने पूछा- "शायद परिस्थितियों के कारण तुम्हारी उससे मुठभेड़ नहीं हो सकी।"

"मैं उससे लड़ा था," सिलवियो ने जवाब दिया "और उस द्वन्द्व-युद्ध की यादगार अभी तक मेरे पास मोजूद है।"

वह उठा और गत्ते के एक बक्से म. से उसने एक लाल किनारीदार टोपी निकाली जिसपर एक सुनहरा गुच्छा लगा था (बिल्कुल वैसी जिसे फ्र.च लोग बौनेट

व पुलीस कहते हैं)। उसने इस टोपी को सिर पर पहन लिया और मैंने देखा कि वह माथे के एक इन्च ऊपर गोली छिदी हुई है।

"यह तो तुम जानते ही हो," सिलवियो ने फिर कहना शुरू किया। - "कि कभी मैं 'एन' हुस्सार रेजीमेण्ट म. नियुक्त था और मेरा स्वभाव भी तुमसे छिपा नहीं है। मैं हर चीज म. अव्वल रहने का आदी हूँ और युवावस्था म. तो यह बात धुन की भाँति मेरे दिल-व-दिमाग पर छाई थी। हुल्लड़बाजी उन दिनों का फैशन था और सेना म. मैं सबसे बढ़ा-चढ़ा अगियाबैताल था। नशे म. धुत होना हमारे लिए एक गर्व की बात थी और एक बार तो मैंने सुप्रसिद्ध बुर्त्सोब से अधिक मदिरा का पान किया। यह वही बुर्त्सोव था जिसे कवि देनिस दवीदोव[4] अपनी रचनाओं म. अमर कर गया है। और द्वन्द्व-युद्ध, --वे तो हमारी रेजीमैंण्ट में हर घड़ी की घटना थे, और शायद ही कोई ऐसा द्वन्द्व-युद्ध होता हो जिसम. मैं साक्षी या एक सक्रिय पक्ष की हैसियत से हिस्सा न लेता हूँ। मेरे साथी मुझे अपना देवता समझते थे और रेजीमेण्ट के कमाण्डरों के लिए --जो निरन्तर बदलते रहते थे मैं सिर पर आ पड़ने वाली बला था।

"मैं निर्द्वन्द्व भाव से (या शायद इतने निर्द्वन्द्व भाव से भी नहीं) अपनी ख्याति का रस ले रहा था। तभी एक धनी युवक एक नामी घराने की पौध, जिसका नाम बताने की जरूरत नहीं-- हमारी रेजीमैंण्ट म. आया। उस जितना प्रतिभाशाली और उस जितना भाग्य का धनी अन्य कोई अभी तक मेरे देखने म. नहीं आया था। तुम खुद ही कल्पना करो- यौवन, बढ़िया सुझ-बूझ, चेहरा-मोहरा, आह्लाद से छलछलाता हृदय, जानतोड़ साहस, गूँजता हुआ नाम, धन जिसे दोनों हाथों से खर्च करता था-- और जो कभी चुकने म. नहीं आता था, जरा सोचो कि कैसा जबरदस्त रोब उसका हम पर पड़ा होगा। मेरी वीरता का सिंहासन डोल उठा। मेरी ख्याति से आकर्षित होकर पहले तो उसने मुझसे मित्रता करनी चाही, लेकिन उसके प्रयासों का मैंने रुखाई से जवाब दिया। उसने बिना किसी खिन्नता के किनारा कर लिया। मैं उससे बहुत घृणा करने लगा। रेजीमेण्ट और स्त्रियों के दर्मियान उसकी सर्वप्रियता देख कर म. बुरी तरह भन्ना उठता। मैंने उसे कोचने की, झगड़ा मोल लेने की कोशिश की। मैं उसके नाम धरता, और वह अपनी फब्तियों से उन्ह. उड़ा देता। उसकी फब्तियाँ, अपने मुकाबिले म. मुझे हमेशा अधिक चुस्त और ताजी मालूम होतीं। और कहने की आवश्यकता नहीं, मनोरंजक तो वे इतनी होती थीं कि कोई हद नहीं। वह केवल मजाक म. कहता था, और मैं विष के बाण छोड़ता था। आखिर, एक रात नृत्य-पार्टी म., पौलैण्ड के एक जमींदार के यहाँ यह

पार्टी थी उसे सभी स्त्रियों के गले का हार बना देख, खासतौर से घर की मालकिन का जिस के साथ मेरा भी कुछ प्रेम व्यवहार चल रहा था मैंने उसके कान म. कुछ बेहूदा सा मजाक कर डाला। वह तमतमा उठा और पलट कर सीधा उसने मेरे मुँह पर तमाचा दे मारा। अपनी तलवारों की मूठ पर हमारे हाथ लपके, स्त्रियाँ बेहोश होने लगीं, जबर्दस्ती हम दोनों को अलग कर दिया गया, और उसी रात द्वन्द्व-युद्ध की ललकार के साथ हम एक-दूसरे से विदा हुए।

"पौ फटने का समय था। अपने तीन साथियों के साथ मैं नियत स्थान पर खड़ा था और बड़ी अधीरता के साथ अपने विरोधी की प्रतीक्षा कर रहा था। वसन्त के दिन थे सो सूरज जल्दी निकल आया, और गरमी बढ़ने लगी। सहसा वह मुझे आता दिखाई दिया। वह अभी काफी दूर था। तलवार की नोक पर अपने लबादे को टांगे चला आ रहा था। साथ म. केवल एक साथी था। उससे मिलने के लिए हम सब आगे बढ़े। वह निकट आ गया। अपनी टोपी म., जिसे वह हाथ म. लिए था, उसने चेरियाँ भर रखी थी। हमारे साथियों ने हम दोनों को बारह डग की दूरी पर खड़ा कर दिया। पहले मुझे गोली चलानी थी, लेकिन मैं गुस्से से काँप रहा था। मुझे भरोसा नहीं था कि मेरा हाथ स्थिर रह सकेगा या नहीं। अस्तु पहला वार करने का अधिकार मैंने उसे दे दिया। लेकिन मेरा प्रतिद्वन्द्वी इस पर राजी नहीं हुआ। आखिर निश्चय किया गया कि पर्ची डाल कर तय कर लिया जाये। भाग्य का वह सदा धनी था। वही जीता। उसने निशाना साधा और गोली मेरी टोपी को छेदती हुई पार हो गयी। अब मेरी बारी थी। उसका जीवन अब मेरी मुट्ठी म. था नजर गड़ा कर मैंने उसकी ओर देखा और जानने का प्रयत्न किया कि उसम. घबराहट का कोई जरा-सा भी चिन्ह है या नहीं। वह ठीक मेरी पिस्तौल की सीध म. खड़ा था, अपनी टोपी म. से चुन-चुनकर चेरियाँ खा रहा था और उनके बीज थूकता जाता था जो करीब-करीब उस जगह आकर गिरते थे जहाँ मैं खड़ा था। उसकी इस उपेक्षा से मैं झुँझला उठा। ऐसे आदमी का जीवन लेने से क्या लाभ, मैंने सोचा, जो उसकी जरा भी कद्र नहीं करता। मेरे मन म. एक शैतानी विचार जागा। मैंने पिस्तौल नीचे कर ली और कहा--

"मैं देखता हूँ कि मरने के लिए तैयार होने के बजाय तुम इस समय नाश्ता करने म. मगन हो। तुम्हारे इस आनन्द म. मैं खलल नहीं डालना चाहता।" "इसकी चिन्ता न करो। आप अपनी गोली चलायें। मेरे नाश्ते म. जरा भी खलल नहीं पड़ेगी। यों आपकी मर्जी। आपका दाँव मुझ पर बाकी रहेगा। जब भी आप चाह.गे म. तैयार मिलूँगा।" उसने जवाब म. कहा मैं साक्षियों की ओर मुड़ा और

उनसे कहा कि इस समय मैं गोली नहीं चलाना चाहता। बस इससे आगे वह द्वन्द्व-युद्ध नहीं बढ़ पाया।

"मैंने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और इस गाँव म. आकर रहने लगा तब से एक दिन भी ऐसा नहीं गुजरा जबकि मेरे मन म. बदला लेने का इरादा शिथिल पड़ा हो। और अब वह समय आ पहुँचा है..."

सिलवियो ने अपनी जेब म. से वह पत्र निकाला जो सुबह आया था, और पढ़ने के लिए उसे मेरे हाथों म. थमा दिया। किसी ने (सम्भवतः उसके वकील ने) मास्को से लिखा था कि अमुक व्यक्ति एक सुन्दर युवती के साथ पवित्र विवाह-सूत्र म. बँधने जा रहा है।

"यह तो तुम समझ ही गये होगे," सिलवियों ने कहा, "कि यह अमुक व्यक्ति कौन है। मैं अब मास्को जा रहा हूँ। मुझे देखना है कि विवाह से ठीक पहली रात को भी क्या वह उसी उपेक्षा से मौत का सामना करता है जैसा कि उसने पहले किया था, अपनी टोपी म. से चेरियों का नाश्ता करते हुए!"

यह कह सिलवियो उठ खड़ा हुआ, अपनी टोपी को उसने फर्श पर पटक दिया और पिंजरे म. बन्द शेर की भाँति कमरे म. इधर से उधर डग भरने लगा। मैं एकदम निश्चल खड़ा था। उसकी बातों को मैंने सुना और विचित्र तथा परस्पर विरोधी भावनाओं से मैं उत्तेजित हो उठा। नौकर ने आकर सूचित किया कि घोड़े जुतकर तैयार हैं। सिलवियो ने प्रेम से मेरा हाथ दबाया और हम दोनों आलिंगन म. गुँथ गये। वह गाड़ी म. सवार हुआ, जिसम. दो ट्रैक रखे थे। एक म. उसके पिस्तौलों का संग्रह था और दूसरे म. उसका निजी सामान। हमने एक बार फिर एक-दूसरे से विदा ली और घोड़े हवा से बात. करते चल दिये।

कई साल गुजर गये। घरेलू परिस्थितियों से बाध्य होकर अब मैं 'ऐक्स' जिले के एक अत्यन्त गरीब गाँव म. बस गया था। मैं अपनी जागीर की देख-भाल म. व्यस्त रहता पर पहले के चिन्ताहीन तथा हलचलपूर्ण जीवन की कसक एक क्षण के लिए भी मेरा पीछा न छोड़ती। पतझड़ और जाड़े की साँझों का निपट सूनापन काटने को दौड़ता और सबसे अधिक भारी मालूम होता। दोपहर के भोजन के समय तक तो किसी न किसी तरह, समय कट जाता, गाँव के पंचों से बात. करता; काम कैसे चल रहा है यह देखने के लिए अपनी जागीर का घोडे-गाड़ी पर बैठ कर चक्कर लगाता, या नये शुरू हुए उद्योग-धन्धों का मुआइना करने चला जाता। लेकिन शाम पड़ते ही मेरी समझ म. न आता कि अब क्या करूँ। विभिन्न दराजों

और स्टोर रूम म. गिनती की जो किताब. मेरे हाथ लगी थीं, उनका एक-एक अक्षर मैंने चाट डाला था। हमारे घर की मालकिन किरिलोवना को जितनी कहानियाँ याद थीं, उन्ह. सुनते-सुनते मेरे कान पक चुके थे, और स्त्रियों के गीत मुझे उदासी के गर्त म. डाल देते थे। तीखे और तेज नशीले पेयों की शरण मैं ले सकता था, लेकिन उन्ह. पीकर मेरे सिर म. दर्द हो जाता था। इसके अलावा मुझे खुलकर कहना चाहिए कि म. डरता था कि ऊब के कारण कहीं मैं शराबी न बन जाऊँ-- बदतर किस्म का शराबी जिसकी अनगिनत मिसाल. हमारे इस जिले म. मौजूद थीं। गिनती के मेरे दो या तीन पड़ोसी ऐसे ही अभागे जीव थे जिनकी बातों का सिलसिला खाँसने और आह. भरने म. ही खत्म हो जाता था। ऐसे साथियों की संगत से तो सूनापन ही भला था।[5]

गाँव से चार वर्स्ट दूर काउण्टेस 'बी' की एक बहुत ही सम्पन्न जागीर थी। लेकिन वहाँ केवल एक कारिन्दे के सिवा अन्य कोई नहीं रहता था। काउण्टेस आपनी जागीर म. केवल एक ही बार आयी थी, अपने विवाह के पहले वर्ष और सो भी महीना सवा-महीना से अधिक नहीं ठहरी। लेकिन अपने निर्जनवास के दूसरे बसन्त में इस अफवाह ने जोर पकड़ा कि काउण्टेस अपने पति के साथ गर्मियों म. अपनी जागीर म. आने वाली है। और सचमुच, जून के प्रारम्भ म. वे लोग आ भी गये।

किसी ऐश्वर्यशाली पड़ोसी का आगमन देहात के निवासियों के जीवन म. एक युगान्तरकारी घटना होती है। भूस्वामी और उनके घर-बार के लोगों म. घटना से दो महीने पहले से लेकर तीन साल बाद तक उसकी चर्चा गर्म रहती है। खुद अपने बारे म. भी स्वीकार करना चाहिए कि एक युवा तथा सुन्दर पड़ोसी के आगमन की खबर ने मेरे हृदय पर जबर्दस्त असर डाला। उसे देखने के लिए मैं बुरी तरह बेचैन हो गया और उसके आगमन के बाद पहले रविवार को ही, दोपहर के भोजन से निपट महामहिमों की सेवा म. अपने-आपको उनके निकटतम पड़ोसी और अति बिनीत सेवक को पेश करने के लिए चल दिया।

दरबान ने मुझे काउण्टेस के अध्ययन कक्ष म. ले जाकर बैठा दिया और मेरे आने की सूचना देने के लिए भीतर चला गया। अध्ययन कक्ष खूब खुला सा और बेशकीमत साज-सामान से सजा था। दीवार के साथ किताबों से भरी अल्मारियाँ रखी थी। अल्मारियों के ऊपर एक-एक काँसे की मूर्ति धरी थी। संगमरमर के आतिशदान के ऊपर एक बहुत बड़ा आईना लगा था। फर्श पर हरे रंग का बिछावन था और उसके ऊपर बढ़िया कालीन सजे थे। गरीबावास म. रहते-रहते आसाइश का मैं अभ्यस्त हो गया था और दूसरों के ऐश्वर्य को देखने की आदत

छूट गयी थी। सो मैं डरा-सहमा-सा बैठा काउण्टेस के आगमन की उसी तरह प्रतीक्षा कर रहा था जैसे कोई देहाती प्रार्थी किसी मंत्री के आने की प्रतीक्षा करता है। आखिर दरवाजा खुला और बत्तीस वर्ष के अत्यन्त सुन्दर आदमी ने प्रवेश किया। बड़े प्यार भरे और दोस्ताना अन्दाज से काउण्ट मेरी ओर बढ़ा। अपने को सम्भालने का प्रयत्न करते हुए मैं अपना परिचय देने के लिए उठा ही था कि काउण्ट ने स्वयं अपना परिचय कराया। हम दोनों बैठ गये काउण्ट के बातचीत करने का ढंग बहुत ही शालीन और सहज था। सुदीर्घ निर्जन-वास से उत्पन्न मेरा संकोच शीघ्र दूर हो गया। मैं अपनी सहज-स्वाभाविक स्थिति का अनुभव कर ही रहा था कि तभी काउण्टेस ने प्रवेश किया और पहले से भी अधिक गहरे संकोच ने मुझे अपने चंगुल म. जकड़ लिया। वह सचमुच बहुत ही सुन्दर महिला थी। काउण्ट ने मेरा परिचय कराया। सहज-स्वाभाविक स्थिति म. मैंने अपने-आपको दरसाने की कोशिश की, लेकिन जितना ही मैं अपने-आपको निर्द्वन्द्व जताने की कोशिश करता, उतनी ही अधिक मेरी परेशानी बढ़ती जाती। मेरा संकोच दूर करने के लिए काउण्ट और काउण्टेस ने आपस म. बातचीत शुरू कर दी ताकि मुझे अपनी झिझक मिटाने का मौका मिल जाये और मेरे साथ औपचारिकता बरतने की बजाय पड़ोसियों का सा व्यवहार किया। इस बीच उठ कर मैं कमरे म. टहलने और पुस्तकों तथा तस्वीरों को देखने लगा। मैं तस्वीरों का कोई जानकार नहीं था, लेकिन इनम. से एक तस्वीर ने खासतौर से मेरा ध्यान आकर्षित किया। इसम. स्विजरलैंड का दृश्य चित्रित था। लेकिन इस चित्र ने मुझे इतना अधिक आकर्षित नहीं किया जितना कि इस बात ने कि इसम. ठीक एक-दूसरे के ऊपर दो गोलियों के छेद थे। "यह बहुत ही सधे हुए हाथ का निशाना है," काउण्ट की ओर मुड़ते हुए मैंने कहा "हाँ," काउण्ट ने जवाब दिया-- "बहुत ही बढ़िया निशाना है। क्या तुम भी इस हुनर म. माहिर हो?" उसने पूछा। "एक नम्बर," बातचीत का सिलसिला अपने प्रिय विषय की ओर मुड़ते देख मैंने प्रसन्नता से कहा-- "तीस डग दूर से मैं ताश के बिन्दु को बींध सकता हूँ, लेकिन कहने की आवश्यकता नहीं, पिस्तौल वही होना चाहिए जिस पर मेरा हाथ सधा हो!" "क्या सचमुच?"

काउण्टेस ने गम्भीर अन्दाज म. कहा। फिर काउण्ट की ओर मुड़ते हुए बोली- "प्रिय, क्या तुम भी तीस डग की दूरी से ताश की बिंदु को बींध सकते हो?" "किसी दिन कोशिश करके देख.गे," काउण्ट ने कहा-- "अपने जमाने म. मैं भी कुछ बुरा निशानेबाज नहीं था। लेकिन पिछले चार साल से तो मैंने पिस्तौल को छुआ तक नहीं।" "ओह," मैंने कहा-- "तब तो मैं शर्त लगा कर कह सकता हूँ

कि महानुभाव तीस डग की दूरी से भी ताश पर निशाना नहीं लगा सक.गे। कारण, पिस्तौल का निशाना रोजाना प्रैक्टिस पर निर्भर करता है। यह मैं अपने अनुभव से जानता हूँ। म. अपनी रेजीमेण्ट का सबसे अच्छा निशानेबाज गिना जाता था। लेकिन एक बार ऐसा हुआ कि पूरे एक महीने तक मैंने पिस्तौल को अपने हाथ म. नहीं लिया, मेरा पिस्तौल मरम्मत के लिए गया हुआ था। नतीजा इसका क्या हुआ? सच मानिये महानुभाव इसके बाद पहली बार जब मैंने उसे दागा तो पच्चीस डग दूर रखी एक बोतल तक का निशाना नहीं लगा सका। लगातार चार बार निशाना चूका। हमारा कप्तान वहाँ मौजूद था। वह बहुत ही बातूनी और मजाकिया आदमी था। कहने लगा-- 'सच मित्र बोतल से तुम्ह. इतना प्रेम है कि तुम उसे अपनी गोली का निशाना नहीं बना सकते।' नहीं, महानुभाव इसका अभ्यास उपेक्षा करने की चीज नहीं। अभ्यास छूटा कि निशाना बेकार हुआ। अब तक जिस सबसे अच्छे निशानेबाज को मैंने देखा है, वह नित्य अपना हाथ साधा करता था, भोजन से पहले कम से कम तीन बार अवश्य गोली दागता था। यह उसकी आदत थी, ठीक वैसे ही जैसे कि लोगों को भोजन से पहले वोदका का गिलास चढ़ाने की आदत होती है।" काउण्ट और काउण्टेस खुश थे कि आखिर मेरी जुबान खुली। काउण्ट ने पूछा-- "उसकी निशानेबाजी के बारे म. कुछ और बताओ।" "बताता हूँ महानुभाव। कभी-कभी वह दीवार की ओर देखता। उसे नजर आता कि वहाँ एक मक्खी आकर बैठी है... नहीं काउण्टेस, हँसे नहीं; मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह बिलकुल सच है... हाँ तो वह मक्खी को बैठा हुआ देखता और चिल्लाकर कहता-- 'कुजका, मेरा पिस्तौल!' कुजका भरा हुआ पिस्तौल उसके हाथों म. थमा देता-- और घांय! मक्खी दीवार पर कचर कर रह जाती!" "वाह, कमाल है!" काउण्ट विस्मय से चिल्लाया-- "उसका क्या नाम था?" "सिलवियो, सरकार!" "सिलवियो!" काउण्ट के मुँह से निकला और वह उछल कर खड़ा हो गया-- "क्या तुम उसे जानते हो?" "बेशक सरकार वह और मैं गहरे दोस्त थे। हमारी रेजीमैंण्ट म. वह अपना ही आदमी समझा जाता था। लेकिन पिछले पाँच साल से उसकी कोई खबर नहीं मिली। तो क्या सरकार उसे जानते है?" "हाँ, मैं उसे बहुत अच्छी तरह जानता था। क्या उसने कभी तुमसे जिक्र किया... लेकिन नहीं, ऐसा नहीं हो सकता... क्या उसने अपने जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना का कभी तुमसे उल्लेख नहीं किया?" "ओह, महानुभाव, आपका आशय शायद उस घटना से है जिसम. नशे म. धुत एक युवक ने उसके मुँह पर प्रहार किया था?" "और क्या उसने उस नशेबाज युवक का नाम तुम्ह. कभी नहीं बताया?" "नहीं,

महानुभाव उसने नाम कभी नहीं बताया," मैंने कहा और तभी मुझे सत्य का कुछ-कुछ आभास हुआ। चिल्लाकर मैंने कहा "माफ करना महानुभाव मुझे कतई ख्याल नहीं था... कहीं आप ही तो वह युवक नहीं हैं?" "हाँ, मैं ही वह युवक हूँ," काउण्ट ने जवाब दिया और उनके चेहरे का भाव अत्यन्त विचलित हो उठा - "और यह तस्वीर जिसपर तुमने गोलियों के निशान देखे हैं हमारी अन्तिम भ.ट की यादगार है..." "ओह, प्रिय!" काउण्टेस ने कहा-- "उसका जिक्र न कीजिए। मैं बिनती करती हूँ! जब भी उसका जिक्र सुनती हूँ मेरा हृदय भय से काँप उठता है, यह आप जानते हैं।" "नहीं," काउण्ट ने कहा-- "मुझे कहने दो-- उसका पूरा किस्सा बयान करने दो। यह तो इन्ह. मालूम ही है कि किस प्रकार मैंने इनके मित्र का अपमान किया था। अब इन्ह. यह भी मालूम हो जाना चाहिए कि किस प्रकार सिलवियो ने मुझ से अपना बदला लिया।" काउण्ट ने एक आरामकुर्सी खींच कर मेरी ओर कर दी और मैंने अत्यन्त उत्सुकता के साथ निम्नलिखित कहानी को सुना।

"पाँच साल हुए मैने विवाह किया। पहला महीना, मधुमास, मैंने यहाँ इसी गाँव म. बिताया। इस घर के साथ मेरे जीवन के मधुरतम क्षण मेरे जीवन की एक दुखदतम स्मृति से सम्बद्ध है।"

"एक दिन की बात है। साँझ के समय हम दोनों अपने-अपने घोड़ों पर सैर के लिए बाहर निकले। एक जगह मेरी पत्नी का घोड़ा बिगड़ गया। डर के मारे उसने रास मेरे हाथों म. थमा दी और पैदल घर की ओर लौट चली। मैं घोड़े पर ही आगे बढ़ चला। जब घर पहुँचा तो अहाते म. एक मुसाफिरी गाड़ी खड़ी थी। पता चला कि एक आदमी मेरे अध्ययन-कक्ष म. बैठा मेरी प्रतीक्षा कर रहा है, और यह कि पूछने पर उसने अपना नाम बताने से इन्कार कर दिया और सिर्फ इतना कहा कि उसे मुझसे काम है। इस कमरे म. पाँव रखने पर धुंधलके म. मैंने देखा कि एक आदमी आतिशदान के सामने खड़ा है। उसका सिर नंगा था, दाढ़ी बढ़ी हुई थी और धूल की परत उस पर चढ़ी थी। वह यहीं, ठीक इस जगह खड़ा था। मैं उसके निकट गया और उसे पहचानने को कोशिश करने लगा। 'क्या तुम मुझे नहीं पहचानते काउण्ट?' उसने काँपती आवाज म. कहा 'अरे, सिलवियो!' मेरे मुँह से निकला और मुझे स्वीकार करना चाहिए कि मेरे रोंगटे खड़े हो गये। 'हाँ वही' उसने कहा-- 'गोली दागने की अब मेरी बारी है। तुम तैयार हो न?' उसकी बंडी की जेब म. से पिस्तौल झाँक रहा था। मैंने बारह डग नापे और वहाँ, उस कोने म., खड़ा हो गया। मैंने उससे अनुरोध किया कि वह देर न करे और मेरी पत्नी के लौटने से पहले ही अपना वार पूरा कर ले। वह ठिठका और उसने रोशनी लाने के

लिए कहा। बत्तियाँ लायी गयीं। मैंने दरवाजे को ताला लगाया, नौकरों को आदेश दिया कि किसी को इधर न आने द., और गोली चलाने का उससे फिर अनुरोध किया। उसने अपना पिस्तौल बाहर निकाल कर निशाना साधा। मेरे लिए एक-एक क्षण भारी था... मैंने उसके, अपनी पत्नी के, बारे म. सोचा भयानक तनाव से पूर्ण एक मिनट बीता। सिलवियों ने अनायास ही, हाथ नीचे कर लिया। 'मुझे खेद है' उसने कहा 'कि मेरे पिस्तौल म. सीसे की वजनी गोलियाँ है, चेरी की गुठलियाँ नहीं। मैं यह अनुभव किये बिना नहीं रह सकता कि यह द्वन्द्व-युद्ध नहीं, बल्कि हत्या है। निहत्ये आदमी पर, गोली चलाने का मे आदी नहीं हूँ। अच्छा हो कि नये सिरे से शुरू कर. और पहले कौन गोली चलाये, यह पर्ची डाल कर तय कर लिया जाये।' मेरा सिर चकरा गया... जहाँ तक मुझे याद है, मैं इससे सहमत नहीं हुआ. .. आखिर हमने एक दूसरी पिस्तौल म. गोलियाँ भरी, दो पर्चियों की गोलियाँ बनाकर उसने उन्ह. उस टोपी म. डाल दिया जिसे मैं पहले छलनी कर चुका था। इस बार फिर पर्ची मेरे नाम की ही निकली। 'भाग्य के मामले म. तुम शैतान से कम नहीं हो!' उसने कहा और एक ऐसी मुस्कान उसके होंठों पर खेल गयी जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मेरी समझ म. नहीं आता कि मुझे क्या हो गया था और किस प्रकार मैं यह सब कर सका... जो हो, मैंने गोली चलाई-- और वह उस तस्वीर को लगी।" (काउण्ट ने गोलियों से छिदे चित्र की ओर संकेत करते हुए कहा। काउण्ट के गाल तमतमा उठे थे और काउण्टेस का चेहरा उसके गाल से भी ज्यादा सफेद पड़ गया था। मेरे मुँह से, बरबस एक चीख निकल गयी।) "मैंने गोली चलाई," काउण्ट कह रहा था-- "और भगवान का शुक्र है कि मेरा निशाना चूक गया। इसके वाद सिलवियो... ओह, अत्यन्त भयानक दिख रहा था उस समय वे... हाँ तो उसने निशाना साधा। तभी दरवाजा खुला माशा भीतर लपकी और चीख मार कर मेरे कंधे से चिपक गयी। उसे देख कर मैं कुछ होश म. आया। 'मेरी प्यारी,' मैंने उससे कहा-- 'क्या तुम इतना भी नहीं समझी कि हम मजाक कर रहे हैं। देखो न तुमने अपनी सूरत क्या बना डाली है! जाओ, थोड़ा ठण्डा पानी पियो और लौटकर फिर यहाँ आओ। तब मैं अपने पुराने मित्र और साथी से तुम्हारा परिचय कराऊँगा।' माशा को मेरी बात का यकीन नहीं हुआ। 'मुझे बताओ,' जानलेवा सिलवियो की ओर मुड़ते हुए उसने पूछा-- 'क्या मेरे पति की यह आदत सच है कि तुम दोनों केवल मजाक कर रहे थे?' 'मजाक की तो इनकी पुरानी बात है, काउण्टेस,' सिलवियो ने जवाब दिया-- 'मजाक ही म. उन्होंने एक बार मेरे मुँह पर थप्पड़ दे मारा था, मजाक ही म. उन्होंने मुझ पर गोली भी चलायी थी जो मेरी टोपी को लगी, और अब भी मजाक मजाक म. ही उनका निशाना मुझ पर चूक

गया। और अब मेरा भी जी चाहता है कि मजाक म....' इन शब्दों के साथ उसने फिर निशाना साधने का प्रयत्न किया... ठीक माशा के सामने ही! माशा उसके पाँवों पर गिर पड़ी। 'यह क्या माशा, इस तरह गिरते तुम्ह. लाज नहीं आती! उठो खड़ी हो!' मैंने गुस्से से भर कर कहा फिर सिलवियो की ओर मुखातिब होकर बोला 'और तुम... श्रीमान... इस अभागी स्त्री के साथ यह खिलवाड़ बन्द करो। तुम्ह. गोली चलानी है या नहीं?' 'नहीं,' सिलवियो ने जवाब दिया-- 'मेरी आत्मा सन्तुष्ट हो गयी। मैं तुम्ह. सहमा और घबराया हुआ देखना चाहता था, सो मैंने देख लिया। तुम फिर मुझ पर गोली चलाने के लिए तैयार हो गये। बस, मेरे लिए इतना ही काफी है। तुम मुझे कभी नहीं भूलोगे। मैं तुम्ह. तुम्हारी आत्मा पर छोड़ता हूँ।' यह कह कर वह जाने लगा। फिर दरबाजे म. ठिठक कर खड़ा हो गया, उस चित्र की ओर देखा जिसे मैंने छेद डाला था और यों ही-- बिना कोई खास निशाना साधे उसने उस पर गोली दागी और गायब हो गया। मेरी पत्नी को गश आ गया। मेरे नौकर जो उसे रोकने का साहस नहीं कर सके भय से आँख. फाड़े केवल उसे देखते रहे। बाहर के बराण्डे म. निकल उसने अपने कोचवान को पुकारा और इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता वह जा चुका था।"

काउण्ट ने उसके बाद और कुछ नहीं कहा। और इस प्रकार मुझे उस कहानी के अन्त का पता चला जिसके प्रारम्भ ने किसी समय मुझे अत्यधिक प्रभावित किया था। कहानी के नायक से फिर कभी मेरी भ.ट नहीं हुई। कहते हैं कि अलेसान्देर इप्सिलान्ती[6] के विद्रोह के दौरान सिलवियों ने एक टुकड़ी का नेतृत्व किया था और स्कूल्यानी के युद्ध म. यह मारा गया था।

बर्फ का तूफान

तुन्द-तेज घोड़े... हवा से करते बात. बढ़ रहे थे कगारेदार धरती पर
अपने पाँवों से बर्फ कराते... तभी अथाह शून्य के बीच सहसा दिया दिखायी--
एक सूना घर-- खुदा का घर और अचानक-- घिर आया बर्फ का तूफान
उड़ते हिमकणों के बगूले और गच्चे खाती
ढलती बर्फ-गाड़ी के ऊपर झपटा एक कौवा! जैसे हो काल-दूत परों को
सनसनाता और उसकी आवाज दे रही थी सूचना-- अशुभ भविष्य की ओर
तुन्द-तेज घोड़े-- अयालों के बाल, भय से खड़े हुए करते प्रयत्न वीरान को दूर
तक फैले अन्धकार को!

जुकोव्स्की

सन् 1717 के अन्तिम दिनों की बात है-- वह काल जो हमारे इतिहास म. भुलाया नहीं जा सकता, नेनरादोवो गाँव अपनी जागीर म. नेकनाम गव्रीला गव्रीलोविच आर. रहता था। अपने आतिथ्य और सहृदयता के लिये वह समूचे जिले म. प्रसिद्ध था। पड़ोसियों का उसके यहाँ बराबर जमघट लगा रहता था। वे उसके यहाँ आते, खाते-पीते और पाँच-कोपेक की बाजी लगा कर उसकी पत्नी के साथ बोस्टन खेलते। कुछ उसकी लड़की मारिया गव्रीलोव्ना को एक नजर देखने के लिए ही उसके घर का चक्कर लगाते। यह एक दुबली-पतली और चम्पई रंग की युवती थी। आयु सत्रह वर्ष। जीवन-साथिन बनाने के लिए बहुत ही उपयुक्त, सो बहुतों के हृदय कुड़मुड़ाते। और वे उसे खुद अपने या अपने बेटों के लिए अपनी ओर खींचना चाहते।

मारिया गव्रीलोव्ना फ्र.च उपन्यासों की घुट्टी पीकर पली थी। नतीजा इसका यह कि वह जल्दी ही प्रेम-सूत्र म. बँध गयी। उसके प्रेम का पात्र पीले रंग का एक गरीब फौजी अफसर या जो छुट्टी लेकर अपने बाप-दादा के गाँव म. आया हुआ था। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस युवक का हृदय भी समान रूप म. प्रेम प्रज्वलित था। लेकिन उसकी प्रेमपात्री के अभिभावकों ने उनके पारस्परिक मुकाम को देख कर अपनी कन्या पर प्रतिबन्ध लगा दिया कि वह अपने मन म. उसका खयाल तक न लाये, और जब वह उनके घर जाता तो ये उसका इस प्रकार रुखाई के साथ स्वागत करते जैसे वह अवकाश प्राप्त छोटा मैजिस्ट्रेट हो। दोनों प्रेमी एक-दूसरे को पत्र लिखते और देवदार वृक्षों के एक निराले झुरमुट या एक जीर्ण-शीर्ण गिरजे की छाँह म. प्रतिदिन एक-दूसरे से मिलते। वे चिर प्रेम की कसम. खाते, अपनी दुःखद स्थिति पर विलाप करते और हर तरह के मन्सूबे बाँधते। पत्रों के इस आदान-प्रदान और इस तरह के वार्तालाप के फलस्वरूप (और यह स्वाभाविक भी था) वे निम्न नतीजे पर पहुँचे-- चुँकि हम एक-दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकते और हमारे हृदयहीन माता-पिता हमारी खुशहाली के मार्ग म. बाधक बने हैं, इसलिए उनकी मर्जी की हम ही क्यों चिन्ता कर.? सहज ही कल्पना की जा सकती है कि यह सुखद बात सब से पहले युवक के दिमाग म. आयी और मारिया ग्रवीलोव्ना का रोमान्सप्रिय हृदय इसे सुन कर खुशी से नाच उठा। जाड़ों के दिन आये और दोनों का मिलना-जुलना बन्द हो गया, लेकिन इससे उनका पत्रव्यवहार और भी सजीव हो उठा। ब्लादीमिर निकोलायेविच हर पत्र म. अपनी प्रेमिका से अनुरोध करता कि वह उसकी वन जाये, गुप्त रूप म. उससे विवाह कर ले कुछ समय के लिए दोनों कहीं ओझल हो जायें, इसके बाद अपने अभिभावकों के पाँवों पर गिर पड़., जिनका हृदय प्रेमियों की साहसपूर्ण निष्ठा और वेदना देख कर पिघले विना नहीं रहेगा और जो अपनी बाह. फैला निश्चय अपने बच्चों को गले से लगा ल.गे। मारिया गव्रीलोव्ना जल्दी ही किसी निश्चय पर नहीं पहुँच सकी। घर से भागने की अनगिनत योजनाएँ बनी और टूटी, अन्त म. वह मान गयी। तय हुआ कि नियत दिन वह साँझ का भोजन करने न जाये, सिर दर्द का बहाना करके अपने सोने के कमरे म. पड़ी रहे। उसकी दासी को भी इस योजना म. शामिल कर लिया जाये। फिर दोनों, पिछले दरवाजे से, बाग म. निकल आये। वहाँ एक वर्फ-गाड़ी उनका इन्तजार करेगी। बस, उसम. बैठ कर नेनरादोवो से चार एक मील दूर जाद्रिनो गाँव पहुँच सीधे गिरजा घर चली आये। वहाँ ब्लादीमिर उनका इन्तजार करता मिलेगा।

उस निश्चित दिन से एक रोज पहले मारिया ग्रवीलोव्ना को रात भर नींद नहीं आयी उसने अपने कपड़ों की अल्मारी खोली, कपड़े-लत्तों को बाँध-बूँध कर ठीक किया, दो लम्बी चिट्ठियाँ लिखीं-- एक अपनी भावुक युवा सखी के नाम और दूसरी अपने माता-पिता के नाम अत्यन्त हृदयस्पर्शी शब्दों म. उसने उनसे विदा ली, लिखा कि प्रेम के प्रबल प्रवाह से अभिभूत होकर उसे यह काम करना पड़ रहा है, और इस घोषणा के साथ उसने पत्र का अन्त किया कि उसके जीवन की वह घड़ी सबसे अधिक सुखकारी होगी जबकि वह अपने प्रिय माता-पिता के पाँवों पर गिर कर उनका आशीर्वाद पाने म. सफल होगी। अपने पत्रों को तूला-मोहर से जिसम. उपयुक्त आलेख के साथ दो प्रज्वलित हृदय बने थे-- उसने बन्द किया और ठीक उस समय जबकि पौ फूट रही थी, अपने बिस्तर पर जाकर लेट गयी। उसे एक हल्की सी झपकी आ गयी, लेकिन भयानक सपने उसे रह-रह कर सताने लगे। एक सपने म. उसने देखा कि ठीक उस समय जबकि वह गिरजा जाने के लिए बर्फ-गाड़ी पर सवार हो रही थी, उसका पिता आ धमका, बर्फ पर से बड़ी बेरहमी के साथ घसीटता हुआ उसे ले गया और एक अतल अन्धकारमय तहखाने म. उसने उसे पटक दिया.. तेज गति से वह अन्धकार म. डूबती चली गयी और उसके हृदय की धड़कन जैसे एकदम बन्द हो गयी। एक अन्य सपने म. उसने देखा कि ब्लादीमिर खून म. लतपत घास पर पड़ा है और उसका चेहरा पीला ज़र्द पड़ गया है। वह मरने के करीब आ पहुँचा है और हृदय के आर-पार हो जाने वाले जख्म म. वह उससे विनती करता है कि विवाह म. जरा भी देर न करे। एक के बाद दूसरे, असंबद्ध और अत्यन्त भयानक दृश्य उसके हृदय और मस्तिष्क को आंदोलित रहे। अन्त म. वह उठ बैठी, पहले से भी अधिक पीली, सिर म. सनसनाहट का दर्द लिए हुए। उसके माता-पिता से उसकी यह अकुलाहट छिपी न रही। वह भी चिन्तित हो उठे और बड़े प्यार से बार बार पूछते "माशा तुम्हें क्या हुआ है? माशा, क्या तुम बीमार हो?" उनके यह प्रश्न माशा के दिल पर चोट करते। उसने उनकी आशंकाओं को निर्मूल करने तथा प्रसन्न दिखने का प्रयत्न किया, लेकिन इसम. सफल न हो सकी। साँझ हुई। यह सोच कर कि आज का दिन आखिरी दिन है जो वह अपने माँ-बाप की गोद म. बिताएगी, उसका हृदय व्यथा से भर गया। उसके लिए साँस तक लेना कठिन हो गया। चिर-परिचित सभी व्यक्तियों और चीजों से मन ही मन उसने विदा ली। भोजन परसा गया। उसका हृदय बुरी तरह धड़कने लगा। काँपती आवाज म. उसने घोषित किया कि उसे भूख नहीं है, और माता-पिता से शुभ-रात्रि का अभिवादन किया। उन्होंने सदा की भाँति उसका माथा चूमा और उसे आशीर्वाद दिया। उसकी आँख. डबडबा आयीं। अपने शयन

कक्ष म. पाँव रखते ही वह एक आराम कुर्सी म. पड़ गयी और फूट-फूट कर आँसू बहाने लगी। उसकी दासी ने ढारस बँधाने और उसके चेहरे पर प्रसन्नता लाने का प्रयत्न किया। सभी कुछ तैयार था। आधे घण्टे बाद ही माशा को अपने माता-पिता के घर अपने निजी कमरे और अपने शान्त बाल्य जीवन से सदा के लिए विदा हो जाना था, बाहर बर्फ का तूफान सनसना रहा था, हवा चीख-चिल्ला रही थी, खिड़कियों के पट हिल और खड़खड़ा रहे थे, हर चीज आतंकित करती या शोकपूर्ण अशकुन की भाँति मालूम होती थी। शीघ्र ही सन्नाटा छा गया, समूचा घर गहरी नींद म. डूब गया। माशा ने अपने कंधों पर शाल डाला, गर्म लवादा पहना, अपना छोटा सा बक्सा हाथ म. लिया और पिछले दरवाजे से घर से बाहर निकल आयी। उसकी दासी भी उसके पीछे-पीछे दो पोटलियाँ उठाए निकल आयी। दोनों बाग म. पहुँची। बर्फ के तूफान का जोर अभी कम नहीं हुआ था। हवा के थपेड़े जैसे इस युवा गुनहगार को रोकने का प्रयत्न कर रहे थे। बड़े यत्न से वे दोनों बाग के छोर तक पहुँच पायी। वहाँ सड़क पर एक बर्फ गाड़ी उनकी प्रतीक्षा म. खड़ी थी। ठण्ड घोड़ों के पोर-पोर म. समा गयी थी और उनके लिए निश्चल रहना कठिन हो गया था। व्लादीमिर का कोचवान तुन्द-तेज घोड़ों को काबू म. रखने का प्रयत्न कर रहा था बमों के आगे कभी वह इधर लपकता था और कभी उधर। उसने युवा मारिया और उसकी दासी को अपनी-अपनी जगह पर बैठने और उनके बण्डलों तथा गहनों के बक्से को गाड़ी म. रखने म. मदद की, अपने हाथों म. रास को सम्भाला और घोड़े सुदृढ़ डगों से-- नौ-दो ग्यारह हो गये।

अपनी नायिका को उसके भाग्य और कोचवान तेरेश्का की होशियारी के हवाले छोड़ अब हम जरा अपने युवा प्रेमी की ओर मुड़ चल.। व्लादीमिर का सारा दिन यहाँ से वहाँ अपनी गाड़ी पर चक्कर काटते बीता। सुबह वह जाद्रिनों के पादरी के यहाँ गया और उसे काफी कठिनाई और समझाने-बुझाने के बाद अपना काम करने के लिए राजी कर पाया। फिर उसने आस-पास के भूपतियों म. गवाहों की खोज की सबसे पहले वह द्राविन के यहाँ गया। वह घुड़सवार सेना का एक अवकाश प्राप्त छोटा अफसर था। उसकी आयु चालीस वर्ष की थी। वह तुरन्त राजी हो गया। बोला कि इस साहसिक कार्य ने बीते दिनों और हुस्सारों की उखाड़-पछाड़ की याद ताजा कर दी। उसने अनुरोध करके व्लादीमिर को भोजन के लिए रोक लिया और उसे विश्वास दिलाया कि बाकी दो गवाहों को पाने म. जरा भी कठिनाई नहीं होगी। और सचमुच, उन्होंने भोजन अभी समाप्त ही किया था कि बड़ी-बड़ी मूंछोंवाला पटवारी श्मिट वहाँ नमूदार हो गया। वह स्पर पहने था।

उसके साथ जिला पुलिस अफसर का लड़का भी था। लड़के की आयु करीब सोलह वर्ष थी और अभी हाल ही म. वह उहलानों की रेजीमेण्ट म. भर्ती हुआ था। उन्होंने व्लादीमिर के प्रस्ताव से न केवल सहमति ही प्रकट की बल्कि उन्होंने घोषणा की कि वे उसके लिए अपनी जान तक न्योछावर करने के लिए तैयार हैं। व्लादीमिर ने उछाह म. भर कर उन्ह. गले लगाया और सब कुछ तैयारी करने के लिए घर लौट आया।

सूरज छिपे काफी देर हो चुकी थी। उसने अपने विश्वासपात्र कोचवान तेरेश्का को पूरी तरह से समझा-बुझा कर अपनी तीन घोड़ों वाली गाड़ी देकर नेनरादोवो के लिए रवाना कर दिया। साथ ही अपनी एक घोड़े की बर्फ गाड़ी को जोतने का भी आदेश दिया। उसम. सवार होकर वह जाद्रिनो के लिए चल दिया। वह खुद ही उसे हाँक रहा था। मारिया ग्रवीलोव्ना भी दो घण्टे के भीतर, वहाँ पहुँच जाने वाली थी। सड़क जानी-पहचानी थी। वहाँ पहुँचने म. बीस मिनट से ज्यादा नहीं लगने चाहिए थे।

लेकिन गाँव से बाहर निकल व्लादीमिर अभी खुले मैदान म. पहुँचा ही था कि हवा ने जोर पकड़ा और बर्फ का तूफान इतना तेज हो उठा कि कुछ भी दिखाई नहीं देता था। देखते ही देखते सड़क हिमकणों से छा गयी। राह-बाट-- सभी कुछ बर्फ की धुँधली पीली चादर और सफेद हिमकणों के बगुलों म. छिप गया। न आकाश का पता चलता था, न धरती का-- दोनों एकाकार हो गये थे। सड़क से भटक कर वह एक खेत म. जा फँसा। उसने फिर सड़क पर लौटने की कोशिश की, लेकिन बेकार। घोड़ा अन्धकार म. भटक चला। कभी वह बर्फ के ढेर म. धंस जाता, कभी किसी गड्ढ़े म. ठोकर खाता। बर्फ गाड़ी बार बार उलट पुलट हो जाती। व्लादीमिर की समूची शक्ति एक इसी बात पर केन्द्रित थी कि कहीं वह रास्ते से न भटक जाये। लेकिन, लगभग आधा घण्टा बीत जाने पर भी उसे जाद्रिनों के पेड़ों के झुरमुट का कोई चिन्ह नहीं दिखाई दिया। दसेक मिनट और बीत गये, लेकिन झुरमुटों का अभी भी कोई पता नहीं था। व्लादीमिर की बर्फगाड़ी गहरी खाइयों से कटे-फटे खुले मैदान म. से गुजर रही थी। बर्फ का तूफान अभी शान्त नहीं हुआ था, और आकाश बादलों से घिरा था। घोड़ा थक चला था और व्लादीमिर– बावजूद इसके कि यह बार-बार कमर तक बर्फ म. धंस जाता था-- बुरी तरह पसीने म. तर था।

आखिर उसे मालूम हो गया कि वह गलत दिशा म. जा रहा है। उसने घोड़े की रास खींची और रुक कर कुछ सोचने, अपनी याददाश्त को ताजा करने तथा हिसाब लगाने का उसने प्रयास किया। अन्त म. वह इस नतीजे पर पहुँचा कि उसे

दाहिनी ओर मुड़ना चाहिए था। उसने अब ऐसा ही किया। उसके घोड़े म. अब ताकत नहीं थी। घर से निकले एक घंटे से भी ऊपर हो गया था। जाद्रिनो अब अधिक दूर नहीं होना चाहिए था। लेकिन वह आगे, और आगे बढ़ता ही गया मैदान ऐसा था कि उसका कोई ओर-छोर ही नजर नहीं आता था। बर्फ के बगूलों और खाइयों के सिवा और कुछ पल्ले नहीं पड़ रहा था। बर्फ गाड़ी रह-रह कर उलटती थी और रह-रह कर व्लादीमिर उसे सीधी करता था। समय गुजरता जा रहा था। व्लादीमिर को गहरी चिन्ता ने घेर लिया। अन्त म., एक तरफ, उसे कोई काली चीज उभरती नजर आयी। व्लादीमिर ने उसी ओर अपना घोड़ा मोड़ दिया। शुक्र है भगवान का, उसने सोचा, अब मैं अपने ठिकाने के निकट पहुँच गया। उसने झुरमुटों को पार किया, इस आशा से कि वह चिरपरिचित सड़क पर पहुँच जाएगा, या झुरमुट का चक्कर काट कर ठीक उसके पीछे स्थित जाद्रिनो म. प्रवेश करेगा। शीघ्र ही वह पर पहुँच गया और पेड़ों के अन्धकार म. घुसा। जाड़ों के कारण पेड़ों की टहनियाँ नंगी-बुची हो गयी थी। यहाँ हवा का भी उतना जोर नहीं था। सड़क सपाट थी। घोड़े ने फिर हिम्मत बाँधी और व्लादीमिर की चेतनता लौट आयी।

लेकिन चलते-चलते वह हार गया, जाद्रिनो का फिर भी कोई चिन्ह नहीं दिखाई दिया। जंगल का कोई अन्त नहीं था। उसने महसूस किया कि वह किसी अनजान जंगल म. आ पहुँचा है। आशंका से उसका हृदय काँप उठा। खीझ और मुझलाहट से बेसुध उसने घोड़े को चाबुक लगाई। बेजबान जानवर ने दुलकी चाल पकड़ी, लेकिन वह जल्दी ही थक गया और पन्द्रह मिनट बीतते-बीतते-- व्याकुल व्लादीमिर की तमाम कोशिशों के बावजूद वह फिर कदम-कदम चलने लगा। जंगल धीरे-धीरे कम घना होता गया, और व्लादीमिर आखिर उससे बाहर निकला। लेकिन जाद्रिनो का अब भी कुछ पता नहीं था। उसे लगा जैसे और कुछ नहीं तो आधी रात अवश्य बीत गयी होगी। उसके गालों पर आँसू ढुलक आये। उसने घोड़े को चाबुक मारी और अनिर्दिष्ट, चाहे जो भी हो, चल दिया। तूफान अब शान्त हो गया था, बादल छितरा गये थे, सामने फैले हुए मैदान पर बर्फ की चादर हिलोर. लेती प्रतीत होती थी। रात अव काफी साफ थी। थोड़ी ही दूरी पर उसे एक गाँव दिखाई दिया। गाँव क्या था, पाँच-सात झोंपड़ियों का एक झुरमुट था। व्लादीमिर उसी ओर चल दिया। वहाँ पहुँच, पहली झोंपड़ी के सामने ही, वह अपनी बर्फ गाड़ी से उतरा और लपक कर उसने खिड़की को खटखटाया। कुछ मिनट बाद लकड़ी का पट खुला और एक वृद्ध आदमी की सफेद दाढ़ी बाहर झाँकने लगी। उसने पूछा-- "क्या चाहते हो?"

"क्या यह जगह जाद्रिनों से बहुत दूर है?"

"क्या जाद्रिनो यहाँ से बहुत दूर है?"

'हाँ, हाँ, क्या वह यहाँ से बहुत दूर है?"

"नहीं, बहुत दूर नहीं। बस, आठेक मील होगा।"

यह सुनकर व्लादीमिर ने अपने बालों को नोच लिया और उस आदमी की भाँति एकदम स्थिर खड़ा हो गया जिसे अभी-अभी उसकी मौत का हुक्म सुनाया गया हो।

"लेकिन तुम इस समय आ कहाँ से रहे हो?" वृद्ध ने पूछा।

व्लादीमिर म. इतनी भी ताकत नहीं रह गयी थी कि वृद्ध के सवालों का जवाब देता। उसने वृद्ध से कहा--

"बाबा, जाद्रिनो जाने के लिए क्या कहीं से एक घोड़ा ला दोगे?"

"जैसे हमारे पास यहाँ घोड़े पड़े हैं, वाह!" वृद्ध किसान ने जवाब दिया।

"तो क्या कोई आदमी मिल सकेगा, जो मुझे रास्ता दिखा सके। जो वह कहेगा, मैं मजदूरी दे दूँगा।"

"जरा ठहरो," खिड़की का पल्ला बन्द करते हुए वृद्ध ने कहा- "मैं अपने बेटे को साथ किये देता हूँ। वह तुम्ह. रास्ता दिखा देगा।" व्लादीमिर ठहर गया। एक मिनट भी न बीता होगा कि उसने फिर खिड़की को सटखटाया। खिड़की का पल्ला उठा, दाढ़ी फिर बाहर निकली।

"क्यों क्या चाहिए?"

"तुम्हारा लड़का कहाँ है?"

"अभी आता है। जरा जूते पहन रहा है। अगर ठंड लग रही हो तो भीतर आकर अपने को कुछ गरमा लो।"

"धन्यवाद, इसकी जरूरत नहीं जरा अपने लड़के को जल्दी भेज दो।"

दरवाजे के चरचराने की आवाज आयी। लाठी लिए एक युवक बाहर निकला और आगे-आगे चलने लगा। कभी वह सड़क की ओर इशारा करता और कभी रुक कर उसे खोजने लगता। बर्फ के भारी बगूलों ने सड़क को आँखों से ओझल कर दिया था।

"अब क्या वक्त हुआ होगा?" व्लादीमिर ने पूछा।

"अरे, अब शीघ्र ही उजाला हो जाएगा," युवक ने जवाब दिया। इसके बाद

फिर कोई शब्द व्लादीमिर के मुँह से नहीं निकला।

जब वे जाद्रिनो पहुँचे तब मुर्गे बाँग दे रहे थे और दिन चढ़ चुका था। गिरजे का ताला बन्द था। व्लादीमिर ने अपने पथ-प्रदर्शक को पैसे दिये और पादरी के घर पहुँचा। अहाते म. तीन घोड़ों वाली गाड़ी का कोई चिन्ह नहीं था। जाने उसके भाग्य म. अब और क्या सुनना बदा था!

लेकिन अब हम नेनरादोवो के जमीनदार की ओर चल. और देख. कि वहाँ क्या हो रहा है।

कुछ भी तो नहीं।

वृद्ध दम्पत्ति सोकर उठे और अपने बैठकखाने म. पहुँचे। गव्रीला गव्रीलोविच अपनी रातवाली टोपी और फलालैन की जाकेट और प्रास्कोव्या पेत्रोव्ना रुईभरा लबादा पहने थी। समोवर मेज पर आ गयी और गव्रीला गव्रीलोविच ने एक दासी को यह देखने के लिए भेजा कि मारिया गव्रीलोव्ना की तबीयत अब कैसी है, रात को उसे नींद आयी या नहीं। लड़की वापस लौट आयी और उसने बताया कि बिटिया रानी की रात बुरी तरह बीती, लेकिन अब तबीयत कुछ हल्की है, और वह शीघ्र ही बैठकखाने म. आ रही है। तभी दरवाजा खुला, मारिया गव्रीलोव्ना ने भीतर प्रवेश किया और अपने माता-पिता को प्रणाम किया।

"अब तुम्हारा सिरदर्द कैसा है, माशा?" गव्रीला गव्रीलोविच ने पूछा।

"अब तो कुछ ठीक हूँ, पापा," माशा ने जवाब दिया।

"अँगीठी के पास बैठने से तुम्हारा सिर दर्द करने लगा होगा, माशा," पास्कोव्या पेत्रोव्ना ने कहा।

"शायद ऐसा ही हो, माँ," माशा ने जवाब दिया।

दिन म. और कोई घटना नहीं घटी। लेकिन रात को माशा बीमार पड़ गयी। पास के नगर से डाक्टर बुलाया गया। यह अगले दिन साँझ के समय आया। उसने देखा कि रोगी बेसुध पड़ी बड़बड़ा रही है। फिर अत्यन्त तेज बुखार ने अपना आसन जमाया और दुःख की मारी लड़की दो सप्ताह तक मौत और जिन्दगी के बीच भूलती रही।

घर से भागने की योजना का किसी को कुछ पता नहीं था। वे पत्र जो पिछली साँझ लिखे गये थे, जला दिए गये। माशा की दासी ने अपना मुँह बन्द रखा और किसी से एक शब्द तक नहीं कहा। मालिक के गुस्से से उसकी रूह काँपती

थी। पादरी, घुड़सवार सेना का अवकाश प्राप्त अफ्सर, बड़ी-बड़ी मूछों वाला पटवारी और युवा उहलान-- सभी अपने-अपने कारणों से चुप रहे। तेरेश्का कोचवान ने नशे म. धुत्त होने की हालत म. भी अपनी जबान से कभी फालतू शब्द नहीं निकाला। सो वह षडयंत्र-- उसम. आधे दरजन से अधिक लोगों का हाथ होने पर भी-- गुप्त रहा। लेकिन मारिया ग्रवीलोव्ना ने, निरन्तर सरसाम की हालत म. खुद सारा भेद उगल दिया। गनीमत यह रही कि उसके मुँह से निकले शब्द इतने अनगढ़ होते थे कि उसकी माँ जो एक घड़ी के लिए भी उसके बिस्तर से अलग नहीं होती थी, केवल इतना ही समझ पायी कि उसकी लड़की व्लादीमिर निकोलायेविन के प्रेमपाश म. बुरी तरह फँसी और सम्भवतः यह प्रेम ही उसकी बीमारी का कारण है। उसने अपने पति और दो-चार पड़ोसियों से सलाह ली और अन्त म. सब का यही मत था कि मारिया ग्रवीलोव्ना के भाग्य म. शायद ऐसा ही बदा है, यह कि भाग्य से भला कोई कैसे बच सकता है, फिर गरीब होना कोई जुर्म नहीं है, और यह कि धन की थैलियों से क्या कभी पूरा पड़ा है-- जब कि आदमी ढंग का न हो, आदि-आदि। अपने कृत्यों के समर्थन म. जब कुछ कहते नहीं बनता तो इस तरह की लम्बी-चौड़ी बात. अत्यन्त कारगर सिद्ध होती हैं!

इस बीच मारिया धीरे-धीरे अच्छी होने लगी। व्लादीमिर जाने कहाँ ओझल हो गया था। गव्रीला गव्रीलोविच के यहाँ वह एक मुद्दत से दिखाई नहीं दिया था। जिस रुखाई के साथ उसका यहाँ स्वागत होता था, उससे शायद वह इतना डर गया था कि उसने इधर आने का साहस नहीं किया। आखिर उसे बुलवा भेजा गया, और उसे उसके अप्रत्याशित सौभाग्य से मारिया के साथ उसके विवाह की स्वीकृति से सूचित कर दिया गया। लेकिन नेनारादोवो के मालिकों के अचरज की सीमा न रही जब उनके निमंत्रण के जवाब म. उस युवक ने नीमपागलों की सी चिट्ठी लिख भेजी। उसने उन्ह. यकीन दिलाया था कि अब वह कभी उनके घर म. पाँव रखने की धृष्टता नहीं करेगा, उस जैसा अभागा और इस योग्य नहीं कि वे उससे रिश्ता कर., और यह कि मृत्यु ही अब उसकी एक मात्र आशा है। इसके कुछ दिन बाद मालूम हुआ कि वह फिर फौज म. चला गया है। यह सन् 1812 की बात है।

बीमारी के बाद मारिया अब स्वस्थ हो रही थी। काफी दिनों तक किसी की हिम्मत नहीं हुई कि उसे इस घटना के बारे म. बतावे। खुद उसने भी कभी व्लादीमिर का जिक्र नहीं किया। कुछ मास बाद, वीरता के लिए पदक पाने वाले लोगों की सूची म. उसका नाम देखकर, और यह जान कर कि बोरोदिनो के युद्ध म. वह घातक रूप म. घायल हुआ है, उसे गश आ गया और सब आशंकित हो उठे

कि कहीं उसे बुखार फिर न दबोच ले। लेकिन, भगवान की दया से बेहोशी का यह दौरा कोई गड़बड़ किए बिना ही उतर गया।

इसके बाद शीघ्र ही उसे एक और शोक सहना पड़ा, --उसके पिता की मृत्यु हो गयी और वह समूची जागीर की उत्तराधिकारिणी बनी। लेकिन यह विरासत उसके हृदय को ढारस नहीं दे सकी। भाग्य की मारी प्रास्कोव्या पेत्रोव्ना के दुःख म. सच्चे हृदय से उसने हाथ बँटाया और प्रतिज्ञा की कि वह कभी उसका साथ नहीं छोड़ेगी। नेनरादोवो से-- जिसके साथ अनेक दुःखद स्मृतियाँ सम्बद्ध थीं-- उन्होंने विदा ली और 'ऐक्स' गाँव म. अपनी जागीर म. जाकर रहने लगीं।

सुन्दर और सम्पत्तिशाली मालकिन के प्रेमियों की यहाँ भी कोई कमी नहीं थी। वे उसके इर्द-गिर्द मण्डराते, लेकिन वह किसी को भूल कर भी कोई शह या बढ़ावा न देती। जीवन-संगी चुनने के लिए कभी-कभी उसकी माँ उसे समझाती, लेकिन मारिया गव्रीलोव्ना केवल सिर हिला कर सोच म. डूब जाती। व्लादीमिर अब इस दुनिया म. नहीं था। फ्र.च सेना के नगर प्रवेश से कुछ ही पहले मास्को म. उसका देहान्त हो गया था। मारिया उसकी स्मृति को अपने हृदय म. संजोये थी, कम से कम वह हर उस चीज को सम्भाल कर रखे थी जिसके साथ उसकी याद सम्बद्ध थी।

वे पुस्तक. जिन्ह. उसने कभी पढ़ा था, उसके बनाए हुए चित्र, संगीत और वे कविताएं जो उसने अपने हाथ से मारिया के लिए उतारी थीं। पड़ोसियों को जब यह मालूम हुआ तो वे उसके इस धैर्य और स्थिरता पर चकित रह गये और बड़ी उत्सुकता से यह प्रतीक्षा करने लगे कि देख. वह कौन भाग्यवान है जो इस सतवन्ती की शोकपूर्ण लगन पर अन्तिम रूप से विजय प्राप्त करता है।

इस बीच पूर्ण विजय के साथ युद्ध का अन्त हो गया और हमारी सेनाएं विदेशी क्षेत्रों से लौटने लगीं। उनका स्वागत करने के लिए लोग अपने घरों से दौड़े आते। बैण्ड शत्रु से छीनी हुई धुनों को बजाते-- हेनरी चतुर्थ जिन्दाबाद, तिरो ली वाल्ट्ज और ला जाकोन्द की धुन। अफसर जो लड़ाई म. भर्ती होने के समय निरे छोकरे थे, युद्ध की भट्टी म. तप-निखर कर प्रौढ़ होकर अनेक पदकों सम्मानों से विभूषित वापिस लौटे। सैनिक खुशी से चहकते आपस म. बात. करते, और उनके वार्तालाप म. फ्र.च और जर्मन शब्दों का छींटा होता। अविस्मरणीय दिन थे वे-- ऐसे दिन जो उछाह और गौरव-गरिमा से ओतप्रोत थे। जन्म भूमि-- इस एक शब्द के उच्चारण मात्र से रूसियों का हृदय आकाश चूमने लगता था। बिछड़े हुओं के मिलन-अश्रुओं म. माधुर्य का अन्त नहीं था। राष्ट्रीय गौरव और जार के लिए प्रेम की भावना एकाकार हो देश के एक छोर से दूसरे छोर तक छलछला रही थी। जार

के लिए कितना अद्भुत क्षण था यह!

और स्त्रियाँ-- हमारे रूस की महिलाएँ-- उनकी कुछ न पूछिए। उन दिनों एक अद्वितीय आभा से वे दमकती थीं। उनकी उदासीनता और शुष्कता जो उनके स्वभाव का एक अंग है, न मालूम उस वक्त कहाँ विलीन हो गयी थी। यह असम्भव था कि उनका मादक उछाह, उनका उल्लास, अपने साथ बहा कर न ले जाये। युद्ध से लौटे हुए विजेताओं पर उनकी नजर पड़ती और--

"गूंज उठती आवाज उनकी-- हुर्रा!

और उछल जाती टोपियाँ उनकी हवा म.!"[8]

उन दिनों का कौन ऐसा अफसर है जो यह कह सके कि अपने श्रेष्ठतम, और सर्वाधिक मूल्यवान, उपहार के लिए वह किसी न किसी रूसी स्त्री का ऋणी नहीं है?

उस उल्लासभरे काल म. मारिया गव्रीलोवना अपनी माँ के साथ 'ऐक्स' गबर्निया म. रहती थी। उसे यह देखने का अवसर नहीं मिला कि सैनिकों के पुनरागमन का इन दो राज नगरों ने कितने समारोह के साथ स्वागत किया। लेकिन आम उछाह की यह लहर गाँवों और कस्बों म. शायद और भी जोरों से हिलोर. ले रही थी। इन जगहों म. किसी अफसर का आगमन विजयी अभियान सिद्ध होता और फ्राक-कोट पहने प्रेमियों को मुँह छिपाने की जगह न मिलती थी।

यह हम पहले ही बता चुके हैं कि अपनी सर्दमोहरी के बावजूद मारिया ग्रवीलोव्ना, पहले की भाँति, प्रेमियों से घिरी रहती थी। लेकिन हुस्सार सेना के एक घायल कर्नल ने इन सबका रंग फीका कर दिया। इस कर्नल का नाम बुरमिन था। वक्ष पर सन्त जार्ज का पदक! और, स्थानिक युवतियों के शब्दों म., आकर्षक पीतवर्ण चेहरे वाले इस युवक ने मानो मार कर लिया। आयु उसकी लगभग छब्बीस वर्ष होगी। वह छुट्टियाँ लेकर अपनी जागीर म. आया हुआ था। यह जागीर मारिया गव्रीलोव्ना की मिल्कियत के बिल्कुल नजदीक थी। मारिया गव्रीलोव्ना ने भी उसके प्रति अभिरुचि प्रकट की। उसे देख कर उसकी चिर उदासी गायब हो जाती थी और उसके चेहरे पर एक प्रकार की चमक सी दौड़ जाती थी। उसके प्रति अपने व्यवहार म. हालाँकि वह कोई खास हाव-भाव नहीं प्रकट करती थी, फिर भी अगर कोई कवि उसे देखता तो कह उठता--

प्रेम नहीं तो फिर क्या है यह?...

बुरमिन निश्चय ही एक अत्यन्त आकर्षक युवक था। उसका रंग-ढंग ठीक वैसा ही था जैसा कि स्त्रियाँ पसन्द करती हैं-- बहुत ही सलीकेदार, हर बात पर

ध्यान देनेवाला, बनावट से एकदम मुक्त और हर चीज के प्रति एक अजीब लापरवाही का खिल्ली उड़ाने का भाव लिये। मारिया ग्रवीलोव्ना के साथ वह बहुत ही उन्मुक्त और सहज भाव से पेश आता। जो कुछ भी वह कहती या करती, वह सब उसकी कल्पना और आँखों म. रम जाता। वह बहुत ही शान्त और चुप नजर आता। लेकिन लोगों म. यह प्रसिद्ध था कि किसी जमाने म. वह बहुत ही उपद्रवी रहा था। जो हो, इससे मारिया गव्रीलोव्ना की आँखों म. उसकी कद्र कुछ कम नहीं हुई जो (अधिकांश युवा स्त्रियों की भाँति) साहस तथा भावावेश से प्रेरित उत्पातों को एक हल्की हँसी के साथ माफ कर देती हैं।

पर जिस चीज ने मारिया गव्रीलोवना की कल्पना को सबसे अधिक उकसाया और उसके कुतूहल को जगाया वह इस हुस्सार युवक का संकोची स्वभाव था, हालाँकि उसके और गुण-- उसका शील-- व्यवहार, लुभावना वार्तालाप, जखमी बाँह और पीतवर्ण चेहरा-- यह सब भी कम आकर्षक न थे। मारिया गव्रीलोव्ना को भी यह भास हो गया कि उसने युवक के मन को प्रभावित किया है, और उधर युवक भी अनुभवी और बुद्धिमान था, फौरन ही समझ गया था, कि मारिया गव्रीलोव्ना के व्यवहार म. उसके प्रति कोई उपेक्षा या उदासीनता नहीं-- तो फिर क्यों उसने मारिया गव्रीलोव्ना के सामने अभी तक घुटने टेक कर अपना प्रेम प्रकट नहीं किया? उसे किस चीज ने रोक रखा है? संकोच जो सच्चे प्रेम का अंग है? या गर्व? या वह चातुर्य जो एक अनुभवी रसिक पुरुष म. होता है। कोशिश करने पर भी वह इस रहस्य को समझ न पाती, और वह उसे एक पहेली मालूम होता। अन्त म. बहुत कुछ सोचने के बाद, वह इस नतीजे पर पहुँची कि लज्जाशीलता ही उसके इस संकोच का एकमात्र कारण है, और उसने तय किया कि वह अब और अधिक लगन के साथ उसे बढ़ावा देगी, और मौका पड़ने पर अपनी कोमल भावनाओं का प्रदर्शन करने से भी चूकेगी नहीं। आखिर उसने एक ऐसे प्रसंग का आविष्कार किया जो एकदम अप्रत्याशित था, और बेचौनी के साथ उस रोमाण्टिक घड़ी की प्रतीक्षा करने लगी जबकि वह अपने प्रेम की घोषणा करेगा। रहस्यात्मकता, चाहे वह कैसी भी हो नारीहृदय के लिए हमेशा दुस्सह होती है। मारिया की सैनिक मोर्चेबन्दी ने सफलता प्राप्त की-- कम से कम इतना तो हुआ ही कि बुरमिन रह-रह कर बेसुध-सा हो जाता और उसकी काली आँख. कुछ इतने मुग्ध भाव से मारिया गव्रीलोवना के चेहरे पर अटक जाती कि लगता, वह निर्णयकारी क्षण अब दूर नहीं है। पड़ोसी चर्चा करने लगे कि इस मामले को तो बस अब तय ही समझो। नेक दिल प्रास्कोव्या पेत्रोव्ना भी प्रसन्न थी कि आखिर

उसकी लड़की को अपने उपयुक्त एक योग्य वर मिल गया।

मारिया की माँ एक दिन अपने बैठकखाने म. बैठी ग्राण्डपेशन्स खेल से मन बहलाने के लिए मेज पर ताश के पत्ते बिछा रही थी। बुरमिन ने प्रवेश किया और पूछा-- "मारिया गव्रीलोव्ना कहाँ है?"

"बाग म. है," वृद्धा ने जवाब दिया-- "वहीं चले जाओ और उसे लिवा लाओ म. तुम दोनों की प्रतीक्षा करूँगी।"

बुरमिन बाहर चला गया और वृद्धा ने क्रास का चिन्ह बनाते हुए, सोचा--

"ईश्वर ने चाहा तो आज सब कुछ तय हो जाएगा!"

बुरमिन ने देखा कि मारिया तालाब के किनारे एक वेद-वृक्ष के नीचे बैठी हुई कोई पुस्तक पढ़ने म. लीन है। वह सफेद बुर्राक कपड़े पहने थी। ऐसा मालूम होता था जैसे किसी उपन्यास की नायिका हो। साधारण अभिवादन के बाद मारिया गव्रीलोव्ना ने जान-बूझ कर और आगे बातचीत नहीं की। इससे दोनों के हृदय की व्यग्रता और भी गहरी हो उठी, जिसे केवल आकस्मिक तथा सुनिश्चित प्रेम घोषणा से ही शान्त किया जा सकता था। और हुआ भी यह कि बुरमिन ने, जो अपनी स्थिति का अटपटापन अनुभव कर रहा था, उसे सूचित किया कि वह बहुत दिनों से किसी ऐसे मौके की खोज म. था जबकि वह अपना हृदय उसके सामने खोल कर रख सके और उसने अनुरोध किया कि क्षण भर के लिए ध्यान देकर वह जरा उसकी बात सुन। मारिया ग्रवीलोव्ना ने अपनी किताब बन्द कर दी, पलकों को नीचे झुका लिया और स्वीकृति-सूचक मुद्रा म. बैठ गयी।

"मैं तुम से प्यार करता हूँ", बुरमिन ने कहा-- "सम्पूर्ण हृदय से मैं तुम पर न्योछावर हूँ।" (मारिया गव्रीलोव्ना के गाल लाल हो उठे और उसने अपना सिर और भी नीचे झुका लिया) "पर यह मेरा अल्हड़पन था, जो मुझे नित्य तुम्ह. देखने और तुम्हारी लुभावनी बातों को सुनने के लिये खींच लाता..." (मारिया गव्रीलोव्ना को सन्त प्रियुक्स के प्रथम पत्र की याद हो आयी) "लेकिन बात इतनी गहरी पैठ गयी है कि मैं अपने भाग्य का प्रतिरोध नहीं कर सकता। तुम्हारी याद, तुम्हारी अत्यन्त मधुर और अनुपम छवि, मुझे जीवन भर यातना और खुशी प्रदान करेगी। लेकिन एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी का बोझ मेरे सिर के ऊपर है। एक ऐसे भयानक भेद को बात मुझे तुम से कहनी है जो हम दोनों के बीच कभी न लाँघी जा सकने वाली बाधा का निर्माण करेगी..."

मारिया व्यग्र हो उठी। बीच म. ही बात काट कर बोली--

"सो तो है ही। एक क्षण के लिए भी वह बाधा दूर नहीं हुई... मैं कभी तुम्हारी पत्नी नहीं बन सकती थी..."

"मैं जानता हूँ", उसने मृदु आवाज म. जवाब दिया– "मैं जानता हूँ कि तुम किसी दूसरे व्यक्ति से प्यार करती थीं, लेकिन मृत्यु, और शोक से पूर्ण तीन वर्ष... पर, प्यारी मारिया गव्रीलोव्ना, तुम म. हृदय है, दया है, मुझे अपने जीवन के एक मात्र सुख से वंचित न करो... यह विचार कि तुम मुझे सुखी बनाने के लिए तैयार हो जाती अगर... मैं बिनती करता हूँ, तुम कुछ न कहो, तुम चुपचाप मेरी बात सुनो। मेरी यंत्रणा को और न बढ़ाओ। मैं जानता हूँ, मैं अनुभव करता हूँ, कि तुम मेरी हो सकती थीं, लेकिन... ओह, मेरा दुर्भाग्य... मैं विवाहित हूँ!"

मारिया ने चकित हो उसकी ओर देखा।

"मैं विवाहित हूँ," बुरमिन कहता गया-- "मैं पिछले चार साल से विवाहित हूँ और मैं इतना तक नहीं जानता कि मेरी पत्नी कौन है, या कहाँ है, या यह कि उससे कभी भ.ट होना मेरे भाग्य म. बदा भी है अथवा नहीं।"

"यह क्या कह रहे हो?" मारिया के मुँह से बरबस निकला- "कितनी अनहोनी बात है! लेकिन कहते जाओ, रुको नहीं, मैं अपनी बात बाद म. कहूँगी... म. बिनती करती हूँ, रुको नहीं।"

"सन् 1812 के शुरू की बात है," बुरमिन ने कहा- "विलना म. हमारी सेना तैनात थी। मैं वहीं जा रहा था और जल्दी से जल्दी मुझे वहाँ पहुँचना था। रास्ते म. साँझ तब गहरी हो आयी थी-- एक चौकी पर पहुँचते ही मैंने तुरत नये, ताजादम, घोड़े जोतने का आदेश दिया। तभी एक दम अचानक, बर्फ का भयानक तूफान उठ खड़ा हुआ। चौकी के रक्षक और कोचवानों ने सलाह दी कि अभी न जाइए, तूफान को रुक जाने दीजिए। मैंने उनकी बात सुनी, लेकिन एक अजीब बेचैनी ने मुझे घेर लिया। ऐसा मालूम होता था जैसे आगे बढ़ने के लिए भीतर से मुझे कोई कोंच रहा हो। तूफान का जोर अभी वैसा ही बना था, वह कम होने म. नहीं आ रहा था। आखिर मुझसे नहीं रहा गया, घोड़ों को जोतने का मैंने फिर आदेश दिया और तूफान की परवाह न कर रवाना हो गया। कोचवान ने अपनी सूझ लड़ायी और नदी के किनारे-किनारे हो लिया। इससे, और भी कुछ नहीं तो, तीन एक मील की बचत हो जाएगी। नदी-तट बर्फ म. खो गया था और कोचवान उस मोड़ से चूक गया जो हम. सड़क पर पहुँचा देता। नतीजा यह हुआ कि हम एक अनजाने क्षेत्र म. जा पहुँचे। तूफान के थमने के कोई आसार नजर नहीं

आ रहे थे। सहसा मुझ एक रोशनी दिखाई दी। मैंने कोचवान से उसी दिशा म. घोड़ा बढ़ाने के लिए कहा। हम एक गाँव म. पहुँचे। लकड़ी के गिरजाघर म. बत्ती जल रही थी। दरवाजा खुला था। अहाते म. अनेक बर्फ-गाड़ियाँ खड़ी थीं और लोग पोर्च के भीतर आ-जा रहे थे। "इधर! इस ओर!" एक साथ कई आवाजों ने चिल्लाकर कहा। मैंने कोचवान से गिरजे की ओर चलने के लिए कहा। "कहाँ अटक गये थे तुम?" किसी ने मुझसे कहा-- "दुलहिन बेसुध पड़ी है। पादरी की समझ म. नहीं आता कि क्या करे। हम सब भी अब घर लौटने की सोच रहे थे। चलो, जल्दी करो!" मैंने मुँह से एक शब्द भी नहीं कहा और छलांग लगा कर बर्फ-गाड़ी से नीचे आ गया। गिरजे म. मैंने पाँव रखा। इक्की-दुक्की मोमबत्तियाँ धुँधली रोशनी कर रही थी। एक कोने म., जहाँ अन्धेरा था, ब.च पर एक लड़की बैठी थी और एक दूसरी लड़की उसकी कनपटियाँ सहला रही थी। "शुक्र है भगवान का," दूसरी लड़की ने कहा- "कि आखिर तुम आ गये! तुमने तो इसकी जान ही ले ली होंती!" एक बूढ़ा पादरी मेरे निकट खिसक आया। बोला- "तो शुरू कर. न?" अनायास ही, खोये से भाव से, मैंने जवाब दिया- "हाँ, पिता, शुरू कीजिए!" लड़की को सहारा देकर खड़ा किया गया। सच, वह मुझे बहुत सुन्दर मालूम हुई... उफ कितनी अकथनीय और अक्षम्य हरकत थी वह... मैं वेदी के सामने उसकी बगल म. जा खड़ा हुआ। पादरी जल्दी म. था। तीन पुरुष और एक दासी लड़की को सम्भाले रखने म. इतने व्यस्त थे कि अन्य किसी बात की ओर ध्यान देना उनके लिए सम्भव नहीं था। हम दोनों पति पत्नी के रूप म. घोषित किये गये। लोगों ने कहा- "चुम्बन लो।" मेरी पत्नी ने अपना विवर्ण चेहरा मेरी ओर मोड़ा मैं उसका मुँह चूमने ही वाला था कि वह चीख उठी- "अरे, यह तो वह नहीं है! यह वह नहीं है!" और बेसुध धरती पर गिर पड़ी। साक्षियों ने पैनी नजरों से मुझे देखा। मैं मुड़ा, बिना किसी रोक-टोक के गिरजे से बाहर आया, अपनी बर्फ-गाड़ी म. लपक कर बैठा और चिल्लाकर कोचवान को आदेश दिया- "बढ़ चलो!"

"हाय भगवान!" मारिया गव्रीलोव्ना के मुँह से निकला। फिर सम्भल कर उसने पूछा- "और तुम को कुछ पता नहीं कि तुम्हारी उस अभागी पत्नी का क्या हुआ?"

"नहीं," बुरमिन ने जवाब दिया- "मैं उस गाँव का नाम तक नहीं जानता जहाँ मेरा विवाह हुआ था। न ही मुझे उस चौकी का कुछ ध्यान है जहाँ से कि मैं चला था। मेरी इस निन्दनीय हरकत का-- जिसे मैं एक खिलवाड़ समझता था उस समय मुझ पर इतना कम असर था कि गिरजे के पीछे छूटते ही मेरी आँख. झपक

गयी और अगली सुबह तीसरी चौकी पर पहुँचने तक, मैं सोता रहा। वह नौकर जो मेरे साथ था, युद्ध के दौरान म. मारा गया। सो मुझे अब कतई आशा नहीं है कि कभी उस युवती का पता लगा सकूँगा जिसके साथ मैंने इतना निर्मम मजाक किया था और जिसका उतना ही निर्ममतापूर्ण भुगतान मुझे अब करना पड़ रहा है।"

"हे भगवान," मारिया गव्रीलोव्ना ने कहा और उसकी आस्तीन से लिपटती हुई बोली-- "तो तुम थे वह! और तुम मुझे पहचान तक न सके!"

बुरमिन का चेहरा सफेद पड़ गया... और वह उसके पाँवों पर गिर पड़ा।

ताबूतसाज

हर जगह कफन ही कफन नजर आते हैं,
मानों इस वृद्ध जगत के सफेद बाल हों।
देरझाविन[9]

ताबूतसाज आद्रियान प्रोखोरोब के घरेलू साज-सामान का आखिरी हिस्सा भी गाड़ी पर लद गया और गाड़ी में जुते मरियल घोड़ों की जोड़ी ने चौथी बार बस्मान्नाया गली से निकीत्स्काया गली तक का चक्कर लगाया जहाँ ताबूतसाज अपने समूचे घरबार के साथ जा बसा था। दूकान म. ताला डाल कर उसने दरवाजे पर एक तख्ती जड़ दी कि यह घर बिक्री या किराये के लिए खाली है, और अपने नये निवास स्थान की ओर पैदल ही चल पड़ा। लेकिन जब वह उस नये घर की पीली दीवारों के निकट पहुँचा, जिसे खरीदने के लिए कितनी मुद्दत से उसके मन म. चाह थी, और जिसे अब वह खासी रकम देकर खरीद पाया था, तो वह यह जान कर हैरान रह गया कि अब उसके दिल म. कोई उमंग या खुशी नहीं है। अनजानी दहलीज लाँघ कर नयी रिहाइश म. पाँव रखते समय, जहाँ अभी तक सब कुछ अस्तव्यस्त और उलटा-पुलटा था, उस जर्जर दड़बे के लिए उसके मुँह से एक आह निकल गयी जिसे छोड़कर वह आया था। अठारह साल उसने वहाँ बिताये थे, और व्यवस्था इतनी सख्त थी कि एक सींक भी इधर-से-उधर नहीं हो सकती थी। लेकिन यहाँ सभी कुछ अस्तव्यस्त था। उसने अपनी दोनों लड़कियों और घर की नौकरानी को सुस्त कह गया-- देवमूर्ति का स्थान, चीनी के बरतनों की आलमारी, मेज, सोफे और पलंग-- ये सब पिछले कमरे के विभिन्न कोनों म. अपनी-अपनी जगह पर, जमा दिये गये। घर के मालिक का सामान-सभी रंगों और माप के ताबूत, मातमी लबादों-टोपियों से भरी अलमारियाँ,

और मशाल., रसोई और बैठक म. जँचा दी गयी। बाहर दरवाजे के ऊपर एक साइनबोर्ड लटका दिया गया जिसपर उलटी मशाल हाथ म. लिए हृष्ट-पुष्ट कामदेव की तस्वीर बनी थी और उसके नीचे लिखा था-- "सादे और रंगीन ताबूत यहाँ बेचे और तैयार किये जाते हैं, किराये पर दिये जाते हैं, और पुराने ताबूतों की मरम्मत भी की जाती है।"

उसकी लड़कियाँ अपने कमरे म. आराम करने चली गयीं और आद्रियान ने अपनी नयी रिहाइश का मुआयना करने के बाद, खिड़की के पास बैठते हुए समोवर गर्म करने का आदेश दिया।

जानकार पाठकों से यह छिपा नहीं है कि शेक्सपीयर और सर वाल्टर स्काट दोनों ने ही मैयत का सामान बेचने और कब्र खोदने वालों को खुशमिजाज और बातूनी चित्रित किया है। यह इसलिए कि उनके धन्धे और स्वभाव म. भिन्नता देखकर हमारे दिमागों को ज्यादा प्रभावित किया जा सके। जो हो, सत्य के कायल होने के नाते हम उनका अनुकरण नहीं कर सकते, और हम. यह कहना पड़ता है कि हमारे ताबूतसाज का स्वभाव उसके मातमी धन्धे के साथ पूर्णतया मेल खाता था। आद्रियान प्रोखोरोव चुप्पू और मोहर्रमी सूरत वाला आदमी था। वह विरले ही अपनी खामोशी तोड़ता था, और सो भी उस समय जब वह अपनी लड़कियों को निठल्लों की भाँति खिड़की से बाहर झाँकते और राह चलतों पर नजर. डालते देखता, या उस समय जब वह अपने हाथ की बनी चीजों के लिए उन अभागों से (या भाग्यशालियों से मौके के अनुसार जैसा भी हो) कस कर दाम माँगता था जिन्ह. उन चीजों की जरूरत आ पड़ती थी। सो आद्रियान, चाय का सातवाँ प्याला सामने रखे, खिड़की से लगा बैठा था और सदा की भाँति अपने मोहर्रमी खयालों म. डूबा हुआ था। उसे उस मूसलाधार वारिश की याद हो आयी जो अभी पिछले सप्ताह, ऐन उस समय पड़नी शुरू हो गयी थी जब कि अवकाश प्राप्त ब्रिगेडियर की अर्थी का जलसा चुंगी-दरवाजे म. से गुजर रहा था। नतीजा यह हुआ था कि कितने ही मातमी चोगों म. सिकुड़ने पड़ गयीं, कितने ही मातमी टोपों के किनारे बैठ गये थे। उसके मातमी कपड़ों के प्राचीन स्टाक की हालत दयनीय थी, और इसके लिये भारी रकम खर्च करने की जरूरत थी। उसे उम्मीद थी कि सौदागर की विधवा पत्नी त्र्यूखिना के मरने पर सारा घाटा पूरा हो जायेगा। वह बूढ़ी हो चुकी थी, और पूरे एक साल से कब्र म. पाँव लटकाये अब-मरूँ अब-मरूँ कर रही थी। लेकिन त्र्यूखिना आखिरी घड़ियाँ गिन रही थी राजगूल्याई गली म. और प्रोख़ोरोव को डर था कि उसके उत्तराधिकारी-- बावजूद इसके कि वे उसे वचन दे चुके हैं,

उसे इतनी दूर से बुलाने का कष्ट नहीं कर.गे, और पास-पड़ोस के किसी ठेकेदार से सब कुछ तय कर ल.गे।

वह इन्हीं सब विचारों म. डूबा हुआ था कि यकायक-- मानो भगवान ने उसकी पुकार सुन ली हो-- बाहर के दरवाजे को किसी ने तीन बार खटखटाया। ताबूतसाज के विचारों का ताँता टूट गया। वह चौंक कर चिल्लाया "कौन है?"

तभी दरवाजा खुला और एक आदमी, शक्ल-सूरत से जिसे तुरन्त पहचाना जा सकता था कि यह कोई जर्मन दस्तकार है, भीतर कमरे म. चला आया और ताबूतसाज के निकट आकर प्रसन्न मुद्रा में खड़ा हो गया।

"मुझे माफ करना, पड़ोसी महोदय," टूटी-फूटी रूसी भाषा म. उसने कुछ इतने अटपटे अन्दाज से बोलना शुरू किया कि उसकी याद कर आज भी हँसी रोके नहीं रुकती-- "मुझे माफ करना अगर मेरे आने से आपके काम म. कोई बाधा हुई हो, लेकिन आपसे जान-पहचान करने के लिए मैं बड़ा उत्सुक हूँ। मैं मोची हूँ, होत्तल्येब शूल्त्ज मेरा नाम है, और ठीक सड़क के उस पार सामनेवाले उस छोटे से घर म. रहता हूँ जिसे आप अपनी खिड़की से देख सकते हैं। कल मैं अपने विवाह की रजत जयन्ती मना रहा हूँ, और मैं आपको तथा आपकी लड़कियों को आमंत्रित करता हूँ कि मेरे यहाँ आय. और मित्रतापूर्ण भोज म. शामिल हों।"

ताबूतसाज ने सिर झुका कर निमंत्रण स्वीकार कर लिया, और मोची से बैठने तथा चाय पीने का अनुरोध किया। मोची बैठ गया। वह कुछ इतने खुले दिल का था कि शीघ्र ही दोनों अत्यंत घुल-मिल कर बात. करने लगे।

"कहिये, आपके धन्धे का क्या हाल चाल है?" आद्रियान ने पूछा।

"हो-हो," शूल्त्ज ने जवाब दिया- "कभी अच्छा, कभी बुरा। सब चलता है। यह बात जरूर है कि मेरा माल आपसे भिन्न है-- जो जीवित हैं, वे बिना जूतों के भी रह सकते हैं, लेकिन मरने के बाद तो ताबूत के बिना चल नहीं सकता!"

"बिल्कुल ठीक कहते हो," आद्रियान ने सहमति प्रकट की- "लेकिन एक बात है। माना कि अगर जीवित आदमी के पास पैसा नहीं है तो वह बिना जूतों के रह जाय और तुम्हारी टाल कर जाय; लेकिन मृत भिखारी के साथ ऐसी बात नहीं। बिना कुछ खर्च किये ही वह ताबूत पा जाता है।"

इस तरह बातचीत का यह सिलसिला कुछ देर और चलता रहा। आखिर मोची उठा और अपने निमंत्रण को एक बार फिर दोहराते हुए ताबूतसाज से विदा ली।

अगले दिन, ठीक दोपहर के समय, ताबूतसाज और उसकी लड़कियाँ नये खरीदे घर के दरवाजे से बाहर निकले और अपने पड़ोसी से मिलने चल दिये। आधुनिक उपन्यासकारों की भाँति उनकी लीक पर चलते हुए, न तो हम यहाँ आद्रियान प्रोखोरोव के रूसी काफ्तान (जामे) का वर्णन कर.गे और न आकुलीना तथा दारिया के यूरोपीय पहनावे का। फिर भी यह बताना बेकार न होगा कि दोनों युवतियाँ पीले हैट और लाल जूतियाँ पहने थीं जिन्ह. वे, खास-खास मौकों पर ही बाहर निकालती थीं।

मोची का छोटा सा कमरा अतिथियों से भरा था। उनम. अधिकांश जर्मन दस्तकार, उनकी पत्नियाँ और ऐसे युवक थे जो काम सीखने के लिए उसकी शागिर्दी कर रहे थे। रूसी अफसरों म. से केवल एक ही वहाँ मौजूद था-- पुलिस का सिपाही यूरको। जाति का वह चूखन था, और बावजूद इसके कि उसका पद निम्नस्तर का था, उसकी आवभगत म. मेजबान खासतौर से जुटा था। पच्चीस साल से, पूरी फरमाबरदारी के साथ, पोगोरेल्स्की के सुप्रसिद्ध हरकारे[10] की भाँति, वह अपनी नौकरी बजा रहा था। 1812 के अग्निकाण्ड ने, प्राचीन राजधानी को ध्वस्त करने के साथ-साथ उसकी पीली संतरी-चौकी को भी खाक म. मिला दिया था। लेकिन दुश्मन के दुम दबा कर भागते ही उसकी जगह पर एक नयी संतरी-चौकी का उदय हो गया-- सलेटी रंग की और सफेद यूनानी ढंग के पायों से अलंकृत। और सिर से पाँव तक लैस यूरको उसके सामने अव फिर, पहले की ही भाँति, इधर से उधर और उधर से इधर गश्त लगाने लगा। निकीत्स्की दरवाजे के इर्द-गिर्द बसे सभी जर्मनों से वह परिचित था और उनम. से कुछ तो ऐसे थे जिनके पास उसकी संतरी-चौकी के अलावा रात काटने को और कोई जगह नहीं थी। आद्रियान भी उससे एक ऐसे आदमी से जिसकी देर या सबेर, निश्चय ही उसे भी जरूरत पड़ सकती थी-- जान-पहचान करने म. पीछे नहीं रहा और जब अतिथियों ने मेज पर बैठना शुरू किया तो ये दोनों एक-दूसरे के साथ-साथ बैठे। शूल्ज, उसकी पत्नी और उनकी सत्रह वर्षीय लड़की लोत्तखेन, अपने अतिथियों के साथ भोजन म. शामिल होते हुए भी, परोसने और रकाबियों म. चीज. रखने म. बावर्ची को मदद दे रही थीं। बीयर खुलकर बह रही थी। यूरको अकेले ही चार के बराबर खा-पी रहा था। आद्रियान भी किसी से पीछे नहीं था। उसकी लड़कियाँ बड़े सलीके से बैठी थीं। वातचीत का सिलसिला, जो जर्मन भाषा म. चल रहा था, हर घड़ी जोर पकड़ रहा था। सहसा मेजवान ने सबका ध्यान अपनी ओर खींचा, और कोलतार पुती एक बोतल का कार्क खोलते हुए रूसी भाषा म. जोरों से

चिल्लाकर कहा-- "नेकदिल लूईस की सेहत का जाम!"

कार्क के निकलते ही तरल शैम्पेन की फेन उड़ने लगी। मेजबान ने अपनी अधेड़ जीवन-संगिनी का ताजा रंगतदार चेहरा चूमा, और अतिथियों ने हल्ले-गुल्ले के साथ नेक लूईस के स्वास्थ्य का जाम पिया। इसके बाद, एक दूसरी बोतल का कार्क खोलते हुए मेजवान चिल्लाया--

"प्यारे अतिथियों के स्वास्थ्य का जाम!"

और अतिथियों ने, बदले म. धन्यवाद देते हुए, फिर गिलास खाली कर दिये।

इसके बाद स्वास्थ्यकामना के लिए गिलास खनकने और खाली करने का जैसे ताँता बन्ध गया-- जितने अतिथि थे एक-एक करके उन सब की सेहत के जाम पिये गये, फिर मास्को और करीब एक दरजन छोटे-मोटे जर्मन नगरों के नाम गिलास खनके, फिर सब धन्धों के नाम एक साथ और उसके बाद अलग-अलग करके, गिलास खाली हुए, और इन धन्धों म. काम करने वाले कारीगरों तथा सभी नये शागिर्दों के स्वास्थ्य के नाम बोतलों के काग खुले। आद्रियान नशे म. धुत्त नहीं हुआ था, काफी संभल कर वह पी रहा था, लेकिन उस पर भी ऐसा रंग सवार हुआ कि उसने सचमुच म. एक अनूठे से जाम का प्रस्ताव किया और गिलास खाली करके बैठ गया। इसके बाद एक हट्टे-कट्टे अतिथि ने-- जो डबलरोटी बिस्कुट बनाने का काम करता था-- अपना गिलास उठाते हुए चिल्लाकर कहा-- "उन लोगों के स्वास्थ्य के लिए जिनकी खातिर हम काम करते हैं!" इस कामना का भी पहले की भाँति, सभी ने खुशी से स्वागत किया। अतिथि एक दूसरे के सामने झुक-झुक कर गिलास खाली करने लगे-- दर्जी मोची के सामने, मोची दर्जी के सामने, डबलरोटी बनानेवाला इन दोनों के सामने, और सभी अतिथि एक साथ मिल कर डबलरोटी बनानेवाले के सामने एक-दूसरे के सामने झुक कर पारस्परिक अभिवादन का यह सिलसिला अभी चल ही रहा था कि यूरको ने तावूतसाज की ओर मुँह करते हुए चिल्लाकर कहा-- "आओ पड़ोसी, तुम्हारे मृत आसामियों के स्वास्थ्य का जाम पिय.।" इस पर, सभी हँस पड़े, केवल ताबूतसाज चुप रहा। उसे यह बुरा मालूम हुआ, और उसकी भौंह. चढ़ गयीं। लेकिन इधर किसी का ध्यान नहीं गया, अतिथियों का दौर चलता रहा और जब वे मेज से उठे तो उस समय रात की आखिरी प्रार्थना के लिए गिरजे की घंटियाँ बज रही थीं।

काफी रात ढल जाने पर अतिथि विदा हुए। अधिकांश नशे म. धुत्त थे। हट्टाकट्टा डबलरोटी बनानेवाला और जिल्दसाज जिसका चेहरा "लाल चमड़े की जिल्द-चढ़ा" मालूम होता था, पुलिस के सिपाही की दोनों बगलों म. अपने हाथ

डाले, उसे उसकी चौकी की ओर ले चले। इस समय उन्ह. यह रूसी कहावत याद आ रही थी कि कर्ज का मजा उसकी वसूली म. है। ताबूतसाज भी अपने घर लौट आया था। वह गुस्से से भरा था और दिमाग उसका गड़बड़झाला बना हुआ था। "आखिर" उसने सस्वर सोचा, "मेरा धन्धा क्या अन्य धन्धों से कम सम्मानपूर्ण है? ताबूतसाज और जल्लाद क्या भाई-भाई हैं, क्या उन्ह. एक साथ रखा जा सकता है? तो फिर इन विदेशियों के हँसने म. क्या तुक, वे क्यों हँसे? क्या ताबूतसाज को रंगबिरंगे कपड़ों वाला विदूषक समझते हैं? तिस पर मजा यह कि म. इन सबको गृह प्रवेश के प्रीतिभोज म. बुलाने जा रहा था। ओह नहीं, मैं ऐसी बेवकूफी नहीं करूँगा। मैं उन्ह. बुलाऊँगा जिनके लिए मैं काम करता हूँ अपने ईसाई मृतकों को!"

"ओह मालिक!" नौकरानी ने जो उस समय ताबूतसाज के पाँव से जूते उतार रही थी, अचरज और भय से चीखते हुए कहा-- "जरा सोचिये तो सही कि यह आप क्या कर रहे हैं! क्रास का चिन्ह बनाइये, कहीं मृतकों को भी गृह प्रवेश के लिए बुलाया जाता है। कितनी भयानक बात है यह!"

"खुदा साक्षी है, यह मैं जरूर करूँगा," आद्रियान ने कहना जारी रखा-- "और कल ही। ऐ मेरे आसामियो, मेरे शुभचिन्तको, कल रात भोज म. शामिल होकर मुझे सम्मानित करना। जो कुछ रूखा-सूखा मेरे पास है, सब तुम्हारा ही दिया हुआ तो है।"

इन शब्दों के साथ ताबूतसाज ने बिस्तर की शरण ली और कुछ ही देर बाद खर्राटे भरने लगा।

सुबह जब आद्रियान की आँख. खुलीं तो अभी काफी अन्धेरा था। सौदागर की पत्नी त्र्यूखिना रात म. ही मर गयी थी और उसके मुसाहिबों म. से एक ने आकर इसकी खबर दी थी। वह घोड़े की पीठ पर तेजी से उसे दौड़ाता, आया था। ताबूतसाज ने वोदका के लिए दस कोपेक उसे इनाम म. दिये, तुर्त-फुर्त कपड़े पहन, एक छोटी गाड़ी पकड़ी और उस पर सवार होकर राजगूल्याई पहुँचा। मृतक के घर के दरवाजे पर पुलिस वाले पहले से तैनात थे, और सौदागर इधर से उधर इस तरह मण्डरा रहे थे जैसे सड़ी लाश की गंध पाकर कौवे मण्डराते हैं। शव मेज पर रखा था, चेहरा मोमियाई मालूम होता था लेकिन नाक-नक्शा अभी ह्रास से बिगड़ा नहीं था। सगे-संबंधी, अड़ोसी-पड़ोसी और नौकर-चाकर उसके चारों ओर खड़े थे। खिड़कियाँ सभी खुली थीं, मोमबत्तियाँ जल रही थीं, और पादरी मृतक के लिए शांति पाठ कर रहे थे।

आद्रियान मृतक स्त्री के भतीजे के पास पहुँचा। वह युवक सौदागर था और फैशनदार फ्राक-कोट पहने था। आद्रियान ने उसे सूचना दी कि ताबूत, मोमबत्तियाँ, ताबूत ढकने का कफन और अन्य मातमी साज-सामान बहुत ही बढ़िया हालत म. तुरन्त जुटाये जाय.गे। यों ही, लापरवाही से मृतक के उत्तराधिकारी ने उसे धन्यवाद दिया और कहा कि दामों के सवाल पर वह झिक-झिक नहीं करेगा, और सब कुछ खुद ताबूतसाज के ईमान और नेकनीयती पर पूर्णतया छोड़ देगा। ताबूतसाज ने अपनी आदत के अनुसार, शपथ लेकर कहा कि वह एक पाई भी ज्यादा वसूल नहीं करेगा, और इसके बाद मुसाहिब ने उसकी ओर और उसने मुसाहिब की ओर भेद भरी नजर से देखा, और सामान तैयार करने के लिए गाड़ी पर सवार हो घर लौट आया। दिन भर वह इसी तरह राजगूल्याई और निकीत्स्की दरवाजे के बीच भाग दौड़ करता रहा। कभी जाता, कभी वापिस लौटता। साँझ तक उसने सभी कुछ ठीक-ठाक कर दिया और गाड़ी को विदा कर पैदल ही घर लौटा। चाँदनी रात थी। सही-सलामत वह निकीत्स्की दरवाजे पहुँच गया। गिरजे के पास से गुजरते समय हमारे मित्र यूरको ने उसे ललकारा, लेकिन जब देखा कि अपना ही ताबूतसाज है तो उसके लिए शुभ रात्रि की कामना प्रकट की। देर काफी हो गयी थी। जब वह अपने घर के पास पहुँचा तो यकायक उसे ऐसा मालूम हुआ मानो कोई दरवाजे के पास तक गया है, दरवाज को खोल अन्दर जा कर गायब हो गया है।

"यह क्या तमाशा है?" आद्रियान अचरज से भर उठा-- "इस समय भला कौन मुझसे मिलने आ सकता है? कहीं कोई चोर तो नहीं है? कहीं ऐसा तो नहीं है कि कोई सैलानी युवक है जो रात मेरी नन्ही मुन्नीओं निठल्ली लड़कियों से साँठ-गाँठ करने आया हो?"

एक बार तो उसने यहाँ तक सोचा कि अपने मित्र यूरको को मदद के लिए बुला लाये। तभी एक और व्यक्ति दरवाजे के पास पहुँचा और भीतर पांव रख ही रहा था कि ताबूतसाज को घर की ओर तेजी से लपकते हुए देखकर यह निश्चल खड़ा हो गया, और अपने तिरछे टोप को उठा कर अभिवादन करने लगा।

आद्रियान को ऐसा मालूम हुआ मानो उसने यह शक्ल कहीं देखी हैं, लेकिन जल्दी म. उसे ध्यान से नहीं देख सका। हाँफते हुए बोला-- "क्या आप मुझ से मिलने आये हैं? चलिये भीतर चलिये।"

"तकल्लुफ के फेर म. न पड़ें, मित्र," अनजान ने थोथी आवाज म. कहा-- "आगे-आगे आप चलिये और अपने अतिथियों का पथ-प्रदर्शन कीजिये!"

आद्रियान को खुद इतनी उतावली थी कि चाहने पर भी वह तकल्लुफ निभा न पाता। उसने दरवाजा खोला और घर की सीढ़ियों पर पाँव रखा। दूसरा भी उसके पीछे-पीछे चला। आद्रियान को ऐसा मालूम हुआ मानो उसके कमरों म. लोग टहल रहे हैं। "यह सब क्या तमाशा है, मेरे राम?" उसने सोचा, और लपक कर भीतर पहुँचा... और उसके घुटने लड़खड़ा गये। कमरा प्रेतों से भरा था। खिड़की म. से चाँदनी भीतर पहुँच रही थी जिसम. उनके पीले-नीले चेहरे लटके हुए मुँह, धुँधली अधखुली आँख., और चपटी नाक, उजागर हो रहे थे... आद्रियान ने भय से काँप कर पहचाना कि ये सब वही लोग हैं जिनको दफनाने म. उसने योग दिया था, और वह जो उसके साथ भीतर आया था, वही ब्रिगेडियर था जिसे मूसलाधार वर्षा के बीच दफनाया गया था। वे सब, पुरुष भी और स्त्रियाँ भी, ताबूतसाज के चारों ओर बटुर आये, और सिर झुका-झुका कर अभिवादन करने लगे। भाग्य का मारा केवल एक ही ऐसा था जो कुछ ही दिन पहले मुफ्त दफनाया गया था, वही पास नहीं आया। बेचारगी की मुद्रा बनाये वह सबसे अलग कमरे के एक कोने म. खड़ा था, मानो अपने फटे हुए चिथड़ों को छिपाने का प्रयत्न कर रहा हो। उसके सिवा अन्य सभी बढ़िया कपड़े पहने थे-- स्त्रियों के सिरों पर फीतेदार टोपियाँ थीं, स्वर्गवासी अफसर वर्दियाँ डाले थे, लेकिन उनकी हजामत. बढ़ी थीं, सौदागरों ने एक-से-एक बढ़िया कपड़े छाँट कर पहने थे।

"देखा, प्रोखोरोव!" सबकी ओर से बोलते हुए ब्रिगेडियर ने कहा-- "हम सब तुम्हारे निमंत्रण पर अपनी-अपनी कब्रों से उठ कर आये हैं। केवल वे जो एकदम असमर्थ हैं, जो पूर्णतया गल-सड़ चुके हैं, नहीं आ सके। इसके अलावा उन्ह. भी मन मसोस कर रह जाना पड़ा जो केवल हड्डियों का ढेर भर रह गये हैं और जिनका मांस पूरी तरह गल चुका है। लेकिन इनम. से भी एक अपने आपको नहीं रोक सका। तुम से मिलने के लिए वह इतना बेचैन था..."

उसी समय एक छोटा कंकाल कोहनियों से सबको धकियाता आगे निकल आया और आद्रियान की ओर बढ़ने लगा। उसका मांसहीन चेहरा आद्रियान की ओर बड़े चाव से देख रहा था। चटक हरे और लाल रंग की धज्जियाँ उसके ढाँचे से जहाँ-तहाँ लटकी थीं, जैसे बाँस से लटका दी जाती हैं, और उसके घुटने से नीचे की हड्डियाँ घुड़सवारी के ऊँचे जूतों के भीतर इस तरह खटखटा रही थीं जैसे खरल म. मूसली खटखटाती है।

"मुझे पहचाना नहीं, प्रोखोरोव?" कंकाल ने कहा-- "गारद के भूतपूर्व सार्ज.ट प्योत्र पेत्रोविच कुरील्किन को भूल गये जिसके हाथ तुमने 1766 म. अपना पहला

ताबूत बेचा था– यही जिसे तुमने बतूल का बताया था, लेकिन निकला वह चीड़ की पतली तख्तियों का!”

यह कहते हुए आद्रियान का कंकाली आलिंगन करने के लिए उसने अपनी बाह. फैला दीं। अपनी समूची शक्ति बटोर कर आद्रियान चिल्लाया और कंकाल को उसने पीछे धकेल दिया। प्योत्र पेत्रोविच लड़खड़ा कर फर्श पर गिर पड़ा, बिखरी हुई हड्डियों का एक ढेर मात्र। मृतकों म. विक्षोभ की एक लहर दौड़ गयी। अपने साथी के अपमान का बदला लेने के लिए वे आद्रियान की ओर लपके-- चींखते-चिल्लाते, कोसते और धमकियाँ देते। अभागे मेजबान के होश गुम थे। चीख-चिल्लाहट ने उसके कान बहरे कर दिये थे, और वे उसे कुचल देना चाहते थे। उसकी आँखों के आगे अन्धेरा छा गया, और लड़खड़ा कर अब वह भी मृत सार्ज.ट की हड्डियों के ढेर पर गिर पड़ा। वह बेसुध हो गया था।

सूरज की किरण. उस बिस्तर को आलोकित कर रही थीं जिस पर ताबूतसाज सो रहा था। आखिर उसने आँख. खोली और देखा कि नौकरानी समोवर म. कोयले दहकाने के लिए फूँक मार रही है। रात की घटनाओं की याद आते ही आद्रियान के शरीर म. कँपकँपी सी दौड़ गयी। त्र्यूखिना, ब्रिगेडियर और सार्ज.ट कुरील्किन के धुन्धले चेहरे उसके मस्तिष्क पर छाये हुए थे। वह चुपचाप प्रतीक्षा करता रहा कि नौकरानी खुद बातचीत शुरू और रात की घटनाओं का बाकी हाल उसे बतायेगी।

“मालिक, आज आप कितनी देर तक सोये,” सुबह के समय पहनने का चोगा उसे थमाते हुए अक्सीन्या ने कहा। “हमारा पड़ोसी दर्जी आपसे मिलने आया था, और पुलिस का सिपाही भी एक चक्कर लगा गया है। वह यह कहने आया था कि आज उसका जन्मदिन है। लेकिन आप सो रहे थे, और हमने जगाना ठीक नहीं समझा।”

“अच्छा, स्वर्गवासी विधवा त्र्यूखिना के यहाँ से भी कोई आया था?”

“यह क्या? क्या त्र्यूखिना मर गयी, मालिक?”

“तुम भी निरी चोंच हो। उसका मातमी साज-सामान तैयार करने म. कल तुम्हीं ने तो मेरा हाथ बँटाया था?”

“आप पागल तो नहीं हो गये, मालिक?” अक्सीन्या ने कहा “या कल के नशे के बादल अभी तक दिमाग पर छाये हुए है? कल किसी की मैयत का सामान तैयार नहीं हुआ। आप दिन-भर जर्मन के यहाँ दावत उड़ाते रहे। रात को नशे म. धुत्त लौटे और अपने इसी बिस्तर पर गिर पड़े जिस पर कि आप अभी तक सोये हुए थे।

प्रार्थना के लिए गिरजे की घण्टी भी बजते-बजते आखिर थक कर चुप हो गयी।"

"सचमुच?" ताबूतसाज ने कुछ संतोष की साँस लेते हुए कहा।

"और नहीं तो क्या झूठ है?" नौकरानी ने जवाब दिया।

"तो फिर जल्दी से चाय बनाओ, और लड़कियों को यहीं बुला लाओ।"

पोस्टमास्टर

और एक डाकखाने का तानाशाह!

प्रिन्स व्याजेम्स्की[12]

ऐसा आदमी ढूँढे नहीं मिलेगा जिसने पोस्टिंग स्टेशन के मास्टरों को कभी न कोसा हो, जिसका उनके साथ झगड़ा न हुआ हो, गुस्से में उबल-उबल कर जिसने उनके स्वेच्छाचार, बेअदबी और समय की पाबन्दी न करने के बारे म. बेसिर-पैर की शिकायतों का तूमार बाँधने के लिए भारी भरकम तथा जानलेवा मुआइना-बुक उनसे न माँगी हो; कौन ऐसा होगा जिसने न सोचा हो कि वे इन्सान न होकर कोई शैतान हैं, निकम्मे अफसरों से भी बदतर, एकदम 'मुरोम के लुटेरे'। लेकिन जरा न्याय की दृष्टि से देखने का प्रयत्न कीजिए, उनकी स्थिति म. अपने आपको रख कर जरा गौर कीजिए, तब शायद आप उनके बारे म. इतनी अनुदारता से फतवा नहीं दे सक.गे। आखिर पोस्टमास्टर है क्या? वास्तव म. वह उन छोटे अफसरों म. से हैं जो बलि का बकरा बनने के लिए जन्म लेते हैं। इस सरकारी पद के सिवा अन्य कोई चीज उसके पास नहीं होती जो धक्के-मुक्कों और आघातों से उसकी रक्षा कर सके, लेकिन सो भी हमेशा नहीं (पाठक अपने हृदय पर हाथ रखकर देख., उनकी आत्मा इसकी साक्षी होगी।) और कितनी काँटों से भरी स्थिति होती है - जैसा कि प्रिन्स व्याजेम्स्की ने तरंग म. कहा था इस तानाशाह की? क्या उसका काम, सच्चे मानों म. हाड़तोड़ नहीं है? न उसे दिन को चैन है, न रात को। यात्रि आते हैं और कष्टकर यात्रा की सारी परेशानियों का सन्ताप, एक-बारगी, पोस्टमास्टर पर उड़ेल देते हैं। मौसम जालिम है तो पोस्टमास्टर का कसूर, सड़क. बेहूदा हैं तो पोस्टमास्टर के सिर, कोचवान जिद्दी और घोड़े अड़ियल हैं तो

पोस्टमास्टर की मुसीबत, हर चीज के लिए उसी की टाँग खींची जाती है। गरीब के बाड़े म. यात्री इस तरह पाँव रखता है जैसे वह अपने दुश्मन के बाड़े म. प्रवेश कर रहा है। और पोस्टमास्टर के लिए यह सौभाग्य की बात होती है अगर वह अपने इस बेबुलाये मेहमान से जल्दी ही छुटकारा पा जाता है और अगर कहीं घोड़े उपलब्ध न हुए तो.... अरे, बाप रे! तब तो गालियों और धमकियों का एक पहाड़ ही उसके सिर पर टूट पड़ता है। वर्षा और कीचड़ म. उसे घर-घर भागना पड़ता है; भन्नाए हुए यात्री की चीख-चिल्लाहट और धक्के-मुक्कों से क्षण-भर साँस लेने के लिए बाहर पोर्च की शरण उसे लेनी पड़ती है जहाँ तूफान थपेड़े मारता और जनवरी का पाला शरीर को बींधता होता है। कोई एक फौजी जेनरल आता है और थरथर काँपता पोस्टमास्टर अपनी आखिरी दो त्रोइका (तीन घोड़े वाली गाड़ी) उसके हवाले कर देता है जिनम. से एक उसने डाक ले जाने के लिए रिजर्व रख छोड़ी थी। धन्यवाद के नाम एक शब्द तक जेनरल अपने मुँह से नहीं निकालता और विदा हो जाता है। इसके पाँच मिनट बाद ही घंटियों की आवाज सुनाई देती है और सरकारी हरकारा मेज पर हाथ पटकता हुआ ताजादम घोड़ों का फरमान उसके मुँह पर दे मारता है। इन सब परिस्थितियों पर विचार कीजिये, तब विक्षोभ के बजाय आपका हृदय सच्ची सहानुभूति से भर जाएगा। लेकिन इस विषय पर अभी कुछ और भी कहना है-- पिछले बीस वर्ष म. समूचे रूस के ओर-छोर की यात्रा म. कर चुका हूँ। डाक-यात्रा के करीब-करीब सभी रास्तों और कई पीढ़ियों के कोचवानों से मैं परिचित हूँ। पोस्टमास्टरों म. शायद ही ऐसा कोई हो जिसे मैं न जानता हूँ और जिस से मेरा वास्ता न पड़ा हो। मेरा विचार है कि यात्राओं के दौरान म. संचित अपने रोचक संस्मरण जल्दी ही प्रकाशित करूँ। फिलहाल मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि पोस्टमास्टरों की इस जाति को जनता के सामने बेहद गलत रंग म. पेश किया गया है। बुरी तरह लांछित हमारे ये पोस्टमास्टर साधारणतया बहुत ही शान्तिप्रिय जीव होते हैं-- मिलनसार, दूसरों के लिए अपने हृदय म. जगह लिये हुए। सामाजिकता की ओर उनम. झुकाव होता है, अपने बारे म. उन्ह. कोई खास मुगालता नहीं होता, और कपड़े उतारने की नीयत तो वे जरा भी नहीं रखते। उनकी बातचीत कतिपय सम्माननीय यात्री जिसे बकवास से अधिक नहीं समझते-- बहुत ही कौतुकपूर्ण और शिक्षाप्रद होती है। जहाँ तक मेरा अपना सम्बन्ध है, सरकारी काम से यात्रा करने वाले आपके टुकड़ियल अफसरों की लंतरानियों की बनिस्बत मैं उनकी बातचीत अधिक पसन्द करता हूँ।

कहने की आवश्यकता नहीं कि पोस्टमास्टरों की बाइज्जत बिरादरी म. मेरे

अनेक मित्र हैं। सच तो यह है कि इनम. से एक की स्मृति को मैं अपनी बहुत ही मूल्यवान निधि समझता हूँ। अपने जीवन के एक दौर म., परिस्थितिवश हम एक-दूसरे के निकट आये और गुँथ गये। अपने उदार पाठकों को यहाँ मैं उसी की कहानी सुनाना चाहता हूँ।

मई 1816 की बात है। संयोगवश मैं 'ऐक्स' प्रान्त म. यात्रा कर रहा था। यात्रा का वह मार्ग अब नहीं रहा। मैं एक निम्न श्रेणी का अफसर था, एक चौकी से दूसरी चौकी तक मेरी मन्जिल होती थी। जेब म. इतने पैसे नहीं होते थे कि दो घोड़ों से अधिक की व्यवस्था कर सकूँ। नतीजा इसका यह कि पोस्टमास्टर मेरा कोई खास लिहाज नहीं करते थे और जिस चीज को पाना मैं अपना अधिकार समझता था मैं उसे बलपूर्वक प्राप्त करता था। मैं नौजवान और तेज-तर्रार था। उन पोस्टमास्टरों की नीचता और ढुलमुलपन से मेरा खून खौल उठता जो मेरे लिए कसे गये घोड़ों तक को ऊँचे अफसरों के हवाले कर देते। ऐसे ही गवर्नर की मेज पर, उस समय जबकि खास तश्तरियाँ परसी जा रही थीं, ऊँच नीच का ध्यान रखने वाले एक बैरा ने मुझे नजरन्दाज किया था और मैं तिलमिला गया था। अब ये दोनों ही बात. अपने जमाने को देखते बहुत ही उचित मालूम होती है। आखिर, तुम्हीं सोचो, सर्व-प्रचलित इस नियम की जगह कि "बड़े ओहदे के आगे छोटा ओहदा सिर झुकाये", अगर यह नियम लागू कर दिया जाये कि "समझदार के आगे नासमझ सिर झुकाये" तो हम सबका क्या हश्र हो? अच्छा खासा उत्पात खड़ा हो जाये। घर के नौकर पहले किसकी सेवा कर.गे? लेकिन इसे छोड़िए, और वह किस्सा सुनिए जो कि मैं सुनाने जा रहा था।

उस दिन बड़ी तपन थी। 'ऐक्स' पोस्टिंग स्टेशन से तीन वर्स्ट इधर हल्की फुहार पड़नी शुरू हुई और देखते-देखते मूसलाधार बारिश होने लगी। मैं एकदम भीग गया। स्टेशन पर पहुँचते ही तुरन्त मैंने अपने कपड़े बदले और चाय के लिए आर्डर दिया।

"ऐ दून्या!" पोस्टमास्टर ने पुकार कर कहा, समोवार गर्म करो, और भाग कर कुछ मलाई ले आओ!"

पोस्टमास्टर की आवाज सुनते ही चौदह साल की एक लड़की पार्टीशन के पीछे से प्रकट हुई और पोर्च की ओर दौड़ गयी। उसके सौन्दर्य ने मुझे चौंधिया दिया।

"क्या यह तुम्हारी लड़की है?" मैंने पोस्टमास्टर से पूछा।

"जी हाँ", प्रसन्नता से हुमक कर उसने जवाब दिया- "यह मेरी लड़की है।

बहुत ही चतुर और तेज, ठीक अपनी माँ की भाँति जो अब नहीं रही!"

इसके बाद, वहीं पर वह मेरे ऑर्डर को अपने रजिस्टर म. दर्ज करने लगा और मैंने उन तस्वीरों को देखना शुरू किया जिनसे कि उसकी मामूली सी किन्तु साफ-सुथरी झोंपड़ी सजी थी। इनम. एक उड़ाऊ-खाऊ पूत की कहानी चित्रित थी। पहले चित्र म. ड्रेसिंग-गाउन और नाइट कैप पहने एक सम्मानित बुजर्ग एक चंचल युवक को विदा कर रहे थे और वह, उतावलेपन के साथ, उनका आशीर्वाद तथा धन की एक थैली ग्रहण कर रहा था। दूसरे चित्र म., पूरे विस्तार के साथ, उस युवक का उच्छृंखल चरित्र अंकित था। वह एक मेज पर बैठा था और नकली मित्र तथा बेशर्म स्त्रियाँ उसे घेरे थीं। इसके बाद के एक चित्र म. युवक के नाश का दृश्य अंकित था। वह फटा हुआ चोगा पहने था और सिर पर टेढ़ी टोपी रखे सुअरों का रेवड़ हाँकता और उन्हीं की संगत म. भोजन करता दिखाया गया था। उसके चेहरे से गहरी उदासी और पश्चाताप झलक रहा था। इस सीरीज के सबसे अन्तिम चित्र म. उसका अपने पिता के पास वापिस लौटने का दृश्य अंकित था। नेक वृद्ध इस चित्र म. भी वही नाइट कैप और ड्रेसिंग गाउन पहने था। अपने पुत्र से मिलने के लिए वह बाहर दौड़ा आया था, पुत्र उसके पाँवों पर गिरा था, पिछले हिस्से म. खानसामा एक मोटे ताजे दुम्बे को जिबह कर रहा था और बड़ा भाई नौकरों से इन सब खुशियों का कारण पूछ रहा था। प्रत्येक चित्र के नीचे, जर्मन भाषा म., विषय के उपयुक्त तुकबन्दियाँ अंकित थीं। मैंने उन्ह. पढ़ा। वह सब आज दिन भी मेरी स्मृति म. ताजा है। साथ ग.दे के गमले, शोख रंगों और बेलबूटों के पर्दे तथा अन्य चीज. जो उस समय वहाँ मौजूद थीं, मुझे नहीं भूली हैं। घर के मालिक का चित्र-- आयु करीब पचास वर्ष, हृष्ट-पुष्ट और प्रसन्न, हरे रंग का लम्बा फ्राक कोट पहने, रंग-उड़े फीतों से लटके तीन पदकों से सुशोभित, ध्यान करते ही आज भी मेरी आँखों के आगे मूर्त हो उठता है।

अपने वृद्ध कोचवान का हिसाब चुकता किए अभी मुझे जरा भी देर नहीं हुई थी कि दून्या समोवर लिए आ गयी। उस नन्ही चुलबुली छोकरी को यह भाँपते देर नहीं लगी कि किस रंग म. उसने मुझे रंग दिया है, और अपनी बड़ी-बड़ी नीली आँखों को संजीदगी के साथ उसने नीचे झुका लिया। मैंने उससे बातचीत शुरू की। बिना किसी झिझक के, उस लड़की की भाँति जो दुनिया के रंग-ढँग से वाकिफ है, वह जवाब देने लगी। मैंने उसके पिता को एक प्याला मदिरा नजर की, दून्या के आगे चाय का प्याला खिसका दिया और हम तीनों इस तरह घुलमिलकर बतियाने लगे जैसे हम युगों से एक-दूसरे से परिचित हों।

घोड़े जुते खड़े थे लेकिन पोस्टमास्टर और उसकी लड़की से विदा लेने के लिए मेरा जी नहीं चाहता था। आखिर मैंने उनसे विदा ली, पिता ने शुभयात्रा के लिए कामना प्रकट की और लड़की मुझे छोड़ने गाड़ी तक आयी। मैं पल म. ही ठिठक गया और उसका चुम्बन लेने की इच्छा प्रकट की। दून्या मान गयी... अनगिनती चम्बनों की याद आती है मुझे,

"जब से कि यह लुभावना व्यापार शुरू किया मैंने"

लेकिन अन्य कोई चुम्बन उतनी सुखद और अमिट स्मृति नहीं छोड़ सका जितनी कि उस चुम्बन ने छोड़ी!

कई वर्ष बीत गये। परिस्थितियों ने फिर एक बार कुछ ऐसा जाल रचा कि मुझे फिर उसी रास्ते से और उन्हीं जगहों की यात्रा करनी पड़ी। मुझे पोस्टमास्टर की लड़की की याद हो आयी और उसे एक बार देखने की आशा से मेरा मन खुशी से भर गया। लेकिन तभी मुझे खयाल आया कि कहीं पोस्टमास्टर की नौकरी न छूट गयी हो, और यह कि हो सकता है, दून्या का अब तक विवाह भी हो गया हो। दोनों म. किसी एक की मृत्यु की आशंका भी मेरे मन म. कौंधी और धड़कते हृदय तथा उदास चित्त से म. 'एक्स' पोस्टिंग स्टेशन की ओर बढ़ा।

घोड़े पोस्टमास्टर के छोटे से घर के आगे पहुँच कर रुक गये। कमरे म. पाँव रखते ही उड़ाऊ-खाऊ पूत की कहानी वाले चित्रों को मैंने तुरन्त पहचान लिया। मेज और पलंग भीं पहले की भाँति किसी पुरानी जगह पर मौजूद थे। केवल खिड़कियों की ओटक पर फूलों के गमले नहीं दिखाई देते थे और कमरे की हर चीज ध्वस तथा उपेक्षा का परिचय दे रही थी। भेड़ की खाल का कोट ओढ़े पोस्टमास्टर सो रहा था। मेरे आगमन से उसकी नींद खुल गयी और उठ कर बैठ गया... बेशक, यह वही सम्सोन वीरिन था, लेकिन वह कितना बूढ़ा हो गया था! उस समय जब कि वह रजिस्टर म. मेरा ऑर्डर दर्ज कर रहा था, उसके सफेद बालों, दाढ़ी-बढ़े गालों म. पड़ी गहरी झुर्रियों और उसके झुके हुए कंधों पर मेरी नजर गयी। अपने इस आश्चर्य को दबा कर नहीं रख सका कि तीन या चार साल के अन्तर ने एक हृष्ट-पुष्ट आदमी को किस प्रकार जीर्ण-शीर्ण बना कर छोड़ दिया है।

"क्या तुम मुझे नहीं पहचानते?" मैंने पूछा- "हम दोनों तो पुराने मित्र हैं!"

"हो सकता है," उसने उदास भाव से कहा- "यह काफी चलता रास्ता है। अनगिनत यात्री इधर से गुजरते हैं।"

"और तुम्हारी दून्या कैसी है?" मैंने फिर पूछा।

वृद्ध की भौहों म. बल पड़ गये।

"खुदा ही जानता है," उसने कहा।

"तो क्या उसका विवाह हो गया?" मैंने पूछा।

वृद्ध ने कुछ ऐसा भाव दिखाया जैसे उसने मेरा प्रश्न ही न सुना हो और फुसफुसा कर मेरा ऑर्डर पढ़ता रहा। मैंने सवाल करना बन्द कर दिया। और केतली गर्म करने के लिए उससे अनुरोध किया। कौतुक मेरे हृदय को कचोट रहा था। मैंने सोचा कि मदिरा की एक मात्रा मेरे पुराने मित्र को चेतन कर देगी और उसकी जबान खुल निकलेगी।

और मैंने गलत नहीं सोचा। वृद्ध ने मदिरा का प्याला लेने से इन्कार नहीं किया। मैंने देखा कि रम ने उदासी के बादलों को छाँट दिया है। दूसरा प्याला मुँह से लगाते न लगाते उसकी जबान खुली और यह याद करके-- या यह याद करने का बहाना करते हुए कि मैं कौन हूँ, उसने बतियाना शुरू कर दिया। नतीजा इसका यह कि खुद उसके मुँह से मुझे निम्न किस्सा सुनने को मिला-- एक ऐसा किस्सा जिसम. मेरी दिलचस्पी थी और जिसने मेरे हृदय को बुरी तरह उद्वेलित कर दिया।

"सो तुम मेरी दून्या को जानते हो?" उसने कहना शुरू किया-- "ओह, उसे कौन नहीं जानता! आह दून्या, मेरी दून्या! क्या लड़की थी वह भी। जो भी यहाँ आता, उसकी तारीफ किये बिना न रहता। क्या मजाल जो एक बार भी किसी ने उसकी शिकायत की हो! कुलीन स्त्रियाँ आती और उसे उपहार भ.ट करतीं, कोई उसे रूमाल भ.ट करती-- कोई कानों के बुन्दे। जब भद्र लोग इधर से गुजरते तो जान-बूझ कर यहाँ रुक जाते-- कहने को दोपहर या साँझ का भोजन करने-- लेकिन असल म. दून्या को और अधिक देर तक देखते रहने के लिये। यात्री गुस्से म. चाहे कितना ही बलबलाता होता, उसे देखते ही शान्त हो जाता और बड़ी भलमनसाहत के साथ मुझ से बात. करता। तुम शायद यकीन नहीं करोगे, शाही दरबार के लोग और राजदूत आधा-आधा घण्टे तक उससे बतियाते रहते। मेरा सारा घर एक उसी पर टिका था, वह घर को साफ सुथरा रखती, खाना बनाती, हर काम करती। और मैं, बूढ़ा खुसट, अपनी आँखों म. उसे समाये रखता, उसे देख कर खुशी के मारे छलछला उठता। हृदय से मैं अपनी दून्या को चाहता था, बड़े प्रेम से संजोकर मैं अपनी बच्ची को रखता था। मैंने कभी उसे कष्ट नहीं होने दिया। लेकिन मुसीबत को प्रार्थनाओं से नहीं टाला जा सकता, भाग्य म. जो बदा है, वह होकर रहता है।"

इसके बाद, विस्तार के साथ, अपने दुर्भाग्य का उसने वर्णन किया।

तीन साल पहले, जाड़ों की एक साँझ जब कि पोस्टमास्टर एक नये बहीखाते म. लकीर. खींच रहा था और उसकी लड़की पार्टीशन के पीछे कोई कपड़ा सी रही थी, तभी एक त्रोइका दरवाजे पर आकर रुकी और 'सिरकासियन' टोपी तथा फौजी ग्रेटकोट पहने और गले म. भारी मफलर लपेटे एक यात्री उसम. से उतरा। कमरे म. पाँव रखते ही उसने घोड़ों के लिए फरमाइश की। घोड़े सब गये हुए थे। यह सुन यात्री की आवाज और उसका चाबुक दोनों ही ऊँचे उठ गये। लेकिन दून्या, जिसके लिए इस तरह के दृश्य नये नहीं थे, पार्टीशन के पीछे से बाहर दौड़ आयी और बड़ी कमनीयता से यात्री को सम्बोधित किया-- उससे पूछा कि क्या भोजन कर.गे। दून्या के नमूदार होने का जो असर होना चाहिए था वही हुआ। यात्री का गुस्सा नौ दो ग्यारह हो गया, घोड़ों की प्रतीक्षा करने के लिए वह राजी हो गया और भोजन के लिए उसने ऑर्डर दे दिया। उसने अपनी नीली फर की टोपी उतार डाली, मफलर के लपेट खोले और अपने ग्रेटकोट को उतार कर अलग पटक दिया। अब एक दुबला-पतला, काली मूछोंवाला, हुस्सार फौज का अफसर सामने खड़ा था। पूरे अपनत्व के साथ वह पोस्टमास्टर के घर म. जम गया और देखते न देखते मगन भाव से पोस्टमास्टर तथा उसकी लड़की से बतियाने लगा। भोजन मेज पर आ गया। इसी बीच घोड़े भी लौट आये और पोस्टमास्टर ने उन्ह. तुरन्त यात्री की बर्फ-गाड़ी म. जोतने का आदेश दिया, उन्ह. खाना-पानी तक देने की उसने चिन्ता नहीं की। यह सब करके जब वह लौटा तो उसने देखा कि युवा यात्री बेंच पर बेसुध सा पड़ा है। उसे गश सा आ रहा था, उसका सिर दर्द कर रहा था, वह इस योग्य नहीं था कि यात्रा कर सके... मजबूरी थी। पोस्टमास्टर ने अपना बिस्तर उसको नजर कर दिया और निश्चय किया कि अगर रोगी कल सुबह तक संभले तो 'क' से डाक्टर बुला कर उसकी मदद ली जाये।

अगले दिन हुस्सार की तबीयत और भी बदतर हो गयी। उसका नौकर घोड़े पर सवार हो पास के एक नगर से डाक्टर को बुलाने चला गया। दून्या ने सिरके म. रूमाल डुबो कर उसके माथे पर रखा और उसके बिस्तर के पास बैठी अपनी सिलाई का अपना काम करती रही। पोस्टमास्टर की मौजूदगी म. रोगी कराहता रहा और उसके मुँह से एक शब्द भी मुश्किल से ही निकल पाता, हालाँकि उसने दो प्याले काफी के लिये और मरी-गिरी सी आवाज म. दोपहर के भोजन के लिए भी ऑर्डर दिया। दून्या एक क्षण के लिए भी वहाँ से नहीं हटी। वह बार-बार पानी माँगता और दून्या हर बार खुद अपने हाथों से तैयार किया लैमोनेड का प्याला

उठाकर उसे देती। वह अपने होंठों को गीला करता और प्याला लौटाते समय-- हर बार-- क्षीण ऊँगलियों म. उसका हाथ दबाकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करता। भोजन के समय तक डाक्टर आ गया। उसने रोगी की नब्ज देखी, जर्मन भाषा म. उसका हाल-चाल पूछा और रूसी भाषा म. ऐलान किया कि रोगी को केवल आराम की जरूरत है, और यह कि दो एक दिन आराम करने के बाद वह यात्रा पर जाने योग्य हो जाएगा। हुस्सार ने फीस के रूप म. पच्चीस रूबल डाक्टर को भ.ट किये और भोजन के लिए उसे आमंत्रित किया। डाक्टर ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया और दोनों ने खूब जी भर कर भोजन किया, मदिरा बोतल खाली कर दी और दोनों एक-दूसरे से खूब खुश हुए।

एक दिन और बीत गया। हुस्सार अब बिल्कुल चंगा था। वह अत्यन्त प्रसन्न था। हँसी मजाक की वह निरन्तर बौछार लगाए रहता-- कभी दून्या से, कभी पोस्टमास्टर से। सीटी की आवाज म. वह तरह-तरह की तान छेड़ता था, यात्रियों से बतियाता था और उनके ऑर्डरों को रजिस्टर म. दर्ज करता था। इस प्रकार पोस्टमास्टर के हृदय म. उसने इस हद तक घर कर लिया कि तीसरे दिन सुबह अपने खुश मिजाज मेहमान को विदा करते समय उसका हृदय टुकड़े-टुकड़े होने लगा। रविवार का दिन था। दून्या गिरजा जाने के लिये कपड़े लत्तों से लैस थी। हुस्सार की बर्फ गाड़ी ले आयी गयी। उसने पोस्टमास्टर से विदा ली और खाने-पीने तथा रहने के लिए खुले जी से उसने उसे पुरस्कार दिया। उसने दून्या से भी विदा ली, और कहा कि मैं दून्या को गिरजे तक-- जो गाँव के दूसरे छोर पर था-- अपनी बर्फ-गाड़ी म. पहुँचा दूँगा। यह सुन दून्या कुछ दबसट म. पड़ गयी...

"अरे, क्यों डरती हो?" उसके पिता ने पूछा- "श्रीमान कोई भेड़िया तो है नहीं जो तुझे नोच खायेंगे। जा, ये तुझे गिरजे पर छोड़ द.गे।"

दून्या बर्फ-गाड़ी म. सवार हुई और हुस्सार के बराबर म. बैठ गयी। नौकर उछल कर बॉक्स सीट पर पहुँच गया, कोचवान ने सीटी दी और घोड़े सरपट दौड़ चले!

भाग्य का मारा पोस्टमास्टर कभी न समझ सका कि उसने अपनी दून्या को हुस्सार के साथ कैसे जाने दिया, वह कैसे इतना अन्धा हो गया, कैसे उसने अपनी सुध-बुध बिसरा दी। आधा घण्टा बीतते उसे ऐसा अनुभव होने लगा जैसे उसके हृदय को कोई नोच रहा हो, और इस हद तक चिन्ता ने उसे ग्रस लिया कि वह अपने को न रोक सका और दून्या की खोज म. गिरजे की ओर चल दिया। वहाँ पहुँचने पर उसने देखा कि लोग गिरजे से बाहर निकल रहे हैं, लेकिन दून्या का न तो गिरजा घर के अहाते म. कुछ पता था, न पोर्च म., लपका हुआ वह गिरजे के

भीतर पहुँचा। पादरी देव मण्डप से बाहर आ चुके थे, सैक्सटन मोमबत्तियों को बुझा रहा था, दो वृद्ध स्त्रियाँ एक कोने म. अभी तक वन्दना कर रही थीं, लेकिन दून्या का यहाँ भी कोई पता नहीं था। दुःखी पिता ने मन मार कर, आखिर सैक्सटन से पूछा कि प्रार्थना के समय कहीं दून्या को तो उसने नहीं देखा। सेक्सटन ने जवाब दिया कि नहीं, वह प्रार्थना म. शामिल नहीं थी। पोस्टमास्टर घर लौट आया। वह जीवित में समय अधिक मृत मालूम होता था। एक ही आशा अब बाकी थी- हो सकता है कि यौवन के अल्हड़पन म. आकर दून्या उसे अगले पोस्टिंग स्टेशन तक छोड़ने चली गयी हो जहाँ उसकी धर्ममाता भी रहती थी। अधीर वेदना के साथ वह अपने घोड़ों के लौटने की बाट जोहता रहा जो कि उसने गाड़ी के साथ भेजे थे। सारा दिन बीत गया, लेकिन कोचवान अभी भी वापिस नहीं लौटा। आखिर उस समय जबकि रात घिर आयी थी, वह लौटा- अकेला, नशे म. धुत्त, यह भयानक खबर लिए कि दून्या अगले पोस्टिंग स्टेशन से हुस्सार के साथ चली गयी।

भाग्य के इस आघात को वृद्ध सह नहीं सका और उसी रात उसने बिस्तर पकड़ लिया-- वही बिस्तर जिस पर कि पिछले दिन वह धोखेबाज युवक लेटा था। उसने सारी परिस्थितियों पर फिर से गौर किया। उसे अब लगा कि युवक की बीमारी बनावटी थी। बेचारे वृद्ध को जूड़ी चढ़ आयी, उसका बदन बुरी तरह तपने लगा। नतीजा इसका यह कि उसे 'क' नगर के अस्पताल म. भेज दिया गया और उसकी जगह पर, अस्थायी रूप म., एक दूसरा पोस्टमास्टर तैनात कर दिया गया। उसी डाक्टर ने पोस्टमास्टर का भी इलाज किया जो कि हुस्सार को देखने आया था। उसने पोस्टमास्टर को विश्वास दिलाया कि वह युवक पूर्णतया स्वस्थ था, और यह कि उसकी बुरी नीयत को उसने उसी समय भाँप लिया था, लेकिन हुस्सार चाबुक के भय से वह अपना मुँह नहीं खोल सका। जर्मन जो कुछ कहा वह सच था, या अपनी सूझ-बूझ का रौब जमाने के लिए उसने यह सब कहा था, जो भी हो अभागे रोगी को इससे जरा भी ढाढस नहीं बन्धा। बीमारी से अच्छा होते न होते पोस्टमास्टर ने 'क' नगर के अधिकारियों से दो महीने की छुट्टी ली और अपने इरादों के बारे म. किसी से कुछ कहे बिना पैदल ही दून्या की खोज म. निकल पड़ा। रजिस्टर देख कर उसने मालूम किया कि कप्तान मिन्स्की स्मोलेन्स्क से आया था और पीतर्सबर्ग की ओर जा रहा था। जो कोचवान उसे हाँक कर ले गया था, उसने बताया कि हालाँकि दून्या अपनी मर्जी से उसके साथ गयी मालूम होती थी, लेकिन वह रास्ते-भर रोती-कलपती रही। "अगर भगवान ने चाहा तो,"

पोस्टमास्टर ने सोचा- "राह से भटके अपने मेमने को मैं फिर घर ले आऊँगा।" इस विचार का सहारा लिए वह पीतर्सबर्ग पहुँचा और एक भूतपूर्व नान-कमीशन्ड अफसर के यहाँ जो कि फौजी जीवन का उसका पुराना साथी था इजमाइलोव रेजीमैंण्ट की बैरकों म. वह टिका। यहाँ से उसने अपनी खोज शुरू की। उसने शीघ्र ही पता लगा लिया कि मिन्स्की पीतसंवर्ग म. है और देमुतोन की सराय म. ठहरा है। पोस्टमास्टर ने उसके पास जाने का निश्चय किया।

अगले दिन तड़के ही वह हुस्सार के दरवाजे पर जा पहुँचा और साहिब को यह सूचना देने के लिए नौकर से कहा कि एक पुराना सैनिक उनसे मिलना चाहता है। घुड़सवारी के जूते को एक बक्से पर रखे नौकर पॉलिश कर रहा था। उसने बताया कि मालिक अभी सो रहे हैं और यह कि ग्यारह बजे से पहले वह किसी से नहीं मिलते। पोस्टमास्टर वहाँ से चला आया और नियत समय पर फिर वहाँ पहुँचा। ड्रैसिंग गाउन और रगलाल की फैज टोपी पहने खुद मिन्स्की उससे मिलने बाहर निकल आया।

"कहो भाई, तुम क्या चाहते हो?" उसने पूछा।

वृद्ध का हृदय जोरों से उमड़-घुमड़ रहा था। उसकी आँखों म. आँसू डबडबा आये और काँपती हुई आवाज म. वह केवल इतना ही बुदबुदा कर रह गयाः

"सरकार...खुदा के लिए...सरकार.."

मिन्स्की ने तेजी से एक नजर उसे देखा। गालों पर उसके लाली दौड़ गयी। पोस्टमास्टर की उसने बाँह पकड़ी, अपने अध्ययन कक्ष म. उसे ले गया। और भीतर से दरवाजा बन्द कर दिया।

"सरकार," वृद्ध ने फिर कहना शुरू किया-- "उतरा हुआ पानी फिर नहीं लौटता। लेकिन कम से कम मेरी गरीब दून्या को मुझे लौटा दीजिए। रास-रंग तो आप कर चुके-- अब उसका जीवन बेमतलब धूल म. न मिलाइए।"

"जो हो गया है, उसे पलटा नहीं जा सकता," युवक ने, जो प्रत्यक्षतः औचक म. पड़ गया था, जवाब दिया - "मैंने अपराध किया है और इसके के लिए मैं तुम से क्षमा माँगने को तैयार हूं। लेकिन तुम्हें यह नहीं समझना चाहिए कि मैं दून्या को कूड़े के ढेर पर फेंक दूँगा। नहीं, मैं इतना गिरा हुआ नहीं हूँ। वह सुख से रहेगी, इसका मैं तुम्ह. वचन देता हूँ। तुम उसका करोगे भी क्या? बह मुझसे प्रेम करती है, पुराने ढंग से फिर वही जीवन बिताना उसके वश की बात नहीं। जो कुछ हो गया है, उसे न तो तुम आँखों की ओट कर सकते हो, न ही दून्या उसे टाल सकती है।"

इसके बाद वृद्ध की आस्तीन म. कुछ खोंसते हुए उसने दरवाजा खोला और वृद्ध, जाने कैसे, फिर सड़क पर आ गया।

देर तक वह निश्चल खड़ा रहा। अन्त म. अपनी आस्तीन की ओर उसका ध्यान गया। उसने देखा कि कफ के भीतर कागज म. लिपटा एक बण्डल खुंसा है। उसने उसे बाहर निकाला। खोल कर देखा, - पाँच-पाँच और दस-दस रूबल के अनेक नोट थे। उसकी आँखों म. फिर आँसू उमड़ आये, - विक्षोभ और विरोध के आँसू। उसने नोटों को मसल डाला, उनकी गोली बनाई और सड़क पर पटक कर उन्ह. अपने पाँवों से रौंदा और इसके बाद वहाँ से चल दिया.... कुछ ही डग गया होगा कि वह फिर थिर हो गया, मन ही मन उसने कुछ सोचा और... उसके पाँव फिर वापिस लौट चले। लेकिन नोट अब वहाँ नहीं थे। लकदक कपड़े पहने एक युवक उसे आता देख, तेजी से एक गाडी की ओर लपका, उसम. सवार हो गया और कोचवान से चिल्ला कर बोला- "सीधे बढ़ चलो!" पोस्टमास्टर ने उसका पीछा करने का पयत्न नहीं किया। उसने अपने पोस्टिंग स्टेशन लौट जाने का निश्चय किया, लेकिन जाने से पहले - अगर सम्भव हो तो एक बार अपनी दून्या को वह अवश्य देख लेना चाहता था। सो, दो दिन बाद वह फिर मिन्स्की के घर पहुँचा। लेकिन मिन्स्की के फौजी नौकर ने कड़ाई के साथ कहा कि मालिक किसी से नहीं मिल सकते, धकिया कर उसे हॉल से बाहर निकाला और झटके से दरवाजा बन्द कर दिया। कुछ देर तक तो पोस्टमास्टर बाहर खड़ा रहा, फिर वापिस लौट आया।

उसी साँझ, सर्व शहीदों के गिरजे की प्रार्थना म. शामिल होने के बाद, वह लितेइनाया स्ट्रीट म. से गुजर रहा था। तभी एक बहुत ही बढ़िया गाड़ी उसके पास से निकली। पोस्टमास्टर ने देखा कि इसम. मिन्स्की था। एक तिमंजिले मकान के निकट पहुँच गाड़ी रुक गयी और मिन्स्की उछल कर पोर्च म. पहुँच गया। तभी पोस्टमास्टर के मस्तिष्क म. एक सुखद विचार आया। मुड़ कर वह गाड़ी के पास पहुँचा और कोचवान से उसने पूछाः

"यह किसकी गाड़ी है, भाई? कहीं मिन्स्की की तो नहीं?"

"हाँ उन्हीं की है," कोचवान ने कहा- "लेकिन तुम्ह. उनसे क्या?"

"अभी बताता हूँ। तुम्हारे मालिक ने मुझे एक पुर्जा दिया था कि इसे दून्या के पास पहुँचा देना। लेकिन मैं भूल गया कि वह -तुम्हारी दून्या- कहाँ रहती है।"

"अरे, वह तो यहीं रहती है, दूसरे तल्ले पर। लेकिन भाई, तुम अपना पुर्जा

लेकर देर म. पहुँचे। पुर्जे के बजाय अब तो खुद मालिक ही उसके पास मौजूद होंगे।"

"कोई बात नहीं," हृदय म. एक अजीब धुक-धुकी लिए पोस्टमास्टर ने कहा- "स्थिति स्पष्ट करने के लिए धन्यवाद। लेकिन मुझे तो अपने वचन का निर्वाह करना ही चाहिए।" यह कहते हुए वह सीढ़ियाँ चढ़ गया।

दरवाजा भीतर से बन्द था। उसने घण्टी बजायी और कई क्षणों तक बेचैनी से कसमसाता रहा। ताले म. चाबी के खनकने की आवाज आयी। दरवाजा खुला।

"क्या आवदोत्या सम्सोनोव्ना यहीं रहती है?" उसने पूछा।

"हाँ" युवा दासी ने जवाब दिया- "क्यों उनसे क्या काम है?"

बिना कोई जवाब दिए पोस्टमास्टर भीतर बढ़ चला।

"नहीं, तुम भीतर नहीं जा सकते," दासी पीछे से चिल्लायी-- "आवदोत्या सम्सोनोव्ना इस समय मेहमानों के साथ है।"

लेकिन पोस्टमास्टर ने कोई ध्यान नहीं दिया। वह आगे बढ़ता ही गया। पहले दो कमरे जिन म. से वह गुजरा अन्धेरे थे, लेकिन तीसरे म. रोशनी झलक रही थी। दरवाजा खुला था। वह उसकी ओर बढ़ा और ठिठक कर रह गया। कमरा बहुत ही शान से सजा था, और मिन्स्की गहरे विचारों म. डूबा बैठा था। दून्या आधुनिकतम फैशन की पुतली बनी, उसकी कुर्सी की बाँह पर इस तरह बैठी थी जैसे अंग्रेजी ढंग से, घोड़े की बगल रुख काठी पर बैठी हो। वह बड़े चाव से मिन्स्की की ओर देख रही थी और उसके काले घुँघराले बालों को अपनी उँगलियों के इर्द-गिर्द लपेट रही थी। उसकी उँगलियों म. हीरे चमचमा रहे थे। बेचारा पोस्टमास्टर! इतने सुन्दर रूप म. अपनी लड़की को उसने पहले कभी नहीं देखा था। मुग्ध भाव से वह बस देखता ही रहा।

सहसा, बिना सिर उठाये, दून्या ने पूछा-- "कौन है?" वह चुप खड़ा रहा। कोई जवाव न पा दून्या ने अपना सिर उठाया... और एक चीख मार कर कालीन पर गिर पड़ी। चौंक कर मिन्स्की उसे उठाने के लिए लपका, लेकिन दरवाजे पर वृद्ध पोस्टमास्टर को देख उसने दून्या को छोड़ दिया और गुस्से से थरथराता, उसके निकट पहुँचा।

"तुम क्या चाहते हो?" बत्तीसी भींचते हुए उसने कहा-- "तुम क्यों मेरे पीछे चोरों की तरह पड़े हो? क्या तुम मेरी जान लेना चाहते हो? निकल जाओ यहाँ से!"

अपने मजबूत हाथ म. उसने वृद्ध के कोट का कॉलर दबोचा और उसे बाहर

जाने की ओर धकेल दिया।

वृद्ध फिर अपने ठिकाने पर लौट आया। उसके मित्र ने सलाह दी कि वह अपनी शिकायत दर्ज करा दे। पोस्टमास्टर ने इस पर सोचा और एक ही बार हाथ झटक कर इस सलाह को रद्द कर दिया। उसने मामले को वहीं छोड़ देने का निश्चय किया। इसके दो दिन बाद पीतर्सबर्ग से विदा हो वह अपने स्टेशन पर लौट आया और अपना पहले वाला काम सम्भाल लिया।

"इस बात को अब तीन साल होने आये।" अन्त म. उसने कहा-- "तब से बिना दून्या के, बिना उसकी कोई खैर-खबर के मैं अपने दिन काट रहा हूँ। भगवान ही जाने, वह जिन्दा है या मर गयी। इस दुनिया म. सभी कुछ सम्भव है। राह चलते किसी छैले जवान छैल-चिकनिया के चंगुल म. फँसने वाली लड़कियों म. वह पहली और आखिरी लड़की नहीं है जो शुरू-शुरू म. तो मौज करती हैं और फिर कूड़े के ढेर पर फ.क दी जाती हैं। पीतर्सबर्ग म. ऐसी बुद्धू युवतियाँ ढेर सारी मिल जायेंगी। आज वह साटिन और रेशम से लदी हैं और कल-- यह तुम निश्चय ही जानों तलछट से गिरी सड़कों के चौराहे बुहारती नजर आयेंगी। जब कभी दून्या के इस प्रकार वहाँ धूल म. मिलने का मुझे ख्याल आता है, तो यह अशुभ कामना मेरे हृदय म. उठे बिना नहीं रहती कि अच्छा होता अगर वह मर जाती..."

मेरे मित्र वृद्ध पोस्टमास्टर की यही कहानी है। इस कहानी को सुनाते समय आँसुओं से बार बार उसका गला रुंध जाता था और वह कोट के छोर से उसे पोंछ देता- उसी अन्दाज से जिससे कि दमीत्रियेव की प्रसिद्ध कविता म. ललीन तेरेन्तिच करता है। ये आँसू, एक हद तक, शराब के कारण भी उमड़ आये थे। कहानी सुनाने के दौरान वह एक साथ पाँच गिलास खाली कर चुका था। जो हो, उसके इन आँसुओं ने मुझे अत्यन्त प्रभावित किया। उससे विदा होने के बाद भी, एक लम्बे अर्से तक, वृद्ध पोस्टमास्टर का ख्याल मैं अपने दिमाग से नहीं निकाल सका, या उसकी अभागी दून्या के बारे म. सोचना नहीं छोड़ सका।

कुछ दिन हुए मुझे फिर 'एक्स' गाँव से गुजरना पड़ा और अपने वृद्ध मित्र की मुझे याद हो आयी। मालूम हुआ कि वह पोस्टिंग स्टेशन जिसका वह एक छत्र स्वामी था, अब नहीं रहा। और इस सवाल का कि "क्या पोस्टमास्टर अभी भी जिन्दा है?" मुझे कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिल सका। जो हो, उस सुपरिचित जगह को देखने का मोह मैं नहीं छोड़ सका और किराये पर एक गाड़ी ले 'एन' गाँव की ओर चल दिया।

पतझड़ के दिन थे। आकाश भूरे बादलों से घिरा था। सूने खेतों से ठंडी हवा बह रही थी। राह म. मिलने वाले पेड़ों के पीले और लाल पत्तों को वह अपने साथ उड़ा कर ला रही थी। ठीक सूरज छिपने से पहले मैं 'एन' गाँव म. पहुँचा और पोस्टमास्टर के घर के सामने जाकर रुक गया। एक हृष्ट-पुष्ट स्त्री पोर्च म. (जहाँ बेचारी दून्या ने कभी मेरा चुम्बन लिया था) निकल आयी। पूछ-ताछ करने पर उसने बताया कि वृद्ध पोस्टमास्टर को मरे एक साल हो गया, यह कि उसके घर म. अब एक शराब खींचनेवाला रहता है; और यह कि वह उसी शराब खींचने वाले की बीवी है। मुझे अपनी इस बेकार यात्रा पर, और सात रूबल पर जो खर्च हुए थे, दुःख हुआ।

"उसकी मृत्य कैसे हुई?" मैंने शराब खींचने वाले की पत्नी से पूछा।

"वह इतनी पीने लगा था कि उसी म. मर गया," उसने कहा।

"वह किस जगह दफनाया गया है?"

"गाँव के ठीक उस छोर पर अपनी पत्नी के बराबर म.।"

"क्या मुझे कोई वहाँ तक पहुँचा सकता है?"

"क्यों नहीं। ऐ बान्का! अरे, उस बिल्ली का पीछा छोड़ देख इन्ह. कब्रिस्तान ले जा और वहाँ पोस्टमास्टर की कब्र बता देना।"

चिथड़ों म. लिपटा, लाल बालों और एक आँख वाला एक लड़का दौड़ा हुआ बाहर आया और मुझे गाँव के छोर की ओर ले चला।

"क्या तुम पोस्टमास्टर को जानते थे?" रास्ते म. मैंने उससे पूछा।

"जानता क्यों नहीं। वह मुझे सीटी बनाना सिखाते थे। जब भी वे दारूघर से बाहर निकलते (भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे!) तो हम चिल्लाते हुए उनके पीछे पड़ जाते। कहते-- 'चाचा, चाचा हम. गिरी दो!' और वे हम. सारी गिरियाँ दे डालते। वे हमेशा हम लोगों के साथ हँसते-खेलते रहते थे।"

"अच्छा तो अब यह बताओ कि इधर से गुजरने वाले यात्रियों म. से भी कभी कोई उनको याद करता है?"

"अब यात्री आते ही कहाँ हैं? कोई सरकारी अफसर आये तो बात दूसरी है, और सरकारी अफसर मुर्दों की बात नहीं पूछते। लेकिन इस साल गर्मियों म. एक स्त्री आयी थी। उसने पोस्टमास्टर के बारे म. पूछा था और वह उनकी कब्र पर भी गयी थी।"

"कैसी स्त्री थी वह?" मैने उत्सुकता से पूछा।

"बहुत ही सुन्दर," लड़के ने कहा- "वह छह घोड़ों की गाड़ी म. आयी थी। तीन बच्चे, एक नर्स और छोटा-सा काला कुत्ता उसके साथ था। जब उसने यह सुना कि पोस्टमास्टर मर गया तो वह रो उठी और बच्चों से उसने कहा-- 'तुम चुपचाप यहीं ठहरो मैं जरा कब्रिस्तान हो आऊँ।' मैंने उसे वहाँ ले चलने के लिए कहा, लेकिन वह बोली मैं रास्ता जानती हूँ। अपने-आप चली जाऊँगी। और उसने पाँच कोपेक का चाँदी का एक सिक्का दिया। इतनी भली थी वह!"

हम कब्रिस्तान म. पहुँचे, बहुत ही ऊजाड़ स्थान था। बचाव के लिए न कोई बाड़ा था, न और कुछ। लकड़ी के क्रास जहाँ-तहाँ छितरे थे और सूरज की किरण. निर्बाध उन पर पड़ रही थीं। अपने जीवन म. इतना उदास कब्रिस्तान मैंने पहले कभी नहीं देखा।

"वृद्ध पोस्टमास्टर की कब्र यह है," रेत के एक ढूह पर उछल कर चढ़ते हुए छोटे लड़के ने कहा। ढूह म. एक काला क्रास धँसा था और कास म. तांबे की एक देव प्रतिमा जड़ी थी।

"क्या वह स्त्री यहीं आयी थी?" मैंने पूछा।

"हाँ," वान्का ने जवाब दिया, "मैं दूर से छिपकर देख रहा था। वह यहां आकर गिर पड़ी और देर तक रोती ही पड़ी रही। इसके बाद वह गांव म. गयी, पादरी को बुलाकर उसे कुछ धन दिया और चली गयी। जाते समय उसने मुझे पांच कोपेक का चाँदी का एक सिक्का और दिया। इतनी अच्छी स्त्री थी वह!"

मैंने भी लड़के को पांच कोपेक का एक सिक्का दिया। अब मेरे हृदय म. कोई दुःख या अफसोस नहीं था-- न तो अपनी इस यात्रा पर, न उन सात रूबलों पर जो इस यात्रा म. खर्च हुए थे।

छोटी मालकिन का पिया-मिलन

किसी भी पोशाक में प्रिय, तुम बहुत आकर्षक लगती हो!

बोग्दानोविच[13]

इवान पेत्रोविच बेरेस्तोव की जागीर हमारे देश के एक दूरतम प्रान्त म. थी। अपने युवाकाल म. वह गारद म. था। सन् 1797म. नौकरी से मुक्त हो वह अपनी जागीर म. आकर बस गया और अन्त तक वहीं रहा। कुलीन घराने की एक गरीब स्त्री से उसने विवाह किया था। बच्चा होने के समय वह मर गयी। वह उस समय घर पर नहीं था, शिकार के लिए कुछ दूर गया हुआ था। वह अपना ध्यान जागीर के प्रबन्ध म. लगाने लगा जिससे उसके दिल को ढाढस मिला और अपने इस आघात को वह शीघ्र ही भूल गया। खुद अपनी योजना के मुताबिक उसने अपने मकान का निर्माण कराया, अपनी जागीर म. कपड़े की एक फैक्ट्री खड़ी की और अपनी आय को बढ़ाया। उसका मत था कि वह समूचे जिले म. सबसे ज्यादा बुद्धिमान आदमी है, और इस मत का निषेध कभी उसके पड़ोसियों ने नहीं किया जो खुद कई-कई दिन तक अपने बाल-बच्चों और शिकारी कुत्तों तक को साथ लिए, उसके घर म. आसन जमाये रहते थे। सप्ताह म. एक बार, मखमली जाकेट डाट कर, वह आस-पास का चक्कर लगाता था, छुट्टियों या उत्सवों के दिन ठाठ के साथ वह घर के कते सूत का फ्राक कोट पहनता था। वह सारा हिसाब-किताब खुद रखता था और राज्यसभा के समाचारों के सिवा और कुछ नहीं पढ़ता था। कुल मिलाकर यह एक सर्वप्रिय, किन्तु कुछ गर्वीला, आदमी था। केवल ग्रिगोरी इवानोविच मुरोम्स्की उसका निकटतम पड़ोसी -- एक मात्र ऐसा व्यक्ति था जिससे उसकी पटरी नहीं बैठती थी। वह पुराने कण्डे का रूसी कुलीन था। अपनी जागीर का अधिकांश

मास्को म. उड़ाने और अपनी पत्नी के मर जाने के बाद उसने अपने एकमात्र गाँव की-- यही गाँव अब उसके पास बच रहा था-- शरण ली और अपने आप को गलाता रहा, लेकिन कुछ भिन्न तरीके से। उसने अंग्रेजी ढंग का एक बाग बनवाया और करीब-करीब अपनी सारी जमा-पूँजी उसम. होम कर दी। उसके अस्तबल के साईस अंग्रेजी जैकियों की भाँति सजते, एक अंग्रेजी गवर्नेस उसकी लड़की को पढ़ाती और अंग्रेजी ढंग से वह अपनी जमीन म. खेती करता।

"लेकिन विदेशी तौर-तरीके रूसी अनाज के अनुकूल नहीं बैठते।"

खर्च म. काफी कमी करने के बावजूद ग्रिगोरी इवानोविच की आय बढ़ नहीं पायी और इस देहात म. भी नये कर्जों के द्वार खोजने-खटखटाने म. वह पीछे नहीं रहा। जो हो, वह एक योग्य आदमी समझा जाता था। वह पहला भू-स्वामी था जिसने 'कोर्ट आफ चान्सरी' म. अपनी जागीर बन्धक रखी। उन दिनों को देखते यह एक अत्यन्त पेचीदा और साहसपूर्ण काम था। बेरेस्तोव उसके विरोधियों और कटुतम आलोचकों म. था। नयी चीजों के प्रति घृणा बेरेस्तोव की प्रमुख विशेषता थी। अपने पड़ोसी की अंग्रेजियत उसे जरा नहीं सुहाती थी और उसम. दोष निकालते वह कभी नहीं थकता था। मेहमानों को वह अपनी जागीर म. घुमाता, वे उसकी व्यवस्था की सराहना करते और कुटिल व्यंग के साथ वह जवाब देता। "हाँ साहब इसलिए है कि पड़ोसी ग्रिगोरी इवानोविच की भाँति हम हवा म. नहीं उड़ते। न बाबा, अंग्रेजियत के पीछे अपने आपको नष्ट करना हमारे बूते का काम नहीं। अपने रूसी ढंग से ही भर पेट खाने को मिल जाये, यही बहुत है।"

यह तथा इसी तरह की अन्य फब्तियाँ, और भी अधिक नमक मिर्च के साथ पड़ोसियों के उछाह की बदौलत ग्रिगोरी इवानोविच के कानों तक पहुँचती। अंग्रेजियत का भक्त, हमारे पत्रकारों की भाँति, अपनी आलोचना सुनना बरदाश्त न करता और देहात के इस "जोयलस" को गुस्से म. भर कर भालू तथा कुँए का मेंढक कहता।

उस समय जब इन दो भू-स्वामियों के सम्बन्धों म. यह तनातनी चल रही थी, बेरेस्तोव का पुत्र अपने पिता से मिलने गाँव आया। वह 'ऐक्स' विश्वविद्यालय म. पढ़ा था और उसका इरदा फौज म. जाने का था, लेकिन इसके लिए उसके पिता ने अपनी रजामन्दी नहीं दी। इसके प्रतिकूल सरकारी नौकरी के लिए वह खुद अपने आपको सर्वथा अनुपयुक्त समझता था। सो दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े रहे और युवा अलेक्सी इसी बीच छुट्टा जीवन बिताने लगा, उसने एक खास काट की मूँछ. रखनी शुरू कर दीं, मानो हर जरूरत के लिए अपने-आप को तैयार कर रहा हो!

अलेक्सी सचमुच म. एक बहुत ही बढ़िया युवक था। और यह बड़े शौक की

बात होती यदि उस जैसा बाँका जवान कभी फौजी वर्दी म. लैस न हो पाता; और बजाय फौजी घोड़ों पर चढ़ कर अपना गौरव दिखाने के सरकारी दस्तावेंजों म. अपना सिर खपाते हुए अपना यौवन काट देता। वास्तव म. यह एक दुर्भाग्य की बात होती। शिकार खेलते समय जब वह राह की बाधाओं की परवाह न कर अपने घोड़े को हमेशा सबसे आगे सरपट दौड़ाता तो उसे देख कर पड़ोसी एक मत से कहते-- यह आदमी सरकारी अफसर बनने के लिए पैदा नहीं हुआ है। पास-पड़ोस की युवतियाँ कौतुक और बहुधा सराहना भरी नजर से उसे देखतीं-- देख कर मुग्ध तक हो जातीं लेकिन अलेक्सी बहुत ही कम उनकी ओर ध्यान देता, और वे यह सोचे बिना न रहतीं कि हो न हो इसका मन किसी के प्रेम म. फँसा है, नहीं तो इतनी उदासीनता फिर किस लिये। इसकी पुष्टि म. एक पुर्जा भी हाथों हाथ धूम गया जिस पर उसके एक पत्र के सरनामे की निम्न नकल उतारी हुई थी-- आकुलीना पेत्रोव्ना कूरोच्चकिना, मास्को, सन्त अलेक्सीस मठ के सामने, सवेल्येव ताम्बेसाज का मकान, कृपया साथ का पत्र ए. एन. आर. के पास पहुँचा द.।

जिन पाठकों को कभी देहात म. रहने का अवसर नहीं मिला, वे यह सोच तक नहीं सकते कि ये देहाती युवतियाँ कितनी मजेदार होती हैं। ताज़ी हवा म., सेब के बगीचों की छाया म., वे पलती हैं। जीवन और समाज के बारे म. किताबों से वे सारा ज्ञान ग्रहण करती है। ऐकान्त, स्वच्छन्दता और पुस्तक. कच्ची अवस्था म. ही उनम. ऐसी भावनाओं, आवेग और उद्वेगों का संचार कर देती हैं जिनसे कि शहरी सुन्दरियाँ अपरिचित होती हैं। घण्टियों की टुन-टुन देहात की इन कुमारियों को दूसरे लोक म. पहुँचा देती हैं, निकटतम नगर की यात्रा उनके जीवन की एक बहुत बड़ी घटना होती है और बाहर से आये मेहमान अमिट, और कभी-कभी तो जीवन भर न भूलनेवाली, स्मृतियाँ छोड़ जाते हैं इन युवतियों के अल्हड़पन और अटपटी बातों पर-- जो कि उनम. पाई जाती हैं-- बेशक कोई भी हँस सकता है, लेकिन किसी सतही दर्शक की यह हँसी उनके भीतरी गुणों पर पानी नहीं फेर सकती। और उनका सर्वप्रमुख गुण है चरित्र की विशिष्टता, हर एक का अपना व्यक्तित्व जिसके बिना, जॉन पॉल रिख्तर के शब्दों म., कोई भी मानव जीवधारी महान नहीं बन सकता। माना कि बड़े नगरों की स्त्रियाँ खूब-- कहीं अधिक - शिक्षित होती हैं लेकिन समाज का रंग-ढंग शीघ्र ही उन्ह. सपाट बना देता है, और स्त्रियों के मस्तिष्क तथा उनकी टोपियों म. कोई भेद नहीं रहता। यह कह कर न तो हम उनके काजी बनना चाहते हैं और न निन्दक, फिर भी जैसा कि किसी पुराने लेखक ने कहा है-- आँखों देखी सचाई से इन्कार नहीं किया जा सकता।

ऐसी स्थिति म. यह सहज ही कल्पना की जाती सकती है कि अलेक्सी ने इन युवतियों पर क्या प्रभाव डाला होगा। पहली बार उन्होंने एक ऐसे युवक को देखा जो निराशा म. डूबा था, जिसके भ्रम टूट चुके थे और जो शुन्य हुई खुशियों तथा पालामारे यौवन की बात. करता था; और सब से बढ़ कर यह कि अपनी उँगली म. वह एक काली अँगूठी पहनता था जिसम. नग की जगह मृत्यु का चेहरा जड़ा था। यह सब देहात के लिए एक सर्वथा नयी चीज थी। इसने एक सिरे से सभी युवतियों म. एक अजीव खलबली मचा दी।

लेकिन इनम. अंग्रेजियत के भक्त भू-स्वामी की लड़की लीजा (या बेत्सी जैसा कि उसका पिता उसे कहा करता था) जितना अधिक उसके बारे म. सोचती उतना अन्य कोई नहीं। दोनों के पिता एक-दूसरे के यहाँ आते-जाते नहीं थे, सो उसने अलेक्सी को अभी देखा तक नहीं था, जबकि पास-पड़ोस की अन्य सभी युवती स्त्रियाँ सिवा उसके अन्य किसी चीज के बारे म. बात नहीं करती थीं। लीजा सत्रह वर्ष की थी। उसके आकर्षक गेहुआँ चेहरे पर दो काली आँख. चमकती थीं। अपने पिता की अकेली सन्तान थी इसलिए, कहने की आवश्यकता नहीं, लाड़ और दुलार म. पली और खूब मुँह चढ़ी थी। वह कभी निश्चल न बैठती, हर घड़ी कोई न कोई शैतानी करती रहती, जिसे देख कर उसके पिता खुश होते और उसकी गवर्नेस मिस जैक्सन की जान पर बन आती। यह मनहूस बहुत ही कसी करारी चालीस वर्ष की अविवाहिता महिला थी। वह अपने गालों को चिकनाती और भौंहों को रंगती थी, हर छह महीने शुरू से आखिर तक "पमेला" उपन्यास पढ़ती थी। कुल मिला कर वह साल म. दो हजार रूबल पाती थी और 'इस बर्बर रूसी देश' को लेकर जब तब झींकती रहती थी।

लीजा की सेवा के लिए एक दासी नियुक्त थी। नास्त्या उसका नाम था। आयु म. वह लीजा से कुछ बड़ी थी, लेकिन वह भी उतनी ही उड़नछू थी जितनी कि उसकी युवा मालकिन। लीजा उसे बहुत ही चाहती थी, अपने सारे भेद उसे बता देती थी और अपनी शैतानियों की साँठ-गाँठ म. उससे मदद लेती थी। संक्षेप म. यह कि प्रिलूचिनो गाँव म. नास्त्या का स्थान प्राचीन ट्रैजेडियों म. चित्रित कतिपय विश्वास पात्री सखियों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था।

"क्या आज मैं बाहर जा सकती हूँ?" एक दिन सुबह अपनी मालकिन का सिंगार करते हुए नास्त्या ने पूछा।

"बेशक! कहाँ जाओगी?"

"तुगीलोवो जाना है बेरेस्तोवों के यहाँ। आज उनके बावर्ची की पत्नी का जन्म दिन है। वह कल भोजन का निमंत्रण देने आयी थी।"

"क्या सचमुच!" लीजा ने कहा– "मालिक तो छत्तीस का अंक बने हुए हैं, लेकिन उनके नौकर एक-दूसरे को दावत देते हैं।"

"मालिकों के झगड़े मालिक जान.", नास्त्या ने जवाब दिया– "फिर मैं तो तुम्हारी नौकर हूँ, तुम्हारे पिता की नहीं। तुम म. और युवा बेरेस्तोव म. तो अभी कोई झगड़ा हुआ नहीं है। सो बूढ़ों को आपस म. ही निबट लेने दो। हम क्यों बीच म. पड़े।"

"अच्छा तो जाओ नास्त्या। अलेक्सी बेरेस्तोव को भी जरा देख आना, और फिर ठीक-ठीक बताना कि उसका चेहरा-मोहरा कैसा है और किस किस्म का वह आदमी है।"

नास्त्या ने इसका वचन दिया और लीजा, बड़ी बेचैनी से अपनी दासी के लौटने की दिन-भर बाट जोहती रही। नास्त्या कहीं साँझ को लौटी।

"हाँ तो लीजावेता ग्रिगोरियेव्ना", कमरे म. पाँव रखते न रखते उसने कहा-- "मैंने युवा बेरेस्तोव को देखा; खूब अच्छी तरह से देखा। दिन-भर हम एक ही जगह रहे।"

"तो?" लीजा ने कहा-- "बताओ न, एकदम शुरू से लेकर आखिर तक सारा हाल मुझे बताओ!"

"सो तो बताऊँगी ही। हम सब म., अनीसिया येगोरोव्ना, नेनीला, दून्या वहाँ पहुँचे..."

"अरे इन सबको छोड़ो। हाँ तो फिर क्या हुआ?"

"टोको नहीं। शुरू से आखिर तक सारा हाल मुझे वताने दो। हाँ तो हम ठीक भोजन के समय वहाँ पहुँचे। कमरा लोगों से भरा था। कोल्बिन और जखारियेव के नौकर भी वहाँ मौजूद थे। भण्डारी की पत्नी और उसकी लड़कियाँ ख्लुपिन के नौकर..."

"यह सब छोड़ो मुझे बेरेस्तोव के बारे म. बताओ।"

"एक मिनट ठहरो। सो हम सब मेज पर बैठ गये। भण्डारी की पत्नी मेजबान की बगल म. बैठी और मैं उसकी बराबर म.... लड़कियों ने थूथनी चढ़ा ली, लेकिन मैं भला उनकी क्यों पर्वाह करती?"

"ओह नास्त्या, छोड़ो यह सब। तुम्हारे इस अन्तहीन वर्णन ने तो नाक म.

दम कर दिया!"

"तुम भी कितनी अधीर हो! हाँ तो भोजन करने के बाद हम मेज से उठे... बहुत ही बढ़िया भोजन था, पूरे तीन घण्टे तक चलता रहा... लड्डू थे- लाल, नीले और धारीदार हाँ तो हम मेज से उठे और जो पकड़े सो साई', खेलने के लिए बगीचे म. चले गये। वहीं युवा मालिक भी आ गये।

"ओह!... हाँ, तो क्या यह सच है कि देखने म. वह बहुत सुन्दर है?"
"बहुत ही लुभावना चेहरा है, सचमुच म. सुन्दर छरहरा बदन, लम्बा कद, गुलाब से लाल गाल..."

"सच? मैं तो यह समझी थी कि वह पीतवर्ण होगा। तो तो तुम्ह. वह कैसा लगा-- कुछ उदास-सा विचारों म. डूबा?"

"सो कुछ नहीं! उस जैसा मगन जीव तो मैंने अपने जीवन म. पहले कभी नहीं देखा। जाने क्या सूझी, वह हमारे साथ चोर चोर खेलने के लिए तैयार हो गया।"

"तुम लोगों के साथ चोर चोर नहीं, तुम लोगों के साथ भला वह क्यों खेलेगा?"

"झूठ नहीं कहती, वह हम लोगों के साथ चोर चोर खेला। इतना ही नहीं जब वह किसी को पकड़ लेता तो उसे चूम लेता।"

"ओह नास्त्या, यह मनगढ़न्त किस्सा छोड़ो।"

"मनगढ़न्त नहीं। खुद मेरे लिए भी उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल हो गया। दिन भर वह हम लोगों के साथ रहा।"

"लेकिन सुनने म. तो यह आता है कि वह प्रेम म. फँसा है, किसी अन्य की ओर नजर तक उठा कर नहीं देखता।"

"हो सकता है। लेकिन यह भी निश्चित है कि उसने मेरी ओर देखा, और भण्डारी की लड़की तान्या की ओर भी उसकी नजर गयी, न ही उसने कोल्बिन की पाशा को नजरन्दाज किया... सच तो यह है कि उसने-- शैतान कहीं का-- हम म. से किसी को भी नहीं बख्शा!"

"बड़े अचरज की बात है। हाँ तो घर के लोग उसके बारे म. क्या कहते हैं?"

"कहते हैं कि वह बहुत ही बढ़िया आदमी है-- सदा हँसमुख और मेहरबान। केवल एक ही बात उसम. बुरी है लड़कियों के पीछे भागने का उसे चस्का है। लेकिन मुझे तो इसम. भी कोई दोष नहीं दिखाई देता यह कोई टिकाऊ ऐब नहीं!"

"ओह, क्या ही अच्छा होता अगर मैं भी उसे देख पाती!" लीजा ने उसाँस भरी।

"अरे, यह कौन मुश्किल बात है। तुगीलोवो यहाँ से कुछ दूर नहीं है-- केवल दो ढाई मील होगा। घूमती हुई उधर निकल जाओ, या घोड़ा कसवा लो, निश्चय ही उससे भ.ट हो जाएगी। वह हर रोज एकदम तड़के अपनी बन्दूक उठाये शिकार खेलने के लिए बाहर निकलता है।"

"ओह नहीं, यह भला कैसे हो सकता है। वह समझेगा कि मैं उससे मिलने के लिए पागल हो उठी हूँ। इसके अलावा, हम दोनों के पिताओं म. अनबन, है। सो मैं कैसे उसके सामने प्रकट हो सकती हूँ... लेकिन सुनो, नास्त्या, मैं तुम्ह. एक बात बताती हूँ। मैं एक देहातिन लड़की का भेष बना लूँगी!"

"ठीक। तुम यही करो। घर का कता-बुना ब्लाउज पहन लो, ऊपर से एक सराफान डाल लेना। फिर कोई डर नहीं, बेधड़क तुगीलोवो का रास्ता पकड़ना। मेरी बात गाँठ बाँध लो, बेरेस्तोव तुम्ह. नजरन्दाज नहीं कर सकता!"

"और ठेठ देहातियों की भाँति मैं बात करूँगी! ओह नास्त्या, मेरी प्यारी नास्त्या, कितनी बढ़िया सूझ है यह!"

अपनी इस आकर्षक योजना को अमल म. लाने का दृढ़ निश्चय कर लीजा सोने के लिए चली गयी। अगले दिन वह अपनी योजना की तैयारियों म. जुटी रही। बाजार से गाढ़े का मोटा कपड़ा, नीली छींट और पीतल के बटन मँगवाये। नास्त्या की मदद से एक ब्लाउज और सराफान काटा और जितनी भी दासियाँ थीं उन सब को इस काम म. जुटा दिया। नतीजा इसका यह कि साँझ तक हर चीज तैयार हो गयी। लीजा ने अपनी इस नयी पोशाक को पहना, आईने के सामने जा कर खड़ी हो गयी, और खुद उसे भी यह मानना पड़ा कि इतनी सुन्दर वह पहले कभी नहीं दिखी थी। इसके बाद उसने अपने पार्ट का रिहर्सल किया। झुक कर माथा नवाया, इधर से उधर टहली; मिट्टी की बिल्ली की भाँति जिसका सिर चूलदार होता है, अपने सिर को कभी वह एक बगल फ.कती और कभी दूसरी बगल; स्थानिक बोली म. उसने बातचीत शुरू की, जब हँसी आती तो वह आस्तीन से अपना मुँह ढक लेती। नास्त्या को यह सब एकदम ठीक जंचा, केवल एक ही कठिनाई का उसे सामना करना पड़ा। वह यह कि जब वह नंगे पाँव अहाते म. चली तो ढेले उसके कोमल पाँवों म. गड़ते, रेत और कंकर इस बुरी तरह चुभते कि बरदाश्त से बाहर। लेकिन नास्त्या ने इस मुसीबत को भी हल कर दिया। उसने लीजा के पाँव का नाप लिया, गड़रिये त्रोफिम की खोज म. खेतों की ओर भाग गयी और पेड़ की खाल के चप्पल बनाने का उसे

आदेश दिया। अगले दिन सूरज निकलने से पहले ही लीजा जाग गयी। घर म. अभी सब सो रहे थे। नास्त्या दरवाजे पर खड़ी गड़रिये की बाट देख रही थी। सिंगा बजने की आवाज आयी और गाँव के रेवड़ भू-स्वामी के घर के पास से गुजरने लगे। त्रोफिम आया और चटक रंग चप्पलों का जोड़ा नास्त्या के हाथों म. उसने थमा दिया। नास्त्या ने चप्पलों की बनवायी, पचास कोपेक, उसे अदा कर दी। देहाती पोशाक लीजा ने चुपचाप– बिना कोई आवाज किए पहनी, मिस जैक्सन के बारे म. फुसफुसा कर नास्त्या को कुछ आदेश दिये, पिछले पोर्च के रास्ते घर से बाहर निकली और साग-भाजी की क्यारियों को फान्दती खुले खेतों की ओर लपक चली।

पूर्वी आकाश म. ऊषा का उजाला फैल रहा था और बादल सुनहरी पाँतों म. सज्जित हो रहे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे वे सूरज की-- अपने प्यार की अगुवानी म. पाँत बाँध कर खड़े हो रहे हों। पारदर्शी आकाश, गुलाब की ताजगी, ओस, भीनी बयार और पक्षियों का संगीत लीजा के हृदय म. अलौकिक आनन्द का संचार कर रहा था। इस भय से कि कहीं कोई जान पहचान का आदमी न मिल जाये, उसके पाँव चल नहीं रहे थे बल्कि उड़ रहे थे। जब वह उस वन के निकट पहुँची जो उसके पिता की जागीर की सीमा का सूचक था, तो उसके पग धीमे पड़ गये। यही वह जगह थी जहाँ उसे अलेक्सेई की प्रतीक्षा करनी थी। उसका हृदय बुरी तरह धड़क रहा था... क्यों, यह वह खुद भी नहीं जानती थी। लेकिन वह धुकधुकापन ही है जो यौवन के हमारे दुस्साहसिक कार्यों का मुख्य आकर्षक बनाता है। लीजा ने वन के धुंधलके म. प्रवेश किया। वन की गहराई म. से उठती हुई आवाज. उनके कानों से आकर टकरायी। उसका उल्लास धीरे-धीरे बढ़ता गया। धीरे-धीरे वह सुखद कल्पनाओं म., तैरने लगी। उसने सोचा... लेकिन कौन है जो यह थाह पा सके कि वन के वातावरण म. सुबह पाँच और छह बजे के बीच, सत्रह वर्ष की युवती क्या-कुछ सोचती है? विचारों म. खोयी हुई वह आगे बढ़ती गयी। पथ के इधर-उपर ऊँचे पेड़ छाया किये थे। तभी एक बहुत बढ़िया शिकारी कुत्ता भौंकता हुआ सहसा उसकी ओर लपका। लीजा भय से चीख उठी। करीब-करीब उसी क्षण किसी के चिल्लाने की आवाज सुनायी दी- "तु बो, स्वोगार, इसी!" और झाड़ियों के पीछे से एक युवा शिकारी प्रकट होता दिखाई दिया।

"डरो नहीं सुन्दरी!" उसने लीजा से कहा-- "मेरा कुत्ता किसी को नहीं काटता!"

लीजा अब अपने भय से उबर आयी थी। स्थिति से लाभ उठाने म. उसने जरा भी देर नहीं की। भय और लज्जा का अभिनय करते हुए बोली--

"मुझे डर लगता है, श्रीमान देखो न कितना भयावना है यह। जैसे फिर झपटने के लिए तैयार हो!" इस बीच अलेक्सी (पाठक इस अजनबी को पहचान गये होंगे) स्थिर दृष्टि से किसान बाला को देख रहा था। वह बोला--

"अगर डर लगता है तो मैं तुम्हारा साथ दे सकता हूँ। क्या तुम मुझे अपने साथ चलने की अनुमति दोगी?"

"चलने से कौन रोक सकता है", लीजा ने कहा-- "सड़क सभी के लिए खुली है।" "तुम किस गाँव से आ रही हो?"

"प्रिलूचिनो। मैं बासिली लोहार की कन्या हूँ। कुकुरमुत्तों की खोज म. इधर निकल आयी।" (लीजा ने डोरी से लटकी छाल की एक टोकरी को झुलाया।) "और आप कौन हैं, श्रीमान? क्या तुगीलोवो से आ रहे हैं?"

"बिल्कुल वहीं से", अलेक्सी ने जवाब दिया-- "मैं छोटे मालिक का अरदली हूँ।"

अलेक्सी समान स्तर पर उससे मिलना बतियाना चाहता था। लीजा म. एक नजर उस पर डाली और हँसते हुए बोली--

"नहीं, आप अरदली नहीं हैं। मेरी आँखों को आप धोखा नहीं दे सकते। मैं साफ देख रही हूँ कि आप खुद छोटे मालिक हैं।"

"यह तुमने कैसे जाना?"

"तुम्हारी हर चीज से।"

"हर चीज से नहीं, ठीक-ठीक बताओ।"

"माना मालिक को अन्य लोगों से पहचानना कठिन बात हो! तुम्हारे वे का ढंग भिन्न है, तुम्हारी बातचीत का लहजा भिन्न है और तुम अपने कुत्ते को भी इस तरह नहीं पुकारते जैसे कि हम पुकारते हैं।"

लीजा ने अलेक्सी को मोह लिया। देहात की सुन्दर लड़कियों के साथ किसी औपचारिकता के साथ पेश आने का आदी न होने के कारण उसने लीजा की कमर म. अपनी बाँह डालनी चाही; लेकिन लीजा उचक कर पीछे हट गयी और सहसा इतना सर्द तथा निषेधात्मक भाव उसने अपने चेहरे पर धारण कर लिया कि अलेक्सी ने- मन ही मन प्रसन्न होने पर भी-- आगे डग नहीं बढ़ाया।

"अगर आप चाहते हैं कि आगे भी हम मित्र बने रह.", लीजा ने तपाक से कहा-- "तो आपको इस तरह बेसुध नहीं होना चाहिए।"

"बातचीत का यह ढंग तुम्ह. किसने सिखाया?" खुल कर हँसते हुए अलेक्सी ने कहा– "शायद यह तुमने मेरी मित्र, तुम्हारी छोटी मालकिन की दासी नास्त्या से सीखा है। अब कोई नहीं कह सकता कि शिक्षा प्रसार व्यापक नहीं है!"

लीजा ने अब अनुभव किया कि अपनी वेष-भूषा के प्रतिकूल वाक्य उसके मुँह से निकल गये हैं। वह तुरत सम्भली और अपनी भूमिका के अनुसार उसने अपने-आप को बना लिया।

"हाँ तो", उसने कहा– "क्या तुम समझते हो कि बड़े घराने म. मेरा कभी आना-जाना नहीं होता? वहाँ मुझे सभी तरह की बात. देखने-सुनने को मिलती हैं। लेकिन अगर मैं यहाँ तुम्हारे साथ बातों म. उलझी रही तो एक भी कुकुरमुत्ता नहीं बटोर पाऊँगी। सो श्रीमान, आप अपना रास्ता पकड़. और मैं अपना। अच्छा तो विदा!"

लीजा ने खिसकने का भाव दिखाया। अलेक्सी ने उसका हाथ पकड़ा और उसे जाने न दिया।

"तुम्हारा नाम क्या है, सुन्दरी?"

"आकुलीना", अलेक्सी के हाथ से अपनी उँगलियों को छुड़ाने का प्रयत्न करते हुए लीजा ने कहा– "मुझे जाने दो, श्रीमान। मुझे अब घर लौट जाना चाहिए।"

"हाँ तो मेरी मित्र आकुलीना," अलेक्सी ने कहा– "यह बात पक्की समझो कि एक दिन मैं तुम्हारे पास आऊँगा और तुम्हारे पिता लोहार से मिलूँगा।"

"क्या-आ-आ?" लीजा ने चिल्ला कर कहा– "भगवान के लिए ऐसा न करना। अगर घर पर यह पता चल गया कि मैं जंगल म. एकदम अकेली नए आदमी से बतिया रही थी तो मेरी शामत आ जाएगी। मेरा पिता, वासिली लोहार मेरी हड्डी-पसली एक कर देगा!"

"लेकिन तुम से तो फिर भ.ट होनी चाहिए न?"

"कुकुरमुत्तों के लिए मैं इधर आती ही रहती हूँ।"

"लेकिन कब?"

"यह मैं कैसे कह सकती हूँ- शायद कल ही आऊँ।"

"प्यारी आकुलीना, अगर मैं धृष्टता कर सकता तो तुम्हारा चुम्बन जरूर लेता। सो कल ही आना, इसी समय-- देखो, भूलना, नहीं!"

"अच्छी बात है।"

"निराश तो नहीं करोगी?"

"नहीं।"

"कसम खाओ।"

"पवित्र क्रास की कसम, मैं आऊँगी।"

दोनों युवा जन एक-दूसरे से विदा हुए। लीजा वन से बाहर निकल आयी। खेतों को उसने पार किया, चुपचाप बगीचे म. घुसी और सीधे खलिहान की ओर लपकी जहाँ नास्त्या उसकी बाट म. खड़ी थी। यहाँ उसने अपना भेष उतार डाला, असली कपड़े पहने और अपनी मन-की-मीत दासी के उत्सुक सवालों का खोये से अन्दाज म. जवाब देती ड्राइंगरूम म. पहुँची। मेज लगी थी, नाश्ता तैयार था और मिस जैक्शन, इतने सबेरे से ही पाउडर पोते और मक्खी जैसी पतली कमर म. सौ बल डाले, डबल रोटी के महीन कतले काट रही थी। लीजा के पिता ने अन्धेरे मुँह घूमने जाने के लिए, उसकी प्रशंसा की। उन्होंने कहा, "पौ फटने से पहले बिस्तरा छोड़ने से अधिक स्वास्थ्यप्रद और कोई चीज नहीं है।" इसके बाद, अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं से संकलित दीर्घ जीवन के अनेक उदाहरणों का उन्होंने उल्लेख किया; बताया कि वे सब लोग जो सौ से भी अधिक सालों तक जीवित रहे, वोद्का से परहेज करते थे और जाड़ा हो चाहे गर्मी, पौ फटने से पहले उठते थे। लीजा के कानों म. यह सब नहीं पड़ा। वह मन ही मन प्रातः मिलन की सारी परिस्थितियों का समूची बातचीत का जो आकुलीना और युवा शिकारी के बीच हुई, अवलोकन कर रही थी। उसकी आत्मा ने उसे कचोटा। उसने अपने आपको आश्वस्त करना चाहा कि बातचीत म. शालीनता की सीमा का जरा भी उल्लंघन नहीं हुआ, और यह कि उसके इस अल्हड़पन का कोई बुरा नतीजा नहीं निकल सकता। लेकिन बेकार। आत्मा की आवाज के सामने तर्क-बुद्धि की नहीं चली। उसकी बेचैनी का मुख्य कारण यह था कि वह कल फिर वहाँ पहुँचने का वचन दे आयी थी। अपनी गहरी शपथ को तोड़ने का निश्चय वह कर भी लेती, -उस सीमा तक वह पहुँच भी गयी थी। लेकिन डर यह था कि अलेक्सी, उसकी बेकार प्रतीक्षा करने के बाद लोहार की लड़की की खोज करता हुआ गाँव म. आ सकता है और असल आकुलीना को देख कर जो कि एक गावदुम चेचक मुँहदाग लड़की थी-- सारा भेद खुल जाएगा, वह जान लेगा कि किस प्रकार लीजा ने झूठा जाल रचा था। यह सोच कर वह काँप उठी और उसने, आकुलीना के भेष म., सुबह फिर वन म. जाने निश्चय बरकरार रखा।

अलेक्सी के उल्लास म. ऐसी कोई दुविधा नहीं थी। दिन भर वह अपनी नयी परिचिता के बारे म. ही सोचता रहा और रात को भी उसकी गेहुँवा छवि उसके सपनों म. तैरती रही। पौ फटने से पहले ही वह उठा और कपड़े पहन कर तैयार हो गया। अपनी बन्दूक म. कारतूस तक भरने म. वह नहीं उलझा, अपने फरमाबरदार कुत्ते स्बोगार के साथ सीधा बाहर निकला और मिलन स्थान की ओर लपक चला। आधे घण्टे की असह्य प्रतीक्षा के बाद अन्त म., झाड़ियों के बीच उसे नीले सराफान की एक झलक दिखायी दी और अपनी प्यारी आकुलीना से मिलने के लिए दौड़ कर आगे बढ़ गया। उसकी उल्लासपूर्ण कृतज्ञता का लीजा ने मुस्कराकर जवाब दिया। लेकिन उसके चेहरे की व्यथा और उदासी अलेक्सी से छिपी न रही। उसने तुरन्त उसे भाँपा और पूछा कि क्या बात है। लीजा ने स्वीकार किया कि अपने इस आचरण को वह अब चिन्तनीय समझती है, और यह कि उसका हृदय पश्चाताप का अनुभव कर रहा है। अपने वचन को तोड़ना उसके लिए सम्भव नहीं था इसलिए वह चली आयी, लेकिन यह उसकी आखिरी भ.ट होगी, और उसने अनुरोध किया कि वह खुद भी ऐसा परिचय को आगे न बढ़ाए जिसका नतीजा उनके लिए भला नहीं हो सकता। उसके इन भावों और विचारों को, बावजूद इसके कि उसने उन्ह. देहाती बोली म. व्यक्त किया था, सुन कर अलेक्सी चकित हुआ। गाँव की सीधी सादी लड़की म. ऐसे भावों का होना एक असाधारण बात थी। आकुलीना को अपने निश्चय से पलटाने के लिए उसने अपनी सारी वाक्‌शक्ति से काम लिया; उसने उसे विश्वास दिलाया कि उसके इरादे निष्पाप थे, उसने शपथ ली कि वह ऐसा कोई काम नहीं करेगा जिसे लेकर उसे पछताना पड़े, उसकी मर्जी के बिना वह एक उँगली तक नहीं हिलाएगा, उसने चिरौरी की कि एकान्त म. उससे मिलने के सुख से वह उसे वंचित न करे, अगर रोज नहीं तो तीसरे दिन या सप्ताह म. केवल दो ही दिन। सच्चे अनुराग भरे शब्दों का वह प्रयोग कर रहा था और उस समय, उसे ऐसा लग रहा था मानो प्रेम ने उसे वास्तव म. अभिभूत कर दिया हो।

लीजा बिना कुछ कहे चुपचाप उसकी बात सुनती रही। जब वह अपनी बात खत्म कर चुका तो उसने कहा--

"मुझे वचन दो कि मेरी खोज म. तुम कभी गाँव का चक्कर नहीं लगाओगे या मेरे बारे म. वहाँ जाकर पूछ-ताछ नहीं करोगे। मुझे वचन दो कि मेरी मर्जी से नियत भ.टों के अलावा तुम मुझसे मिलने का प्रयत्न नहीं करोगे।"

अलेक्सीस क्रास की शपथ खाते हुए वचन देने जा रहा था कि लीजा ने उसे रोका और मुस्कराते हुए कहा--

"शपथ की जरूरत नहीं। तुम्हारी जुबान ही मेरे लिए काफी है।"

इसके बाद ये बहुत ही मित्रतापूर्ण ढंग से बतियाते और अगल-बगल वन म. टहलते रहे। उनकी बातों का सिलसिला तभी भंग हुआ जब लीजा ने कहा--

"अब घर लौटने का समय हो गया।"

दोनों एक-दूसरे से विदा हुए। अलेक्सी अब अकेला रह गया। उसकी समझ म. नहीं आ रहा था कि देहात की एक सीधी-सादी लड़की केवल दो बार की भ.ट म., इतने असंदिग्ध रूप म. किस प्रकार उस पर हावी हो गयी। आकुलीना के साथ उसके सम्बन्धों म. नवीनता का एक अजीब आकर्षण था और हालाँकि लीजा के निर्देश उसे दुस्सह मालूम होते थे, अपना वचन भंग करने की बात कभी उसके दिमाग म. नहीं आयी। सच पूछो तो, बावजूद इसके कि वह एक डरावनी अँगूठी पहने रहता था, उसके खतों म. रहस्यात्मकता का पुट मिला रहता था, टूटे हुए सपनों का वितान उन पर तना रहता था-- अलेक्सी एक भला और भोला युवक था। उसका हृदय दाग धब्बों से मुक्त था और वह अत्यन्त निष्छल आनन्दों म. रस लेना जानता था।

अगर केवल अपने मन को खुश करने की बात होती तो हम विस्तार के साथ इन युवा प्रेमियों के अभिसार का, दिन-दिन बढ़ते हुए उनके पारस्परिक प्रेम और विश्वास का, उनकी व्यस्तताओं और बातचीत का वर्णन करते। लेकिन हम जानते हैं कि हमारे अधिकांश पाठक इसम. रस नहीं ले सक.गे। इस तरह के सविस्तार वर्णन बहुत उबा देने वाले होते हैं। इसलिए उन्ह. दरगुजर कर हम केवल इतना ही यहाँ कहना चाह.गे कि दो महीने बीतते न बीतते हमारा अलेक्सी प्रेम म. पूरी तरह डूबने-उतराने लगा और लीजा अधिक प्रत्यक्ष न होते हुए भी-- करीब-करीब उतनी ही प्रेम म. डूबी थी। दोनों वर्तमान ही म. मगन थे, और भविष्य की जरा भी चिन्ता नहीं करते थे।

अटूट बन्धन म. गूँथने की बात अनेक बार उनके दिमाग म. आयी, लेकिन उन्होंने कभी एक-दूसरे पर उसे प्रकट नहीं किया। इसका कारण समझने के लिए कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं। अपनी प्यारी आकुलीना से सम्बद्ध होते हुए भी अलेक्सी उस दूरी से पूर्णतया परिचित था जो कि उसके और एक गरीब किसान लड़की के बीच मौजूद थी। यही हाल लीजा का था। वह उस दुश्मनी से परिचित थी जो दोनों के पिताओं के बीच मौजूद थी और उनम. मेल होने की बात वह सोच तक नहीं सकती थी। इसके अलावा तुगीलोवो के उत्तराधिकारी को प्रिलूचिनो गाँव के एक लोहार की लड़की के पाँवों पर झुका हुआ देखने की रोमाण्टिक आशा भी अनजाने

ही उसके हृदय को गुदगुदाती थी। लेकिन इसी बीच एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना घटी जिसने एक-दूसरे की नजरों म. उनकी स्थिति को एक नयी दिशा म. मोड़ दिया।

बहुत ही सुहावना शीतल प्रातः था (वैसा ही जैसे कि पतझड़ के दिनों म. हमारे रूस म. बहुधा होते हैं)। इवान पेत्रोविच बेरेस्तोव घोड़े पर घूमने निकला। यह सोचकर कि हो सकता है जरूरत पड़ जाये, उसने पांच या छह ग्रेहाउण्ड शिकारी कुत्ते, अपने साईस और खटखटा लिये हुए कुछ दास लड़कों को भी उसने अपने साथ ले लिया। ठीक उसी समय बढ़िया मौसम से उल्लसित होकर, ग्रिगोरी इवानोविच मुरोम्स्की ने भी अपनी घोड़ी को कसने का आदेश दिया और अंग्रेजी रंग म. रंगी अपनी जागीर को पार कर चला। जब वह जंगल के निकट पहुँचा तो अपने पड़ोसी पर उसकी नजर पड़ी जो लोमड़ी की फर का अस्तर लगी जाकेट पहने गर्व के साथ अपनी काठी पर बैठा उस खरगोश के प्रकट होने की बाट देख रहा था जिसे उसके दास लड़के खटखटा बजाकर तथा चिल्लाकर झाड़ियों म. से खदेड़ने का प्रयत्न कर रहे थे। अगर पहले से अन्दाजा होता तो इसम. कुछ भी शक नहीं कि ग्रिगोरी इवानोविच किसी अन्य दिशा म. मुड़ जाता। लेकिन वह एकदम अप्रत्याशित रूप म. बेरेस्तोव के सामने आ पहुँचा, केवल कुछ ही गज की दूरी दोनों को एक दूसरे से अलग किए थी। अब कोई चारा नहीं था। मुरोम्स्की, जो सिर से पाँव तक पूरा अंग्रेज था, घोड़ा बढ़ाकर अपने शत्रु के निकट पहुँचा और अदब से उसका अभिवादन किया। जंजीर म. बंधे भालू की भाँति जिसे उसके मालिक ने कुलीनों के सामने सिर झुकाने का आदेश दिया हो, बेरेस्तोव ने भी बड़ी शालीनता से उसका अभिवादन किया। उसी समय खरगोश झाड़ियों म. से उछल कर बाहर आ गया और खुले खेतों की ओर भाग चला। बेरेस्तोव और उसके साईस ने गला फाड़ कर हाँक लगायी, अपने कुत्तों को उकसाया और खुद भी पूरी तेजी से खरगोश के पीछे लपके। मुरोम्स्की का घोड़ा शिकार का कतई अभ्यस्त नहीं था। वह चमक कर भाग खड़ा हुआ। मुरोम्स्की ने, जो अपने को बढ़िया घुड़सवार मानता था, घोड़े की रास नहीं खींची। वह मन ही मन खुश था कि इस घटना की बदौलत एक अप्रिय सम्मिलन से उसे छुटकारा मिल गया। लेकिन घोड़ा अन्धाधुन्ध दौड़ता एक खाई के कगारे पर पहुँचा जिसे उसने तब तक नहीं देखा था और एकाएक सकपका कर पलटा। नतीजा इसका यह कि मुरोम्स्की काठी पर बैठा नहीं रह सका। वह पाला-मारी कड़ी धरती पर आ गिरा। वह वहीं पड़ा कबूतर की दुम अपने घोड़े को कोसता रहा। वह भागता ही गया। फिर जैसे उसे चेत हुआ और अपनी पीठ

को हल्का, सवार-विहीन अनुभव करते ही वह रुक गया। अपने घोड़े को दौड़ाता इवान पेत्रोविच भी वहाँ आ पहुँचा और उसने ग्रिगोरी इवानोविच से पूछा कि कहीं चोट तो नहीं लगी। इस बीच साईस अपराधी घोड़े को लौटाया और उसकी रास थाम कर खड़ा हो गया। उसने सहारा देकर मुरोम्मकी को घोड़े पर सवार कराया और बेरेस्तोव ने उसे अपने घर ले जाने का निमंत्रण दिया। मुरोम्स्की से इनकार करते नहीं बना। इस प्रकार बेरेस्तोव खरगोश और अपने शत्रु को साथ लिए, जो घायल था और एकदम युद्धबन्दी सरीखा मालूम होता था, विजेता की भाँति घर लौटा।

दोनों पड़ोसी नाश्ता करने बैठे और मित्रभाव से बतियाते रहे। मुरोम्स्की ने बेरेस्तोव से स्वीकार किया कि उसके बदन का एक-एक जोड़ हिल गया है और उसके लिए यह सम्भव नहीं है कि अपने घोड़े पर सवार होकर घर लौट सके। सो अच्छा हो अगर वह अपनी गाड़ी जोतवा दे। बेरेस्तोव उसे दरवाजे तक छोड़ने आया और मुरोम्स्की ने उसे उस समय तक नहीं छोड़ा जब तक कि उससे वचन नहीं ले लिया कि वह अगली ही सुबह, अलेक्सी इवानोविच के साथ उसके घर म. भोजन पाकर उसे गौरवान्वित करेगा। इस प्रकार, कबूतर की दुम घोड़े की भीरुता की वजह से, पुरानी और खूब गहरी जड़ जमी दुश्मनी के अन्त होने की सम्भावना पैदा हो गयी।

ग्रिगोरी इवानोविच के घर पहुँचते ही लीजा दौड़ती हुई आगे बढ़ आयी। "यह क्या हुआ, पापा?" अचरज म. भरकर वह चिल्लायी-- "अरे, तुम लंगड़ा क्यों रहे हो? तुम्हारा घोड़ा कहाँ है? और यह गाड़ी किसकी उठा लाये?"

"ओह माई डियर, तुम कल्पना म. भी उसका आभास नहीं पा सकती!" ग्रिगोरी इवानोविच ने जो अंग्रेजी ढंग से सम्बोधित करने का शौकीन था, जवाब म. कहा। इसके बाद उसने समूची घटना का विवरण कह सुनाया। लीजा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। वह अपने अचरज से उभर भी नहीं पायी थी कि ग्रिगोरी इवानोविच ने बताया कि दोनों बेरेस्तोव कल उनके यहाँ भोजन पर आ रहे हैं।

"क्या?" उसके मुँह से निकला और उसका चेहरा पीला पड़ गया "बेरेस्तोव पिता और पुत्र दोनों? कल हमारे यहाँ भोजन पर आ रहे हैं! तुम से जो बने करना, पापा, लेकिन यह निश्चय जानो कि मैं उसके सामने प्रकट नहीं होऊँगी।"

"तुम पागल तो नहीं हो गयी हो?" उसके पिता ने चिल्लाकर कहा-- "एकाएक इतनी लाजवन्ती कैसे बन गयी? या तुम्हारे रक्त म. पुश्तैनी घृणा उभर रही है-- उपन्यासों की नायिका की भाँति। नहीं, यह सब बेवकूफी मैं नहीं चलने दूँगा..."

"नहीं पापा, चाहे दुनिया इधर से उधर हो जाये, चाहे तुम कुछ भी क्यों न कहो, मैं उनके सामने नहीं निकलूँगी।"

ग्रिगोरी इवानोविच पूरी तरह जानते थे कि लीजा का विरोध करने से कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा। सो उन्होंने कंधे बिचकाये, विवाद का सिलसिला वहीं खत्म कर दिया, और इस अविस्मरणीय घुड़सवारी के बाद विश्राम करने चले गये।

लीजा भी अपने कमरे म. चली गयी और नास्त्या को उसने बुलाया। कल आनवाले मेहमानों को लेकर दोनों देर तक सलाह करती रहीं। अलेक्सी को जब यह मालूम होगा कि कुलीन घराने की एक सुसंस्कृत युवती के चोले म. उसकी अपनी आकुलीना मौजूद है तो वह क्या सोचेगा? उसकी चाल-ढाल, आचार-विचार, और समझ के बारे म. वह क्या राय कायम करेगा? इसी के साथ-साथ लीजा यह देखने के लिए भी मन ही मन बुरी तरह हुमक रही थी कि इतने अप्रत्याशित मिलन का उस पर क्या असर होता है... सहसा उसके मस्तिष्क म. एक बहुत ही बढ़िया बात आयी और उसने उसे तुरन्त नास्त्या को बता दिया। दोनों के चेहरे खुशी से खिल उठे और उन्होंने हर कीमत पर उसे अमल म. उतारने का निश्चय किया।

अगले दिन नाश्ता करते समय ग्रिगोरी इवानोविच ने अपनी लड़की से फिर पूछा कि बेरेस्तोवों से मुंह छिपाने की अपनी जिद क्या अभी भी कायम है।

"अगर तुम्हारी ऐसी ही मन्शा है तो, पापा," लीजा ने जवाब दिया, "उनकी आवभगत म. मैं भी शामिल हो जाऊंगी। लेकिन एक शर्त पर। चाहे मैं किसी भी रूप म. रहूं और चाहे जो भी करूं, न तो मुझे झिड़कोगे, न किसी प्रकार का असन्तोष या अचरज प्रकट करोगे।"

"मालूम होता है तुम्हें फिर कोई शैतानी सूझी है," ग्रिगोरी इवानोविच ने हँसते हुए कहा-- "अच्छी बात है। मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है। तुम अपनी जिद भी रखो, मेरी पगली मुनिया!"

यह कह उसने लीजा के माथे को चूमा और लीजा अपनी तैयारियां करने दौड़ गयी।

ठीक दो बजे घर की बनी एक गाड़ी ने, जिसम. छह घोड़े जुते थे, घास के चटक हरे मैदान का चक्कर काटते हुए अहाते म. प्रवेश किया। बड़े मालिक ने, वर्दी से लैस मुरोम्स्की के दो अरदलियों के सहारे, पोर्च की सीढ़ियों पर पांव रखा। छोटा मालिक भी, घोड़े पर सवार, उसके पीछे था। दोनों भोजन के कमरे म. पहुंचे। मेज पर खाना लगा था। मुरोम्स्की ने अत्यन्त हार्दिकता के साथ मेहमानों का स्वागत करते

हुए भोजन से पहले बगीचे तथा घोड़साल का निरीक्षण करने का उन्ह. निमंत्रण दिया और खूब साफ-सुथरी तथा बजरी-बिछी पगडण्डी पर वह उन्ह. ले चला। वृद्ध बेरेस्तोव ने बेकार ही इन बातों पर इतना समय और मेहनत बरबाद करने की मन ही मन निन्दा की, लेकिन सभ्यतावश मुँह से कुछ नहीं कहा। उसका लड़का अपने कम खर्च पिता की भाँति न तो निन्दा पर उतरा, न आत्मतुष्ट अंग्रेजियत के अंधभक्त की भाँति उछाह के मारे गदगद ही हुआ। वह बड़ी बेचैनी से मेजबान की लड़की के प्रकट होने की बाट देख रहा था जिसके बारे म. उसने बहुत कुछ सुन रखा था। हालाँकि उसका हृदय जैसा कि हम जानते हैं पहले ही किसी के रंग म. रंग चुका था, लेकिन कोई भी सुन्दर युवती उसकी कल्पना को उकसाये बिना न रहती थी।

तीनों लौट कर ड्राइंगरूम म. बैठ गये। दोनों वृद्ध बीते दिनों को याद और सैनिक़ जीवन के किस्सों का आदान-प्रदान करने म. डूब गये और अलेक्सी मन ही मन सोचने लगा कि लीजा की उपस्थिति म. उसे किस भूमिका का निर्वाह करना चाहिए। उसने तय किया कि वह कोई उछाह नहीं दिखाएगा, गर्व के साथ तन कर बैठा रहेगा। सो वह ऐसा ही बनने का अभ्यास करने लगा। तभी दरवाजा खुला, लापरवाही तथा सुचिन्तित उपेक्षा से उसने अपना सिर घुमाया, यह सोच कर कि अत्यन्त नखरे वाली युवती भी उसके इस अन्दाज से बिंध कर जायेगी। लेकिन दुर्भाग्य से यह लीजा नहीं थी, बल्कि मिस जैक्सन थी-- पाउडर पोते हुए, अंगिया कसे, आँखों को झुकाये अदब के साथ कुछ इस तरह उसने कमरे म. प्रवेश किया कि अलेक्सी की शानदार मोर्चेबन्दी बिल्कुल बेकार हो गयी। अभी वह अपने को सम्भाल भी न पाया था कि दरवाजा फिर खुला और इस वार लीजा ने कमरे म. प्रवेश किया। सब उठ कर खड़े हो गये, पिता मेहमानों का परिचय कराने जा ही रहा था कि अचकचा कर रुक गया और उसने तुरन्त अपना होंठ काटा... लीजा, श्याम-सलोनी उसकी लीजा कानों तक पाउडर से पूती थी, लगता था जैसे उसने मिस जैक्सन को मात देने की ठान ली हो। लुई क्वातोर्ज की विग की भाँति उसका सिर नकली घुँघराले बालों से घिरा था जिनका रंग, उसके अपने बालों की निस्बत अधिक सुनहरा था। उसकी ढीली-ढाली आस्तीनें-- मदाम पोम्बादौर के पँखे की भाँति-- फूली और फैली थीं। वदन म. उसने इस हद तक फीते कस रखे थे कि देखने म. अंग्रेजी के अक्षर 'ऐक्स' की भाँति मालूम होती थी, और उसकी माँ के तमाम हीरे, जो गिरवी रखने से अभी तक बच रहे थे, उस की उँगलियों, गले और कानों म. जगमगा रहे थे। अलेक्सी के लिए अब यह सम्भव नहीं था कि इस उज्जवल किन्तु औघड़ मादा के रूप म. अपनी आकुलीना को पहचान सके उसका

पिता लीजा का हाथ चूमने के लिए उठा; अलेक्सी ने भी बेमन से अपने पिता का अनुसरण किया। अपने होंठों से उसकी कोमल उँगलियों का स्पर्श करते समय उसे ऐसा आभास हुवा जैसे उनम.-- लीजा की उँगलियों म.-- एक हल्का-सा कम्पन्न दौड़ गया हो। इसी के साथ-साथ एक नन्ह. पाँव पर भी उसकी नजर पड़ी जो प्रत्यक्षतः बेहद शोख जूते की नुमाइश करने के लिए जानबूझ कर आगे बढ़ा लिया गया था। इसने, एक हद तक उसकी घिन को सम्भाल लिया जो उसकी बाकी साज-सज्जा को देखकर हृदय म. उभर आयी थी। और जहाँ तक पाउडर तथा लाली आदि का सम्बन्ध था, यह स्वीकार करना चाहिए कि अपने भोलेपन के कारण उनकी ओर उसका ध्यान नहीं गया, यहाँ तक कि बाद म. भी वह उन्ह. नहीं भाँप सका। ग्रिगोरी इवानोविच को अपना वचन याद था और उसने जरा सा भी आश्चर्य नहीं प्रकट होने दिया। लेकिन लड़की की इस शैतानी ने उसे बुरी तरह गुदगुदा दिया था और उसके लिए अपने-आप को सम्भाले रखना कठिन हो रहा था। इसके प्रतिकूल नकचढ़ी मिस जेक्सन के लिए यह हँसने की बात नहीं थी। उसे यह भाँपते देर नहीं लगी कि पाउडर और लाली उसके सिंगारदान से उड़ायी गयी है। उसके गालों की कृत्रिम पीलिमा खीझ और झुंझलाहट से लाल हो गयी। उबलती हुई नजरों से उसने नन्ही अपराधिनी की ओर देखा। लेकिन उसने सफायी देने की चिन्ता को आगे के लिए स्थगित कर देखते हुए भी अनदेखा कर दिया।

सब मेज पर बैठ गये। अलेक्सी एक खोये हुए विचारों म. डूबे, व्यक्ति की मुद्रा म. बैठा रहा। लीजा बनावटी हँसी हँसती और दाँतों के भीतर से घुटी घुटी आवाज म. केवल फ्रेंच भाषा म. बोलती रही। उसका पिता बराबर उस की ओर देख रहा था और उसके उद्देश्य से अपरिचित होते हुए भी इस सम्पूर्ण नाटक म. बेहद रस ले रहा था। गुस्से के मारे मिस जैक्सन का बोल बन्द था। केवल इवान पेत्रोविच ही एक ऐसा व्यक्ति था जो कोई उलझन अनुभव नहीं कर रहा था। दो के बराबर उसने भोजन किया, सदा की भाँति जी भर कर मदिरा पी, खुद अपने मजाकों पर हँसा और अधिकाधिक मित्रभाव से बात. करता रहा।

आखिर मेज से उठने का समय हुआ। मेहमानों ने विदा ली और ग्रिगोरी इवानोविच को अब उन्मुक्त होकर हँसने तथा खोदबीन करने का अवसर मिला।

"आखिर तुम्ह. उनके साथ यह खेल करने की क्यां सूझी?" उसने लीजा से पूछा-- "और सच पाउडर ने तो कमाल ही कर दिया। स्त्रियों के सिंगार का मैं माहिर नहीं हूँ, लेकिन तुम्हारी जगह अगर म. होता तो पाउडर का इस्तेमाल शुरू कर देता। बेशक, इतनी अधिक मात्रा म. नहीं बल्कि बहुत ही हल्के रूप म.।"

लीजा अपनी सूझ की सफलता पर मुग्ध थी। पिता के गले म. उसने अपनी बाँह. डाल दीं, उनकी सलाह को ध्यान म. रखने का वचन दिया और गुस्से म. भरी मिस जैक्सन को ठण्डा करने के लिए दौड़ गयी। वह न तो दरवाजा खोलने के लिए तैयार थी, न लीजा की कोई बात सुनने के लिये। लीजा ने उसे बताया कि अपनी काली-कलूटी शक्ल को लेकर अजनबियों के सामने जाते हुए शर्म मालूम होती थी। वह उससे पूछने का साहस न कर सकी... उसे विश्वास है कि उसकी प्यारी, बहुत ही भली, मिस जैक्सन उसे माफ कर देगी.... आदि-आदि। मिस जैक्सन को जब यह विश्वास हो गया कि लीजा का इरादा उसका मजाक उड़ाने का कतई नहीं था तो वह शान्त हो गयी, लीजा को उसने चूमा, नाराजी दूर होने के उपलक्ष्य म. गोरा-चिट्टा बनाने वाली, अंग्रेजी क्रीम की एक शीशी उसे भ.ट की जिसे लीजा ने, हार्दिक कृतज्ञता की हर भाव-भंगिमा के साथ स्वीकार किया।

पाठक यह सहज ही समझ सकते हैं कि लीजा अगले दिन पिया मिलन के अपने स्थान पर पहुँचने से कतई नहीं चूकी।

"कल तुम हमारे मालिकों से मिलने गये थे", अलेक्सी से भ.ट होते ही उसने पूछा-- "कहो तुम्ह. छोटी मालकिन कैसी लगी?"

अलेक्सी ने जवाब दिया कि उसे देखने का अवसर नहीं मिला।

"ओह, मैंने तो सोचा था," लीजा के मुँह से निकला।

"क्या सोचा था तुमने?" अलेक्सी ने पूछा।

"यही कि म. तुमसे मालूम करूँगी कि लोग जो यह कहते हैं वह कहाँ तक सच है?"

"क्या कहते हैं लोग?"

"पता नहीं, कहाँ तक सच है उनका कहना... यह कि... मैं उनसे मिलती-जुलती हूँ।"

"निरी बकवास! तुम्हारे सामने तो वह अच्छी-खासी भूतनी मालूम होती है।"

"नहीं मालिक, तुम्ह. ऐसी बात मुँह से नहीं निकालनी चाहिए। हमारी छोटी मालकिन इतनी गोरी-चिट्टी, और इतनी सलीकेदार है। मेरी भला उनसे क्या तुलना हो सकती है।"

अलेक्सी ने भी जोरों से हाँ-म.-हाँ मिलाई। शपथ खाकर कहा कि दुनिया म. जितनी भी सुन्दर युवतियाँ हैं, वह उन सब से बढ़ कर है। फिर, उसके सन्देहों को

पूर्णतया निरस्त्र करने के लिए छोटी मालकिन का कुछ इतने हास्यपूर्ण ढंग से उसने वर्णन किया कि लीजा जी भरकर हँसी।

"लेकिन," लीजा ने उसाँस भरी-- "हमारी छोटी मालकिन के हास्यास्पद होने पर भी उनके मुकाबिले म. मैं निरी गोबर गणेश हूँ-- एकदम अनपढ़!"

"वाह!" अलेक्सी के मुँह से निकला-- "क्या तुम इतनी सी बात के लिए परेशान हो? अगर चाहो तो मैं तुम्ह. अभी इसी क्षण से पढ़ाना शुरू कर सकता हूँ।"

"चाहूँगी क्यों नहीं," लीजा ने चहक कर कहा-- "मैं भी कोशिश करने से पीछे नहीं हटूँगी।"

"ठीक, बिल्कुल ठीक, मेरी प्रिये," अलेक्सी ने कहा-- "तो आओ, हम अभी-- इसी समय, शुरू कर द.।"

दोनों धरती पर बैठ गये। अलेक्सी ने अपनी जेब से एक नोटबुक और पेन्सिल निकाली और लीजा ने, चकित कर देने वाले अल्पकाल म. ही वर्णमाला के अक्षर सीख लिये। अलेक्सी उसकी गति देख अपने अचरज को छिपा कर नहीं रख सका। अगले दिन लीजा ने अक्षरों को लिखने का अभ्यास करना चाहा। शुरू शुरू म. तो पेन्सिल इधर-उधर भटकी, लेकिन कुछ ही मिनट बाद वह काफी अच्छे अक्षर बनाने लगी।

"अद्भुत!" अलेक्सी ने कहा-- "अपनी इस तेजी म. तो लन्कास्टर सिस्टम को भी तुमने मात कर दिया!"

और इसम. शक नहीं, तीसरा पाठ पूरा होते न होते आकुलीना थोड़ा अटक-अटक कर 'नतालिया, बोयर की लड़की' पढ़ने लगी। पढ़ते समय, बीच बीच म., वह ऐसी टिप्पणियां करती कि अलेक्सी चकित रह जाता और कागज को उसी उपन्यास से उतारे गये कथनों-कहावतों से काला कर देती।

एक सप्ताह बीता, और दोनों पत्रों का आदान-प्रदान करने लगे। एक पुराने ओक-वृक्ष की खोह उनका डाकघर था। नास्त्या चोरी-चोरी डाकिये का काम सम्भालती थी। अलेक्सी बड़े-बड़े अक्षरों म. लिखे पत्र पेड़ की खोह म. छोड़ने आता, और सस्ते नीले कागज पर टेढ़े-मेढ़े अक्षरों म. लिखे अपनी प्रिया के सन्देशों को प्राप्त करता। आकुलीना के ढंग म. हर पत्र के बाद सुधार होता और उसका मस्तिष्क उत्तरोत्तर अधिक निखरता तथा काफी विकसित होता गया।

इसी बीच अभी हाल ही म. प्रस्फुटित इवान पेत्रोविच बेरेस्तोव और ग्रिगोरी इवानोविच मुरोम्स्की के सम्बन्ध अडिग गति से सुधरते जा रहे थे और उन्होंने निम्न परिस्थितियों की बदौलत-- शीघ्र ही मित्रता का रूप धारण कर लिया।

मुरोम्स्की रह-रह कर सोचते कि इवान पेत्रोविच की मृत्यु के बाद अलेक्सी इवानोविच उनकी समूची मिल्कियत का मालिक होगा और जिले के मालिकों म. वह सबसे अधिक धनी बन जाएगा। ऐसी स्थिति म. लीजा के साथ उसका विवाह न हो, ऐसा कोई कारण नहीं दिखाई देता था। वृद्ध बेरेस्तोव भी अपनी ओर से बावजूद इसके कि उसे अपना पड़ोसी कुछ सनका हुआ नजर आता था (या खुद उसी के शब्दों म. अंग्रेजियत का भूत उसके सिर पर सवार था), इस बात से इन्कार नहीं कर सकता था कि उसम. कुछ अच्छे --बहुत ही अच्छे-- गुण भी हैं। मिसाल के लिए उसकी असाधारण सूझ-बूझ को उसके इन गुणों म. गिना जा सकता है। फिर ग्रिगोरी इवानोविच का काउण्ट प्रोन्स्की से, जो एक प्रसिद्ध और प्रभावशाली आदमी था, घनिष्ठ सम्बन्ध था। अलेक्सी के लिए काउण्ट अत्यन्त उपयोगी हो सकता था और मुरोम्स्की-- (इवान पेत्रोविच का खयाल था)-- बेशक, अपनी कन्या के विवाह का इतना बढ़िया अवसर पाकर खुश होगा। लेकिन दोनों वृद्धों ने कुछ समय तक, अपने विचारों को अपने तक ही सीमित रखा। आखिर दोनों के हृदय खुले, अपने मन की बात एक-दूसरे से कही, आपस म. गले मिले और एक-दूसरे को वचन दिया कि इस मामले पर पूरे ध्यान से विचार कर.गे। दोनों अपने अपने ढंग से आगे बढ़े। मुरोम्स्की की राह म. एक कठिनाई थी। वह यह कि अपनी बेत्सी और अलेक्सी को-- जिसे उसने उस स्मरणीय भोज के बाद नहीं देखा था-- किस प्रकार एक-दूसरे के निकट लाया जाये। उनम. एक-दूसरे के प्रति विशेष झुकाव नहीं है। यह साफ मालूम होता था। जो हो, उसके बाद अलेक्सी फिर कभी प्रिलूचिनो नहीं आया, और जब कभी इवान पेत्रोविच अपने आगमन से उन्ह. सम्मानित करता था तो लीजा, अपने कमरे म. दुबकी रहती थी। लेकिन, ग्रिगोरी इवानोविच ने मन ही मन सोचा, "अगर अलेक्सी रोज आना शुरू कर दे तो बेत्सी भी निश्चय ही चाहने लगेगी। ऐसा ही होता है। समय सब ठीक कर देगा।"

इवान पेत्रोविच को अपने मन्सूबों की सफलता म. अधिक सन्देह नहीं था। उसी साँझ उसने अपने पुत्र को अध्ययन कक्ष म. बुलाया और अपने पाइप को सुलगाते तथा एक क्षण विराम लेते हुए कहा-- "यह क्या बात है अल्योशा, फौज म. जाने का तुम्हारा राग इधर कुछ सुनाई नहीं देता? हस्सारों की वर्दी पहनने के लिए तुम्हारे हृदय म. क्या अब कसक नहीं उठती?"

"जी नहीं," अलेक्सी ने अदब से जवाब दिया-- "मने देखा कि हस्सारों म. भर्ती होना आपको पसन्द नहीं है। ऐसी हालत म. आपकी इच्छा के सामने सिर झुकाना मेरा कर्तव्य है।"

"बहुत ठीक," इवान पेत्रोविच ने कहा-- "यह देखकर भारी सन्तोष हुआ कि तुम्ह. अपने कर्तव्य का ध्यान है। तुम एक कर्तव्यपरायण सपूत हो। और जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं खुद भी तुम्ह. बाध्य नहीं करना चाहता। मैं तुम्ह. फिलहाल मजबूर नहीं करूँगा कि तुम सरकारी नौकरी करो। लेकिन इस बीच मैं चाहता हूँ कि तुम शादी कर लो।"

"जी... लेकिन आप किस से मेरी शादी करना चाहते हैं?" अलेक्सी ने चकित हो कर पूछा।

"लीजावेता ग्रिगोरियेवना मुरोम्स्काया से," इवान पेत्रोविच ने जवाब दिया-- "मेरी समझ म. लड़की बुरी नहीं है।"

"लेकिन पिता जी, विवाह के बारे म. मैंने अभी सोचा तक नहीं!"

"तुमने नहीं सोचा, इसीलिए मुझे सोचना पड़ा और मैं एक निश्चय पर पहुँच चुका हूँ।"

"लेकिन, पिताजी, लीजा मुरोम्स्काया मुझे पसन्द नहीं है।"

"पसन्द नहीं है तो करने लगोगे, प्रेम के लिए पहले अभ्यास की दरकार होती है।"

"नहीं पिताजी, मैं उसे सुखी नहीं बना सकूँगा।"

"उसके सुख की चिन्ता म. तुम्ह. घुलने की जरूरत नहीं। क्या भी और अपने माता पिता की इच्छा का क्या तुम इसी तरह आदर करते हो? तुम्ह. शर्म नहीं आती?"

"आप पसन्द कर. या न कर., पिताजी, मेरी विवाह करने की इच्छा नहीं है, और मैं विवाह नहीं करूँगा।"

"या तो तुम विवाह करोगे, नहीं तो मेरा अभिशाप गाज बन कर तुम्हारे सिर पर गिरेगा। खुदा मेरा साक्षी है, मैं सारी जायदाद बेच डालूँगा और जो धन मिलेगा उसे यों ही उड़ा दूँगा, एक कोपेक भी तुम्हारे पल्ले नहीं पड़ने दूँगा। सोचने के लिए मैं तीन दिन का समय तुम्ह. देता हूँ, और तब तक मेरी नजरों से दूर ही रहना।"

अलेक्सी जानता था कि पिता के दिमाग म. एक बार जो विचार आता है, उसे फिर वहाँ से डिगाया नहीं जा सकता, "चाहे उसम.", जैसा कि तारास स्कोतीनिन[14] ने कहा था-- कील ही क्यों न ठोंको"। लेकिन अलेक्सी तो अपने इसी पिता का पुत्र था, और उसे अपना मत बदलने के लिए तैयार करना भी उतना ही कठिन था। वह अपने कमरे म. चला गया और पिता के अधिकार, लीजावेता ग्रिगोरियेचना के

व्यक्तित्व, और उसे भिखारी बना डालने की पिता की धमकी के बारे म. सोचते-सोचते, अन्त म. उसके विचार आकुलीना पर आकर टिक गये। स्पष्टता के साथ पहली बार उसने अनुभव किया कि कितने गहरे अनुराग के साथ वह उससे प्रेम करता है। एक किसान लड़की से विवाह करने तथा खुद अपने श्रम पर गुजर करने की रोमाण्टिक कल्पना उसके मस्तिष्क म. आई, और जितना ही अधिक अपने इस सुनिश्चित कृत्य के बारे म. सोचता, उतना ही युक्ति-युक्त उसे यह मालूम होता। वर्षा के कारण, इधर कुछ दिनों से, उनका प्रेम-मिलन रुका हुआ था। अलेक्सी ने आकुलीना को एक पत्र लिखा जो स्पष्टता का नमूना था और जिसके एक-एक शब्द से हृदय का उद्वेग उमड़ा पड़ता था। इस पत्र म. उसने उसे अपने पिता की धमकी की-- उस आसन्न गाज की जो उनके मुख पर गिरना चाहती थी-- सूचना देने के साथ-साथ विवाह का प्रस्ताव भी कर दिया। इस पत्र को लेकर वह तुरन्त ओक-वृक्ष के अपने डाकघर म. छोड़ आया और मन म. पूर्ण सन्तोष का अनुभव करते हुए बिस्तर पर पड़ा रहा।

अगले दिन हृदय म. दृढ़ निश्चय लिए, तड़के ही वह मुरोम्स्की के यहाँ पहुँचा। उसका इरादा था कि वह उससे खुल कर बात करेगा और इस प्रकार उसके हृदय की उदारता को उकसा कर उसे अपने पक्ष म. कर लेगा।

"क्या ग्रिगोरी इवानोविच घर पर हैं?" प्रिलूचिनों हवेली की पोर्च के सामने अपने घोड़े की रास खींचते हुए उसने पूछा।

"नहीं मालिक," नौकर ने जवाब दिया-- "ग्रिगोरी इवानोविन आज तड़के हो यहाँ से चल दिए थे।"

"क्या मुसीबत है। उसने सोचा फिर कहा-- "अच्छा, लीजावेता ग्रिगोरियेवना तो घर पर हैं?"

"हाँ, मालिक।"

अलेक्सी घोड़े से उछल कर नीचे आ गया, नौकर के हाथों म. उसने रास थमा दी और बिना सूचना दिए भीतर चला गया।

"अब सब ठीक हो जाएगा, ड्राइंगरूम की ओर बढ़ते हुए उसने मन ही मन कहा-- "मैं खुद छोटी मालकिन से ही बात करूँगा।"

उसने कमरे म. पाँव रखा, और जैसे उसे बिजली ने छुलिया हो। लीजा...नहीं, प्यारी आकुलीना, --श्याम सलोनी आकुलीना-- सराफान म. नहीं, बल्कि सफेद प्रातःकालीन गाउन म. खिड़की के पास बैठी उसका पत्र पढ़ रही थी। पत्र पढ़ने म. बह इतनी तन्मय थी कि वह उसके आने का आभास तक नहीं पा सकी। अलेक्सी

उछाह के मारे अपने उद्गाार को नहीं रोक सका। लीजा चौंकी, उसने अपना सिर उठाया, मुँह से एक चीख निकली और वहाँ से ओझल होने के लिए भागने लगी। अलेक्सी ने बलपूर्वक उसे रोका और चीख उठा-- "आकुलीना... आकुलीना!"

लीजा ने उसके चंगुल से अपने को छुड़ाने का प्रयत्न किया। वह जूझती थी और फ्रेंच भाषा म. कहती जाती थी- "मुझे छोड़ दो, मुझ जाने दो।"

"आकुलीना! मेरी प्यारी आकुलीना!" वह बार-बार दोहरा रहा था और उसके हाथों को चुम्बनों से पाटे दे रहा था। मिस जैक्सन, जिसकी आँखों के सामने यह दृश्य घट रहा था, हत्-बुद्धि-सी खड़ी थी। तभी दरवाजा खुला और ग्रिगोरी इवानोविच ने कमरे म. पाँव रखा।

"अहा!" उसने चिल्लाकर कहा-- "तो यह कहो कि मामला तुम दोनों ने खुद अपने हाथों म. ले लिया है..."

कहानी के अन्त का अब क्या वर्णन किया जाए। आशा है कि इस बेकार के काम से पाठक मुझे छुट्टी द.गे!"

1830

इ. प. बेल्किन की कहानियाँ समाप्त

गार्गी प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

गार्गी प्रकाशन अपने पाठकों को कम मूल्य पर ऐसा स्तरीय और सुरुचिपूर्ण साहित्य उपलब्ध कराने का प्रयास करता है जो जनता में न्याय, समानता और एक बेहतर जीवन के लिए संघर्ष की भावना उत्पन्न करे। आज देश और दुनिया के पैमाने पर जनविरोधी और मानवद्वेषी मूल्यों, मान्यताओं और संस्कृति के घटाटोप में यह प्रकाशन जीवन और समाज के लिए सार्थक और उपयोगी संस्कृति के बीजारोपण की चेष्टा करता है। खासकर वह विश्व साहित्य की ऐसी अनुपम और कालजयी कृतियों को हिन्दी पाठकों के लिए प्रस्तुत करता है जो मानवता के एक बेहतर भविष्य के लिए उनमें आशा और उत्साह का संचार करें।

हमारे नये प्रकाशन

1. अमिल्कर कबराल		110.00
2. गाँव की आवाज	नीयी ओसुन्दरे	60.00
3. जलियाँवाला बाग की खूनी बैशाखी		50.00
4. काला गोदी मजदूर	सेम्बियन ओसमान	100.00
5. मार्क्सवाद और कविता	जॉर्ज थामसन	70.00
6. साहित्य, संस्कृति और विचारधारा	अन्तोनियो ग्राम्शी	80.00
7. अंधड़	चाओ ली-पो	320.00
8. औजारों का इतिहास	वी गॉर्डन चाइल्ड	30.00
9. औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति	न्गूगी वा थ्योंगो	200.00
10. आधुनिक चीनी कहानियां		120.00
11. एग्नेस स्मेडली	जगविन्दर जोधा	60.00
12. केन सारो-वीवा	आनन्द स्वरूप वर्मा	100.00
13. हम आखिर हमसाये हैं	मधुकर उपाध्याय	40.00
14. क्या मजदूर वर्ग दुनिया को बदल सकता है?	माइकल डी येट्स	120.00
15. मातीगारी	न्गूगी वा थ्योंगो	120.00
16. नीतिशास्त्र के बुनियादी सरोकार	सुधा चौधरी	180.00
17. ली यू-त्साई के गीत	चाओ शू-ली	60.00

हमारे अन्य प्रकाशन

1. पत्थरों का देश	अलेक्स ला गुम	120.00
2. खून की पंखुड़ियाँ	न्गुगी वा थ्योंगो	300.00
3. एक बहुत लम्बा खत	मरियामा बा	60.00
4. आज की अफ्रीकी कहानियाँ-1	आनन्द स्वरूप वर्मा	120.00
5. आज की अफ्रीकी कहानियाँ-2	आर शान्ता सुन्दरी	50.00
6. जनाब कोएनर की कहानियाँ	बर्तोल्त ब्रेख्त	60.00
7. डॉ. कोटनिस की स्मृति में	श्येनकुङ, चीशन, छाङमान	80.00
8. सवालों की किताब	पाब्लो नेरुदा	40.00
9. किस्सों का शिकारी	एदुआर्दो गालेआनो	25.00
10. चे ग्वेरा की याद में	फिदेल कास्त्रो	60.00
11. न्यूरेमबर्ग मुकदमा (एक रिपोर्ट)	यारोस्लाव हलान	50.00
12. निगरानी पूँजीवाद	फोस्टर और मैकचेस्नी	20.00
13. बुद्धिजीवी का दायित्व	संकलन	60.00
14. एक अर्थशास्त्री का सफरनामा	[illegible]	60.00
15. नौजवानों के लिए गोर्की, प्रेमचन्द, लू शुन	राणा प्रताप	80.00
16. लाल रूस	रामवृक्ष बेनीपुरी	60.00
17. लाल चीन	रामवृक्ष बेनीपुरी	75.00
18. कार्ल मार्क्स	रामवृक्ष बेनीपुरी	75.00
19. रूस की क्रान्ति	रामवृक्ष बेनीपुरी	150.00
20. दर्शन की सामाजिक भूमिका और भारतीय जीवन दृष्टि	सुधा चौधरी	140.00
21. नाजीवादी जर्मनी की मनोदशा	कार्ल जी. युंग	60.00
22. उदारवादी वायरस	समीर अमीन	50.00
23. एक छोटे और एक छोटी लड़की की कहानी	वीणा भाटिया	40.00
24. चेतना का मण्डीकरण	जैरी मेंडर	20.00
25. मरूस्थल	मोरिस सिमाश्को	40.00
26. स्वाधीनता संग्राम में मुस्लिम भागीदारी	पृथ्वी राज कालिया	50.00
27. क्यूबा का तजुर्बा	मंथली रिव्यू में प्रकाशित लेख	10.00
28. मुनाफे की जकड़ में विज्ञान	रिचर्ड लेविन्स/रिचर्ड लेवोंटिन	100.00
30. साम्राज्यवाद आज	संकलन	80.00
31. आग की यादें	एदुआर्दो गालेआनो	80.00
32. गदरी बाबा कौन थे	वरियाम सिंह सन्धु	40.00

33. करतार सिंह सराभा	वरियाम सिंह सन्धु	20.00
34. अन्तहीन संकट	फोस्टर/मैक्चेस्नी	150.00
35. मार्क्सवाद परिचय माला	शिव वर्मा	50.00
36. लातिन अमरीका के रिसते जख्म	एदुआर्दो गालेआनो	200.00
37. आजादी या मौत	वेद प्रकाश 'वटुक'	130.00
38. इतिहास जैसा घटित हुआ	संकलन	150.00
39. डॉक्टर नार्मन बेथ्यून की अमर कहानी	सिडनी गार्डन/टेड एलन	160.00
40. हो ची मिन्ह	सूफी अमरजीत	100.00
41. जंगली घास (गद्य कविताएँ)	लू शुन	30.00
42. लू शुन : एक परिचय	फेंग शुएफेंग	20.00
43. समाजवाद का ककहरा	लियो ह्यूबरमन	40.00
44. एक विराट जुआघर	फिदेल कास्त्रो	30.00
45. सुल्ताना का सपना	रुकैय्या सखावत हुसैन	10.00
46. आधुनिक मानव का अलगाव	फ्रित्ज पापेनहाइम	80.00
47. विज्ञान और वैज्ञानिक नजरिया	संकलन	40.00
48. सिर्फ आर्थिक विकास ही नहीं...	ज्याँ द्रेज/अमर्त्य सैन	10.00
49. लीबिया का पुनः औपनिवेशीकरण	एजाज अहमद	10.00
50. वित्तीय महासंकट	संकलन	80.00
51. विश्वव्यापी कृषि संकट	संकलन	50.00
52. विश्व खाद्य संकट	संकलन	50.00
53. असमाधेय संकट	संकलन	40.00
54. क्यूबा क्रान्ति के पचास वर्ष	संकलन	30.00
55. पहला अध्यापक	चिंगीज आइत्मातोव	40.00
56. तस्वीर	निकोलाई गोगोल	20.00
57. इटली की कहानियाँ	मक्सिम गोर्की	60.00
58. मुक्ति मार्ग	हावर्ड फास्ट	80.00
59. पाप और विज्ञान	डाइसन कार्टर	50.00
60. फिदेल : एक निजी शब्द चित्र	गेब्रियल गार्सिया मार्क्वेज	10.00
61. इतिहास मुझे सही साबित करेगा	फिदेल कास्त्रो	30.00
62. मनुष्य की भौतिक सम्पदाएँ	लियो ह्यूबरमन	120.00
63. भगत सिंह का सन्देश	संकलन	25.00
64. एक और ग्यारह सितम्बर	फिदेल कास्त्रो	20.00
65. कल बहुत देर हो जायेगी	फिदेल कास्त्रो	25.00
66. मार्क्स की वापसी	रणधीर सिंह	5.00
67. बुर्जुआ समाज और संस्कृति	राधागोविन्द चट्टोपाध्याय	10.00
68. बढ़ती बेरोजगारी	नौजवान भारत सभा	20.00

69. भगत सिंह को याद करने का अर्थ	नौजवान भारत सभा	5.00
70. गेहूँ का आयात	रूपे	10.00
71. प्यूचे : आत्महत्या के बारे में	कार्ल मार्क्स	15.00
72. मकड़ा और मक्खी	विल्हेल्म लिब्कनेख्त	5.00
73. प्रेमचन्द की तीन कहानियाँ	प्रेमचन्द	10.00
74. क्वाण्टम के सौ साल	रवि सिन्हा	40:00
75. क्या करें?	संकलन	15.00
76. जनता के गीत	संकलन	25.00
77. सृजनशीलता हमेशा सामाजिक होती है	एजाज एहमद	5.00
78. क्या पूँजीवाद एक बीमारी है?	रिचर्ड लेविन्स	10.00
79. आइन्सटीन के सामाजिक सरोकार	अलबर्ट आइन्सटीन	10.00
80. Is Capitalism a Disease?	Richard Levins	10.00

<u>पर्यावरण लोक मंच</u>

1. जीन टेक्नोलॉजी और हमारी खेती	प्रो. नरसिंह दयाल	50.00
2. Climate Change and Environmental Crisis		50.00
3. जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संकट		50.00

अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशन

1. लेनिन की यादें	क्लारा जेटकिन	40.00
2. इंग्लैण्ड में मजदूर वर्ग की दशा	फ्रेडरिक एंगेल्स	180.00
3. मानव और संस्कृति	युलियान ब्रोमलेय, रोमान पोदल्नी	180.00
4. कम्युनिस्ट आन्दोलन की एकता के बारे में	वी आई लेनिन	50.00
5. कम्युनिस्ट नैतिकता		80.00
6. समाजवादी चीन में पूँजीवादी पुनर्स्थापना	विलियम हिण्टन	150.00
7. चीन की नव-जनवादी क्रान्ति का इतिहास	हो कान च	280.00
8. चीन में समाजवादी निर्माण की समस्याएँ		25.00

1.	खेती में पूँजीवाद	वी आई लेनिन	20.00
2.	युवक संघों के कार्य	वी आई लेनिन	10.00
3.	पेरिस कम्यून के सबक	वी आई लेनिन	10.00
4.	1905 की रूसी क्रान्ति के सबक	वी आई लेनिन	10.00
5.	राजसत्ता क्या है?	वी आई लेनिन	10.00
6.	धर्म के बारे में	वी आई लेनिन	30.00
7.	समाजवादी लोकतन्त्र	वी आई लेनिन	40.00
8.	सन सत्तरह की रूसी क्रान्ति	चित्र-कथा	90.00
9.	सर्वहारा अधिनायकत्व के बारे में		50.00
10.	अफीम युद्ध से मुक्ति तक	इजराइल एप्सटाइन	150.00
11.	कम्युनिस्ट पार्टी की बुनियादी समझदारी	संकलन	100.00
12.	माओ की आत्मकथा और लम्बा अभियान	एडगर स्नो	25.00
13.	दर्शन कोई रहस्य नहीं	सांस्कृतिक क्रान्ति के अनुभव	25.00
14.	द्वन्द्ववाद के जरिये जनता की सेवा	सांस्कृतिक क्रान्ति के अनुभव	15.00
15.	राजसत्ता और क्रान्ति	संकलन	30.00
16.	चीनी कम्युनिस्ट पार्टी भीतर दो लाइनों के सघर्ष का इतिहास		30.00
17.	कला, साहित्य और सांस्कृतिक के बारे में माओ विचार	संकलन	20.00
18.	माओ की तीन रचनाएँ	माओ त्से तुङ	10.00
19.	नौजवान आन्दोलन के बारे में	माओ त्से तुङ	10.00
20.	व्यवहार और अन्तरविरोध के बारे में	माओ त्से तुङ	25.00
21.	माओ त्से तुङ की चार रचनाएँ	माओ त्से तुङ	25.00
22.	इतिहास ने जब करवट बदली	विलियम हिण्टन	30.00
23.	समकालीनों की नजर में स्तालिन	संकलन	30.00
24.	महान बहस	संकलन	120.00

रूसी लेखक अलेक्सान्द्र पुश्किन की पाँच कहानियों का संग्रह है। इसमें एक काल्पनिक सम्पादकीय परिचय है, जिसमें पुश्किन बेल्किन की कहानियों की शब्दशः प्रस्तुति का दिखावा करते हैं, जबकि ये कहानियाँ दरअसल उनकी ही हैं। वे बताते हैं कि ये सभी कहानियाँ हाल ही में मृत जमींदार इवान पेट्रोविच बेल्किन को विभिन्न लोगों द्वारा सुनाई गयी थीं, जिन्हें यहाँ प्रस्तुत किया गया है। पुश्किन बताते हैं कि बेल्किन एक दिलचस्प और रहस्यमय व्यक्ति था, यहाँ तक कि जिस महिला के लिए उसने अपनी सम्पत्ति छोड़ी थी, वह भी उससे कभी नहीं मिली थी। बेल्किन का पसंदीदा शौक कहानियों को इकट्ठा करना और सुनाना था। संकलन की पाँच कहानियाँ पुश्किन की सर्वश्रेष्ठ, क्लासिकीय और बेहद दिलचस्प कहानियाँ हैं।

गार्गी प्रकाशन

गार्गी प्रकाशन की वेबसाइट के लिए स्कैन करें।

₹ 70/-

ISBN : 978-81-955764-6-3